सत्यमेव जयते

भाषाविज्ञान

परिभाषा कोश

खंड - 1

1990

वैज्ञानिक तथा तकनीकी
शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(शिक्षा विभाग)
भारत सरकार

भाषाविज्ञान परिभाषा-कोश

(खंड-1)

स्वनविज्ञान, स्वनिमविज्ञान

तथा

लेखन-व्यवस्था

सत्यमेव जयते

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

(शिक्षा विभाग)

भारत सरकार

1991

© भारत सरकार, 1990

मूल्य : (देश में) 89.00 रुपये (विदेश में) 10.38 पौंड या 32 डालर 04 सेंटस् ।

प्रकाशक :

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग,
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम,
नई दिल्ली-110066

ISBN 81-7092-011-6

प्राक्कथन

विश्वविद्यालयों में माध्यम-परिवर्तन के लिए सब से पहली आवश्यकता यह थी कि हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में सभी विषयों की पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण हो, और फिर इस शब्दावली का उपयोग करते हुए परिभाषा-कोशों तथा मौलिक ग्रंथों की रचना हो तथा यथावश्यक अंग्रेजी की पाठ्य/संदर्भ-पुस्तकों का अनुवाद हो।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने सर्वप्रथम विश्वविद्यालय स्तर के सभी विषयों की वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली तैयार कर प्रकाशित की। शब्दावली तैयार हो जाने के बाद नव-निर्मित शब्दों की रचना-प्रक्रिया को तार्किक विस्तार देते हुए उनकी परिभाषाएं तैयार कीं ताकि शब्दों की संकल्पना स्पष्ट हो सके। परिणामस्वरूप अब तक शब्दावली आयोग ने विभिन्न विषयों के 35 से अधिक परिभाषा-कोश प्रकाशित कर लिए हैं, जिनमें प्रत्येक विषय की आधारभूत शब्दावली की परिभाषाएं दी गई हैं।

शब्दावली निर्माण और परिभाषा-कोशों की रचना के अतिरिक्त आयोग विश्व-विद्यालयों में पढ़ाए जाने वाले सभी विषयों की मौलिक तथा अनूदित पाठ्य-पुस्तकें और संदर्भ-साहित्य तैयार कर/करवा रहा है : संपूरक सामग्री के रूप में पत्रिकाएं, पाठमालाएं तथा चयनिकाएं आदि प्रकाशित कर रहा है ; भारतीय भाषाओं में एकता की भावना को पुष्ट करने के लिए विभिन्न विषयों से संबद्ध अखिल भारतीय शब्दावली की पहचान और उसका निर्धारण कर रहा है तथा विश्व-विद्यालयों के अध्यापकों की भाषायी दक्षता बढ़ाने तथा भारतीय भाषाओं के माध्यम से अध्यापन करने की उनकी क्षमता बढ़ाने और नवनिर्मित शब्दावली के सही प्रयोग का अभ्यास करवाने के लिए प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन कर रहा है। साथ ही शब्दावली को अद्यतन करने तथा उसके तत्काल प्रसार एवं प्रकाशन के लिए कम्प्यूटर आधारित राष्ट्रीय शब्दावली बैंक की स्थापना करने की दिशा में आयोग प्रयत्नशील है। इस शब्दावली बैंक में न केवल हिंदी बल्कि सभी मुख्य भारतीय भाषाओं के तकनीकी शब्दों का संचयन होगा।

भाषाविज्ञान के क्षेत्र में शब्दावली आयोग ने सर्वप्रथम जो पारिभाषिक शब्दावली तैयार की, उसे सन् 1972 में मानविकी खंड-V के अंतर्गत अंग्रेजी-हिंदी और

हिंदी-अंग्रेजी दोनों रूपों में प्रकाशित किया गया था। इसमें कुछ और नई शब्दावली जोड़कर भाषाविज्ञान की समस्त शब्दावली को "बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह' (मानविकी) (1973) में समाविष्ट कर दिया गया जिसमें मानविकी तथा सामाजिक विज्ञानों से संबद्ध सभी विषयों के तकनीकी शब्द हैं।

भाषाविज्ञान परिभाषा-कोश को तीन चरणों में पूरा करने का निर्णय लिया गया। पहले चरण में स्वनविज्ञान, स्वनिमविज्ञान तथा लेखन-व्यवस्था से संबंधित शब्दों की परिभाषाएं तैयार की गईं, जिनका प्रकाशन प्रस्तुत ग्रंथ में भाषाविज्ञान परिभाषा-कोश, खंड-1 के रूप में अब हो रहा है। दूसरे चरण या खंड में सामान्य भाषाविज्ञान, रूपविज्ञान और वाक्यविज्ञान की परिभाषाएं होंगी और तीसरे चरण या खंड में शेष सभी विषयों की (जैसे समाज भाषाविज्ञान, मनोभाषाविज्ञान, ऐतिहासिक भाषाविज्ञान, शैली-विज्ञान, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, अनुवाद, कोशविज्ञान, भाषा-शिक्षण, व्यतिरेकी भाषाविज्ञान, अर्थविज्ञान आदि की) परिभाषाएं होंगी।

प्रस्तुत भाषाविज्ञान परिभाषा-कोश (खंड-1) में स्वनविज्ञान, स्वनिमविज्ञान तथा लेखन-व्यवस्था से संबंधित लगभग 700 शब्दों की परिभाषाएं दी जा रही हैं। शब्दों का चयन करते समय यह सावधानी बरती गई है कि इन विषयों के सभी आधारभूत शब्द आ जाएं। अंग्रेजी शब्दों के निर्मित पर्यायों के साथ-साथ संस्कृत व्याकरण में प्रयुक्त कुछ पारिभाषिक शब्दों की परिभाषाएं भी इसमें मिलेंगी; जैसे अभिनिधान, आदेश, अल्, अंतःस्थ आदि-आदि।

परिभाषाए देते समय आवश्यकतानुसार उनके भाषागत अथवा विषयगत संदर्भों को आरंभ में रेखांकित कर दिया गया है। शब्द यदि केवल संस्कृत व्याकरण में ही विशेष अर्थ का व्यंजक है तो "संस्कृत का पारिभाषिक शब्द" कहकर उसकी तदनुसार परिभाषा दी गई है। यदि कोई प्राचीन शब्द ऐसा है जिस की व्याख्या पाश्चात्य अथवा आधुनिक भाषाविज्ञान के संदर्भ में अलग से अपेक्षित है, तो वह भी दी गई है। परिभाषा में जो महत्वपूर्ण पारिभाषिक शब्द प्रयुक्त हुए हैं, उन्हें प्रतिसंदर्भ के लिए काले अक्षरों में दिया गया है ताकि उनकी परिभाषाएं पुस्तक में अन्यत्र देखी जा सकें।

आवश्यकतानुसार शब्द की परिभाषा भिन्न-भिन्न आयामों को ध्यान में रखते हुए भी दी गई है – जैसे, किसी शब्द का ध्वानिक विवरण और उच्चारणात्मक विवरण अलग-अलग अपेक्षित हैं तो वे अलग-अलग ही दिए गए हैं, जैसे stress

(बलाघात), abrupt (स्फोटी), asterisk (तारांक) आदि के प्रसंग में; इसी तरह किसी शब्द की यदि एकाधिक परिभाषाएं संभव हैं और परिभाषा विशेष किसी न किसी रूप में अपूर्ण है तो इसका भी उल्लेख किया गया है, जैसे aspiration (महाप्राणता), phoneme (स्वनिम), vowel (स्वर) की परिभाषाओं के प्रसंग में, प्राय: देखा गया है कि एक ही शब्द अन्य मॉडलों की तुलना में प्रजनक व्याकरण में भिन्न परिभाषा की अपेक्षा रखता है। जहां ऐसी परिभाषा देना आवश्यक था, वहां दे दी गई है; जैसे reduction (ह्रास), braces (मझला कोष्ठक), dash (डैश) आदि में।

विषय स्पष्टीकरण के लिए यथावश्यक उदाहरण, रेखाचित्र, छायाचित्र आदि भी दिए गए हैं। प्रति संदर्भ के लिए "देखिए", "तुलना" आदि संकेत दिए गए हैं। अंत में परिशिष्ट में संकेत और प्रतीकों की तालिका में प्रतीक/संकेत चिह्नों के साथ उनके रूपात्मक और प्रकार्यात्मक दोनों प्रकार के नाम दिए गए हैं।

चूंकि कोश में मुख्य प्रविष्टियों का क्रम अंग्रेजी शब्दों के अनुसार है, अत: उनका अकारादिक्रम भी अंग्रेजी वर्णमाला के अनुसार है पर कोश के अंत में हिंदी-अंग्रेजी शब्दानुक्रमणिका भी दे दी गई है ताकि जानकारी हो जाए कि हिंदी पुस्तकों में व्यवहृत हिंदी के पारिभाषिक शब्द किन अंग्रेजी शब्दों के पर्याय के रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

इस कोश में प्राय: परिभाषाएं ही दी गई हैं। सामान्यत: विश्वकोशीय शैली का अनुसरण नहीं किया गया है। फिर भी, जहां कहीं आवश्यकता प्रतीत हुई, विषय स्पष्टीकरण के लिए विश्वकोशीय शैली की भी झलक मिल जाती है; जैसे cardinal vowels (मानस्वर), consonants (व्यंजन), features (अभिलक्षण) आदि के प्रसंग में।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि भाषाविज्ञान परिभाषा-कोश (खंड-1) में सभी दृष्टिकोणों और मॉडलों का संतुलित समावेश मिलेगा।

इस कोश के निर्माण में दिल्ली विश्वविद्यालय के भाषाविज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो० रवींद्रनाथ श्रीवास्तव का सर्वाधिक महत्वपर्ण योगदान आयोग को प्राप्त हुआ है। संपादन परामर्श मंडल वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

तथा केंद्रीय हिंदी निदेशालय के जिन अधिकारियों ने संपादन के स्तर पर अपना सक्रिय सहयोग प्रदान किया है, उनका नामोल्लेख भी यथास्थान कर दिया गया है । मैं इन सभी विद्वानों के परिश्रम की सराहना करते हुए उनके प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूं ।

आशा है, भाषाविज्ञान जगत में इस कोश का स्वागत होगा । विद्वत्समाज और जिज्ञासु पाठकों से जो सुझाव प्राप्त होंगे, उनका अगले संस्करणों में उपयोग किया जाएगा ।

प्रो० सूरजभान सिंह
अध्यक्ष

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

संपादन परामर्श-मंडल

1. प्रो० हरवंश लाल शर्मा	.	तत्कालीन अध्यक्ष, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
2. प्रो० सूरज भान सिंह	.	अध्यक्ष, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग एवं निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय।
3. डॉ० रणवीर रांग्रा .	.	तत्कालीन निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय।
4. आचार्य देवेंद्रनाथ शर्मा	.	तत्कालीन अध्यक्ष, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना।
5. डॉ० विद्या निवास मिश्र	.	तत्कालीन निदेशक, कन्हैयालाल मणिकलाल मुंशी हिंदी तथा भाषा-विज्ञान विद्यापीठ, आगरा; संप्रति कुलपति, काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
6. डॉ० बाल गोविंद मिश्र	.	निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।
7. प्रो० रवींद्र नाथ श्रीवास्तव	.	अध्यक्ष, भाषाविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
8. प्रो० शिवेंद्र किशोर वर्मा	.	निदेशक, केंद्रीय अंग्रेजी तथा विदेशी भाषा संस्थान, हैदराबाद।
9. डॉ० कैलाश चंद्र भाटिया	.	तत्कालीन प्रोफेसर, हिंदी व भारतीय भाषाएं, लालबहादुर राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी।
10. डॉ० भोला नाथ तिवारी	.	प्रोफेसर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
11. श्री योगेंद्र मोहन गुप्त	.	तत्कालीन सहायक निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय।

संपादन समिति

अतिथि संपादक :

प्रो० रवींद्र नाथ श्रीवास्तव
भाषाविज्ञान विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।

विभागीय संपादक :

डॉ० नरेंद्र व्यास
प्रधान संपादक,
केंद्रीय हिंदी निदेशालय ।

श्री देवेंद्र दत्त नौटियाल
उपनिदेशक,
केंद्रीय हिंदी निदेशालय ।

श्री प्रेमानन्द चंदोला
सहायक शिक्षा अधिकारी,
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ।

श्री अजीतलाल गुलाटी
तत्कालीन अनुसंधान सहायक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय एवं भूतपूर्व हिंदी अधिकारी, आकाशवाणी, दिल्ली ।

डॉ० (श्रीमती) बेजी लहरी
अनुसंधान सहायक,
केंद्रीय हिंदी निदेशालय ।

प्रकाशन

श्री० नरेन्द्र सिंह चौहान
सहायक शिक्षा अधिकारी

डॉ० प्रेमनारायण शुक्ल,
अनुसंधान सहायक,

श्री आलोक बाही,
कलाकार

संकेत-चिह्न

अं०	अंग्रेज़ी
अंत० स्व० वर्णमाला	अंतर्राष्ट्रीय स्वन वर्णमाला
इता०	इतावली
तु०	तुलना कीजिए
दे०	देखिए
पा०	पाली
पै०	पैशाची
प्रा०	प्राकृत
फ्रां०	फ्रांसीसी
म०आ०भा०	मध्य आर्य भाषा
ला०	लातीनी
सं०	संस्कृत
हिं०	हिंदी

रोमनीकरण की कुंजी

अ	a
आ	ā
इ	i
ई	ī
उ	u
ऊ	ū
ऋ	ṛ
ए	e
ऐ	ai
ओ	o
औ	au
अं (अनुस्वार)	ṃ
अः (विसर्ग)	ḥ
क	ka
ख	kha
ग	ga
घ	gha
ङ	ṅa
च	ca
छ	cha
ज	ja
झ	jha
ञ	ña
ट	ṭa
ठ	ṭh
ड	ḍa

ढ	dha
ण	ṇa
त	ta
थ	tha
द	da
ध	dha
न	na
प	pa
फ	pha
ब	ba
भ	bha
म	ma
य	ya
र	ra
ल	la
व	va
श	śa
ष	ṣa
स	sa
ह	ha
क्ष	kṣa
त्र	tra
ज्ञ	jña

चित्र-सूची

शब्द	चित्र संख्या
air stream mechanism	19·1
alveolar	19
amplitude	19
articulatory process	19.1
bilabial	19
breathing	2, 16·1
cavities	5
complex wave	12, 13
contour tone	7
creaky voice	21
damped wave	7·1
dental	17
diphthong	10
epiglottis	7·2
esophagus (oesophagus)	16
formant	8
glide	10
glottal stop	16·1
glottis	21, 7·2
interdental	17
intonation	7
IPA chart	11
labiodental	17
laryngeopharynx	16
larynx	16
lax vowel	20·1
murmur	21
nasal cavity	5
nasopharynx	16
oesophageal cavity	5

oral cavity 5
oronasal process . . . . . . 19·1
oropharynx 16
palatal 17
palate . . . . 20·2
palato-alveolar 17
pattern congruity 14, 15
pharyngeal 17
pharyngeal cavity 5
pharynx 16
phonation process . . . . . . 16·1, 19·1
post-alveolar 17
pulmonary cavity 5
register tone 7
resonance 6
resonance curve 18
retroflex 13
secondary cardinals 4
spectrogram 9
sub-secondary cardinals . . . . . 4·1
syllabic writing 20
tense vowels . . . . 20·1
trachea . . . . 20·2
tracheal rings . . . . 20·2
uvula . . . . 20·2
uvular 17
velar 7
velum . . . . 20·2
vocal cords 21
vocal folds . . . . 7·2
voice 21
voiceless 21
vowel height 22, 23
vowel triangle 3, 24, 25
whisper . . . . 16·1

विषय-सूची

	पृष्ठ संख्या
प्राक्कथन	iii
संपादन परामर्श-मंडल	vii
संपादन समिति	viii
संकेत-चिह्न	ix
रोमनीकरण की कुंजी	x
चित्र-सूची	xii
भाषाविज्ञान परिभाषा-कोश	1-177
परिशिष्ट : संकेत तथा प्रतीक	178-182
शब्दानुक्रमणिका (हिंदी-अंग्रेजी)	183-212

1—353 मानव संसाधन मंत्रालय (एन०डी०)/98

abhighāta (depression or sinking of voice) अभिघात

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) घोषत्व अथवा सुर का मंद होना। यह स्थिति स्वर का उच्चारण आघात सहित करते समय होती है।

abhinidhāna (close contact) अभिनिधान

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) व्यंजन का स्फोटरहित उच्चारण

टिप्पणी : स्पर्श व्यंजनों के द्वित्व की प्रक्रिया में प्रयुक्त होने वाले व्यंजनगुच्छ का पहला आस्थापित (स्फोटरहित) सदस्य। स्फोटरहित स्थिति में व्यंजन सुनने की दृष्टि से अस्पष्ट और क्षीण रहते हैं। बाद के प्रातिशाख्यों में इस गुण के आधार पर उन स्फोटरहित स्वनों को भी अभिनिधान के अंतर्गत मान लिया गया जो विराम के पूर्व अथवा पदांत में आते हैं। दे० āsthāpita.

abhivyādāna (absorption of a vowel) अभिव्यादान

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) दो समान दीर्घ स्वरों के साथ-साथ आने पर उनमें से एक का अंतर्भाव जैसे—अवसा+आ > अवसा। (विपुलं विशालं वा आदानं व्यादानम्। अभिव्याप्तं अभिभूतं व्यादानं अभिव्यादानम्)।

ābhyantara prayatna (intrabuccal process/effort) आभ्यंतर प्रयत्न

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) प्रयत्न का एक भेद। मुखविवर में ओठों से काकल तक किसी भी स्थान पर किया गया प्रयत्न। इसके चार भेद हैं—स्पृष्टता (जैसे, क् में), ईषत्स्पृष्टता (जैसे, य् में), संवृतता (जैसे, स्, श् में) तथा विवृतता (जैसे, अ, इ, उ में)।

पाणिनि ने इसे आस्य प्रयत्न भी कहा है।

2—353 मानव संसाधन विकासमंत्रालय/(एन० डी०)/88

ablaut अवश्रुति
(=apophony/vowel gradation)

पदगत स्वरों का व्यवस्थित क्रम-परिवर्तन। इस प्रकार का परिवर्तन भारोपीय भाषाओं में मिलता है जो काल, वचन आदि भेद उत्पन्न करता है। उदाहरणार्थ—संस्कृत के पठति, पठतः आदि से वचन-परिवर्तन का और अंग्रेज़ी के **run, ran** से काल-परिवर्तन का बोध होता है।

अवश्रुति के दो भेद हैं–(1) गुणात्मक अवश्रुति, तथा (2) मात्रात्मक अवश्रुति। दे० qualitative gradation और quantitative gradation.

abnormal vowel अपसामान्य स्वर

मुख्य मान स्वरों से इतर गौण तथा उपगौण मान स्वर। दे० cardinal vowel(s), secondary cardinal vowel(s), tertiary cardinal vowel(s).

abrupt (continuant) स्फोटी (प्रवाही)

(ध्वानिक विवरण) विस्तृत आवृत्ति पर ऊर्जा के प्रसार की पूर्ववर्ती और/या पश्चवर्ती निस्तब्धता (कम-से-कम घोषतंत्री के कंपन पर आवृत्ति-क्षेत्र में) जो स्वर-फार्मेन्ट की लहर या तत्काल अंतरण के रूप में होती है (स्वन और निस्तब्धता के बीच तत्काल अंतरण का अभाव)।

(उच्चारणात्मक विवरण) वह अभिलक्षण जो स्पर्शों से प्रवाही स्वनों का भेद करने वाले वाक्-पथ के क्षिप्र संवार और/या क्षिप्र विवार के माध्यम से स्रोत के त्वरित खुलने या बंद होने से या एक अथवा एकाधिक ताड़नों से जो उत्क्षिप्त या कंपित (r) जैसे स्फोटी तरलों का पार्श्विक (l) जैसे प्रवाही तरलों से विभेद दिखाता है। इस प्रक्रिया से उत्पन्न स्वन स्फोटी (प्रवाही) कहलाता है।

absolute duration निरपेक्ष (काल) मात्रा

स्वन विशेष के उच्चारण में लगे समय की मात्रा। उदाहरणार्थ—स्वन (i) की मात्रा के लिए जब यह कहा जाता है कि वह 14 सेंटी सेकेंड है तब वह निरपेक्ष मात्रा कहलाती है। दे० duration, relative duration.

abutting consonant — सहवर्तित व्यंजन

वह व्यंजन जिसका रूप अपने परवर्ती अथवा पूर्ववर्ती व्यंजन के प्रभाव स्वरूप किंचित् परिवर्तित हो गया है। इस परिवर्तन में न तो आंशिक या पूर्ण समीकरण होगा न द्वित्व। उदाहरणार्थ–"मत दौड़" में (त्द्) या a pair of hip boots में (pb) का उच्चारण।

accent — 1. आघात

उच्चारण में किसी अक्षर, शब्द, पदबंध, वाक्य आदि भाषिक इकाइयों पर दिया जाने वाला बलाघात या स्वराघात। आघात स्वराघात और बलाघात के लिए समावेशी पारिभाषिक शब्द है।

वाक्य संरचना का सार्थक अंग होने पर आघात अनुतान कहलाता है। दे० intonation.

टिप्पणी : संस्कृत में आघात की संकल्पना स्वराघात तक सीमित है और उसके तीन भेद किए गए हैं—**उदात्त, अनुदात्त** और **स्वरित**। इनके संबंध को क्रमश: तीन आघात-चिह्नों से दिखाया जाता है।

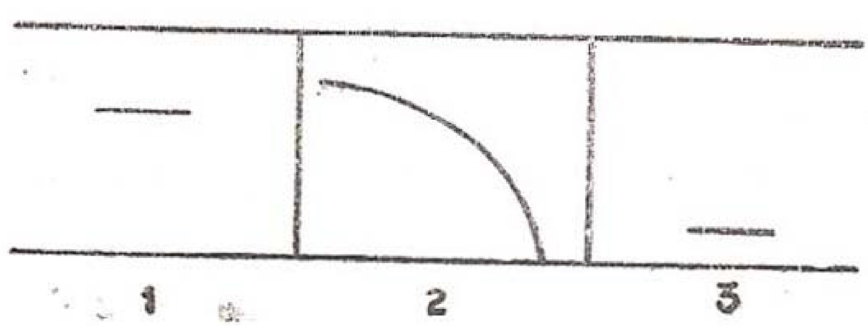

दे० acute accent, grave accent तथा circumflex.

2. लहजा

किसी स्थान या सामाजिक वर्ग से संबद्ध लोगों के बोलने का विशिष्ट ढंग जो उनमें उनकी आदत या उनके स्वभाव के कारण मिलता है।

accent mark आघात चिह्न

वह प्रतिकात्मक चिह्न जो स्वरों के उच्चारण में आघात को संकेतिक करता है।

accent shift आघात परिवृत्ति

शब्दों के समस्त पद बनने पर या उनमें प्रत्यय जुड़ने पर या उनके वाक्य में प्रयुक्त होने पर उनके स्थानीय बलाघात में परिवर्तन।

उदाहरणार्थ संस्कृत में : इंद्र : + शत्रु : > इंद्र+शत्रु>इंद्रशत्रु : (बहुव्रीहि समास) 'इंद्र जिसको मारनेवाला है' इंद्रस्य + शत्रु : > इंद्र + शत्रु > इंद्रशत्रु : (तत्पुरुष समास) 'इंद्र को मारनेवाले (वृत्र)'; खाद्+अ (शप्)+ति (तिप्) > खादति खादंति; अंग्रेजी में 'diplomat', diplomacy, diplomatic.

accentuation आघातन

सहवर्ती अक्षर की तुलना में अक्षर-विशेष पर अपेक्षाकृत अधिक आघात या बल देने की प्रक्रिया।

acoustic features ध्वानिक अभिलक्षण

उच्चार की इकाइयों में निहित वे विशेषताएं जिनकी पहचान यंत्रों द्वारा तरंगों के रूप में होती है। ध्वानिक अभिलक्षणों के बारह युग्म इस प्रकार हैं : **स्वरात्मक-अस्वरात्मक, व्यंजनात्मक-अव्यंजनात्मक, नासिक्य-निरनुनासिक्य, संहत-विसृत, स्फोटी-प्रवाही, रुक्ष-अरुक्ष (मृदु) निरुद्ध-अनिरुद्ध, घोष-अघोष, दृढ़-शिथिल (अदृढ़) अनुदात्त-उदात्त, तीक्ष्ण-अतीक्ष्ण, सपाट-असपाट।**

acoustic phonetics (=physical phonetics) ध्वानिक स्वनविज्ञान

स्वनविज्ञान की वह शाखा जिसमें वाक्-स्वनों के 'ध्वानिक गुण-धर्मों' का विश्लेषण-अध्ययन यंत्रों द्वारा तरंगों के रूप में किया जाता है।

acoustics ध्वनिकी, ध्वनिविज्ञान

भौतिकी की वह शाखा जिसमें ध्वनियों का विश्लेषण-अध्ययन तरंगों के रूप में किया जाता है ।

acoustic spectrum ध्वनिक स्पेक्ट्रम

किसी ध्वनि के आवृत्ति-घटकों के सापेक्ष आयामों को दर्शाने वाला रेखा-चित्र ।

दे० frequency component.

acoustic technique ध्वनिक प्रविधि

ध्वनि-तरंगों के यांत्रिक विश्लेषण के आधार पर ध्वनि वर्णन की तकनीक । इस तकनीक को यांत्रिक ध्वनिक प्रविधि भी कहते हैं।

acoustic wave ध्वनि-तरंग

दे० sound wave.

active chamber सक्रिय कोष्ठ, सक्रिय विवर

वह वायु विवर जिसका प्रयोग किसी स्वन के उच्चारण में किया जाता है अर्थात् जहां से वायु प्रश्वसित होती है ।

actualization प्रत्यक्षीकरण

(अ) उच्चारण के स्तर पर आर्की-स्वनिम या स्वनिम की उपस्वन के रूप में सिद्धि ।

(आ) (प्रजनक स्वनप्रक्रिया) स्वनिमिक नियमों द्वारा व्यवस्थापरक स्वनिम स्तर की इकाई का व्यवस्थापरक स्वन स्तर की इकाई में परिवर्तन ।

दे० archiphoneme, phoneme, systematic phonology.

acute उदात्त

1. दे० grave.

2. दे० acute accent.

acute accent उदात्त

सुर का आरोह; आरोही सुर ।

पाणिनि के अनुसार उच्चैरुदात्त: अर्थात् उदात्त उच्च (सुर) होता है । पतंजलि ने उच्च की व्याख्या यों की है : 'आयामों दारुण्यं अणुता स्वस्य इति उच्चैः कराणि शब्दस्य' । अर्थात् उदात्त में आयाम या अंग-संकोच, दारुण्य अर्थात् रुक्षता तथा अणुता अर्थात् कंठ या स्वरयंत्र की संवृतता ये तीन लक्षण माने जा सकते हैं । यूनानी ऐक्यूट इसका समानार्थी है ।

इस आघात का विशेषक चिह्न [´] है । वैदिक पाठ में इसका कोई चिह्न नहीं होता है । दे० circumflex तथा grave accent.

adam's apple टेंटुआ, कंठमणि

पुरुषों (विशेषतया दुर्बल पुरुषों) के गले में बाहर की ओर उभरी घांटी जो अवटु उपास्थि (thyroid cartilage) की बनी होती है । यहां श्वासनली मोटी होती है ।

ādeśa (substitute) आदेश

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) मूल के स्थान पर प्रतिस्थापित इकाई ।

टिप्पणी : संस्कृत वैयाकरणों के अनुसार स्थानापन्न इकाई के कार्य मूलवत् होते हैं और संस्कृत में मूल को स्थानी कहते हैं (स्थानिवदादेश: अनल्विधौ) । अत: आदेश होने की प्रक्रिया को स्थानिवद्भाव कहा गया है । स्वनिक तत्व का लोप भी स्थानिवद्भाव का एक प्रकार है ।

ādeśī (ādeśin/sthānin= original) **आदेशी, स्थानी**

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) आदेश की प्रक्रिया में वह मूल भाषिक इकाई जिसके स्थान पर किसी अन्य भाषिक इकाई को प्रतिस्थापित किया जाता है।

दे० ādaśa.

adhisparśa (incompletely pronounced) **अधिस्पर्श**

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) अपूर्ण रूप में उच्चरित स्वन।

adṛṣṭa (indistinct) **अदृष्ट**

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) ऐसा वर्ण जो स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर न होता हो।

adviyoni (simple articulation) **अद्वियोनि**

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) वे **समानाक्षर** (अ, इ, उ आदि) या स्पर्श (क्, ख्, ग् आदि) जो करण की केवल एक बार की गति से उच्चरित होते हैं।

इस शब्द का विलोम **व्यंजन-द्वित्व** है जिसे **द्वियोनि** कहा गया है।

दे० monophthong.

affricate (semi-plosive) **स्पर्श-संघर्षी, अनुघर्षी**

वह व्यंजन स्वन जिसके उच्चारण का आरंभ तो स्पर्श के रूप में हो पर जिसकी समाप्ति, प्रलंबित निर्मोचन के कारण, सवर्णी घर्षी स्वन के रूप में हो; **अर्धस्फोटी** स्वन। जैसे–हिंदी का 'च्', 'ज्'।

affrication — **स्पर्श-संघर्षण, अनुघर्षण**

स्पर्श-संघर्षी अथवा **अनुघर्षी** स्वन के उच्चरित होने की प्रक्रिया ।

aglopa (elision of vowel) — अग्लोप, अक् का लोप

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) सन्वद्भाव को तथा उपांत्य दीर्घ स्वर की ह्रस्वता को रोकने के लिए अ, इ, उ, ऋ, लृ स्वरों का लोप (सन्वल्लघुनि चङ्‌ परेऽनग्लोपे; नाग्लोपिशास्वृदिताम् ।

air chamber — वायु कोष्ठ

किसी **संवार** द्वारा अन्य विवरों से पूरी तरह पृथक् तथा अवरुद्ध किया गया कोई विवर या किसी विवर का भाग विशेष अथवा कुछ ऐसे विवर या विभिन्न विवरों के भाग जो योजक वायुमार्गों द्वारा जुड़े रहते हैं ।

air stream — वायु प्रवाह

कुछ वागवयवों के क्रियाशील होने के कारण उत्पन्न प्रवाहित वायु अथवा वायु धारा । इस प्रवाहित वायु के सहारे स्वन उत्पन्न होते हैं । अन्य वागवयवों के क्रियाशील होने पर वायुप्रवाह में ध्वनि तरंग के फलस्वरूप स्वन उच्चरित होते हैं । इस प्रकार वायुप्रवाह ही हर भाषिक स्वन का मूल तत्व है । प्रवाहित वायु वस्तुत: **वायुप्रवाह तंत्र** द्वारा उत्पन्न होती है ।

airstream mechanism — वायुप्रवाह तंत्र

उच्चारण प्रक्रिया में प्रयुक्त वायु के प्रवाह की क्रियाविधि । **प्रारंभक** को आधार मानकर इसके तीन भेद किए जाते हैं :

(1) **कोमलतालव्य वायुप्रवाह तंत्र**, (2) **फुप्फुसीय वायुप्रवाह तंत्र**, और (3) **श्वासद्वारीय वायुप्रवाह तंत्र** ।

दे० velaric airstream mechanism, pulmonic airstream mechanism, glottalic airstream mechanism.

airstream process **वायुप्रवाह प्रक्रिया**

स्वनों के उच्चारण में प्रयुक्त होने वाले वायु-प्रवाह का संचलन। दिशा के आधार पर इसके दो भेद हो सकते हैं : (1) **बहिर्गामी वायप्रवाह**, (2) **अंतर्गामी वायु-प्रवाह**। प्रारंभक के आधार पर इसके अथवा वायुप्रवाह तंत्र के तीन भेद किए जा सकते हैं : (1) **श्वासद्वारीय वायुप्रवाह तंत्र**, (2) **फुप्फुसीय वायुप्रवाह तंत्र**, और (3) **कोमलतालव्य वायुप्रवाह तंत्र**। चित्र के लिए देखिए speech process.

ākṣarāṅga (syllable part) अक्षरांग

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) अक्षर का एक अंश। जैसे—अनुस्वार, स्वरभक्ति (अनुस्वारो व्यंजनं चाक्षरांगम्; स्वर भक्तिः पूर्व भागाक्षरांगम्)।

akṣarasamāmnāya (alphabet) अक्षरसमाम्नाय

वर्णमाला। दे० alphabet.

ākṣipta (falling) आक्षिप्त

दे० circumflex.

al अल्

(पाणिनीय व्याकरण का पारिभाषिक शब्द) 'अ' से लेकर 'ह' तक समस्त स्वनिम समुदाय अथवा इस समुदाय का कोई भी एक सदस्य।

allochrone उपमात्रक

मात्रक अथवा मात्रा-स्वनिम का उपस्वन।

दे० chroneme.

allograpy उपवर्ण

वर्णिम का परिवर्त जो स्थान अथवा परिवेश से नियंत्रित होता है। जैसे— संस्कृत लेखन में अनुस्वार {ं, म्} वाक्यांत में 'म्' और मध्य स्थिति में [ं] : भोगे रोगभयं कुले च्युति भयं—........ वैराग्यमेवाभयम्; अंग्रेज़ी A और a; ग्रीक सिग्मा ς और s आदि; हिंदी में रमणी का 'र्', कर्म का ॅ और ट्राम का ∧.

allophone उपस्वन

(अ) स्वनिम (वर्ग) के परिवर्तों में से कोई एक सदस्य। किसी स्वनिम के उपस्वन उन स्वनों के समुच्चय का निर्माण करते हैं। ये उपस्वन (1) शब्द विशेष का अर्थ नहीं बदलते, (2) एक-दूसरे से स्वनिक रूप में मिलते-जुलते हैं, (3) एक-दूसरे के स्वनिम परिवेश से भिन्न परिवेश में प्रयुक्त होते हैं अथवा मुक्त रूप से एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं। उदाहरणार्थ—अंग्रेज़ी में आद्य स्थिति में आने वाला महाप्राणित [p^h] और अन्यत्र [p]।

(आ) (प्रजनक स्वनप्रक्रिया) स्वनप्रक्रियात्मक नियमों के लागू होने के बाद स्वनिम का कोई प्रतिफलित परिवर्त।

दे० phoneme.

alphabet वर्णमाला

(अ) भाषा विशेष के लिपिचिह्नों का समूह। यह प्रायः परंपरागत और क्रमबद्ध होता है। ऐसा प्रत्येक चिह्न अधिकांशतः किसी स्वन या संयुक्त स्वनों का प्रतिनिधित्व करता है।

(आ) उपर्युक्त लिपिचिह्न-समूह का एक सदस्य।

टिप्पणी : संस्कृत में वर्णमाला को अक्षरसमाम्नाय कहा गया है। माहेश्वर सूत्र में इसके अंतर्गत 5 समानाक्षर (एकस्वरक), 4 संध्यक्षर, 4 अंतःस्थ, 4 ऊष्म और 25 स्पर्श समाविष्ट हैं। इस प्रकार इसमें समाविष्ट स्वनों की संख्या 42 होती है। परंतु स्वर की दीर्घता और अयोगवाह (अनुस्वार, विसर्ग और जिह्वामूलीय आदि) को समाविष्ट करने के कारण कुछ प्रातिशाख्यों में इसके अंतर्गत स्वनों की संख्या 65 तक भी मिलती है।

alphabetic writing **वर्ण-लेखन**

लिपिबद्ध करने की वह विधि जिसमें प्रत्येक चिह्न सामान्यत: एक स्वन अथवा स्वनिम को और केवल विशेष परिस्थितियों में स्वन-समूह अथवा स्वनिम-समूह को **व्यक्त** करता है ।

alternant(s) परिवर्त

एक ही व्याकरणिक कोटि के चिह्नकों के वैकल्पिक (परिवर्तित) रूप जो **परस्पर व्यावर्तक परिवेश** में अथवा **स्वाश्रित परिवर्तन** की स्थिति में होते हैं । उदाहरणार्थ–अंग्रेज़ी के बहुवचन रूपिम [ʃ] के परिवर्त /z/,/s/,/əz/: हिंदी [जा] धातु के परिवर्त/जा-/ /ग- /

दे० automatic alternation, basic alternant, marker.

alternation परिवर्तन

शब्द-भेद और शब्द-निर्माण के संदर्भ में किसी रूपिम के भीतर होने वाला स्वनिक फेरबदल । **नियमित, अनियमित, स्वाश्रित, पराश्रित, स्वनिमाश्रित, रूपिमाश्रित** आदि-आदि परिवर्तन के अनेक भेद हैं ।

alveolar **वर्त्स्य, वार्स्व**

वह स्वन जिसके उच्चारण में दंतकूट उच्चारण-स्थान का और जिह्वाग्र [या जिह्वाफलक करण का काम करता है । जैसे–अंग्रेज़ी के t, d, n; हिंदी के न् (नमक), स् ।

alveolar region (ridge)
(=teeth ridge) **वर्त्स्य प्रदेश, वार्स्व प्रदेश**

ऊपरी जबड़े और (ऊपरी) दांतों को जोड़नेवाला कुछ उभरा-सा हिस्सा जिसे मसूड़े या दंतकूट भी कहते हैं और जिसके भीतरी सामने वाले भाग को जीभ द्वारा छूने पर वर्त्स्य व्यंजनों तथा जीभ और मसूड़ों के दोनों किनारों को हल्के से छूकर निकलने वाली हवा से पार्श्विक व्यंजनों का उच्चारण होता है ।

alveolus — **वर्त्स , बर्त्व**

ऊपर के अगले दांतों का वह पिछला (उपरला) भाग जहां मसूड़े उन्हें जकड़े रहते हैं।

alveo-palatal — **वर्त्स्य-तालव्य**

वर्त्स्य और तालव्य दोनों स्वनों के गुणवाला वह स्वन जिसका उच्चारण जिह्वाग्र को दंतकूट और कठोर तालु के मिलनस्थान तक उठाकर किया जाता है।

am — **अम्**

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) स्वरों, अर्धस्वरों, 'ह्' तथा अनुनासिक स्वनों का बोधक समावेशी पारिभाषिक शब्द।

amplitude — **आयाम**

किसी आवर्तन, दोलन या कंपन व्यापार में वस्तु का माध्य स्थिति से महत्तम विस्थापन। नीचे के चित्र में b′–b″ किसी स्वन के आयाम को प्रकट करता है :—

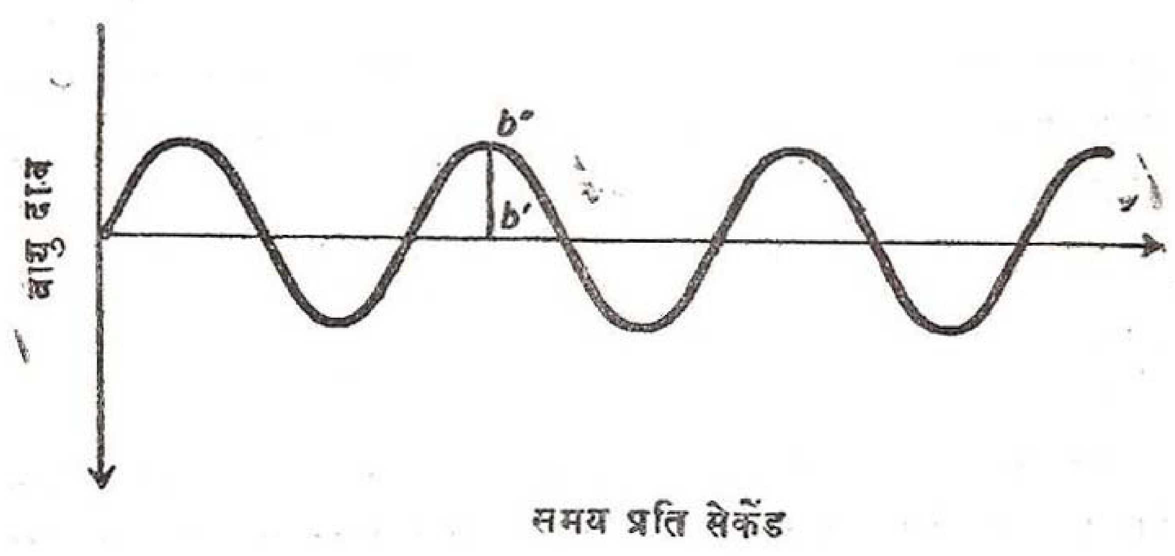

चित्र 1

anac (non-vowel) — अनच्

(संस्कृत का एक पारिभाषिक शब्द) स्वररहित (अक्षर या शब्द)।

analogous environment(s) — सदृश परिवेश

ऐसे परिवेश जो इस प्रकार समान हों कि उनका अंतर किन्हीं दो स्वनों के स्वनिक अंतर का कारण न बनता हो। उदाहरणार्थ—'सीता' और 'सदा' शब्द-युग्मों में [त्] और [द्] का परिवेश। यहां [त्] और [द्] के घोषत्व के अंतर का कारण परिवेशजन्य नहीं है।

anaptyxis — विप्रकर्ष, स्वर-भक्ति

उच्चारण की सुविधा अथवा श्रवण-सुख के लिए किसी शब्द में (प्रक्षिप्त) स्वर का प्रयोग। उदाहरणार्थ—स्वर्ग>सुवर्ग, सूर्य>सूरिय।

anata (uncerebralized) — अनत

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) अमूर्धन्यीकृत स्वन। दे० nata.

anejanta (not-ending in a diphthong) — अनेजंत

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) जिसका अंत संध्यक्षर (ए ऐ, ओ औ) में न हो।

angled brackets — कोण-कोष्ठक

(अ) (रचनांतरण व्याकरण) दो कोष्ठों < > का वह चिह्न जो आंशिक रूप से समान लगने वाले दो नियमों के संलयन को व्यक्त करता है। इनमें से एक में सभी अंश कोण कोष्ठक के भीतर होते हैं जबकि दूसरे में बाहर होते हैं। उदाहरणार्थ—

$$\begin{bmatrix} +\text{अभि}\circ 1 \\ <+\text{अभि}\circ_2 \end{bmatrix} \rightarrow \begin{bmatrix} +\text{अभि}\circ 3 \\ <-\text{अभि}\circ_4 \end{bmatrix} /- \begin{bmatrix} +\text{अभि}\circ 5 \end{bmatrix}$$

उपर्युक्त नियम में नीचे के दो नियम समाविष्ट हैं –

(1)
$$\begin{bmatrix} +\text{अभि०}1 \\ +\text{अभि०}2 \end{bmatrix} \rightarrow \begin{bmatrix} +\text{अभि०}3 \\ -\text{अभि०}_4 \end{bmatrix} / - \begin{bmatrix} -\text{अभि०}5 \end{bmatrix}$$

(2)
$$\begin{bmatrix} +\text{अभि०}1 \\ -\text{अभि०}2 \end{bmatrix} \rightarrow \begin{bmatrix} +\text{अभि०}3 \end{bmatrix} / - \begin{bmatrix} +\text{अभि०}5 \end{bmatrix}$$

(आ) (लेखिमविज्ञान)–लेखिम को अभिव्यक्त करने वाले कोष्ठक जैसे, <क>

टिप्पणी : अभि० = अभिलक्षण ।

antaḥpata (insertion of a phonetic letter) अंतःपात

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) दो स्वनों के बीच किसी स्वनिक तत्व का आगम । जैसे–ङ्–और ऊष्म के बीच 'क्' का आगम, या 'ण्' और ऊष्म के बीच 'ट्' का आगम । उदाहरणार्थ–प्रत्यङ् + स = प्रत्यङ् क् स ।

antaḥstha अंतःस्थ

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) य व र ल यणो अंतस्थः । हिंदी स्वनों में केवल य व ही अंतस्थ माने जाते हैं ।

दे० semivowel.

antara (hiatus) अंतर

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) दो उच्चरित स्वनों के बीच का विराम ।

antepenult उपधापूर्व, उपांत्यपूर्व

दे० antepenultimate.

antepenultimate (=antepenult) उपधापूर्व, उपांत्यपूर्व

शब्द के अंत से तीसरा अक्षर अर्थात् उपधा के तुरंत पहले का अक्षर । जैसे – हिं० 'कठिनाई' में 'ठि' ।

दे० penultimate.

anterior पूर्ववर्ती (अपूर्ववर्ती)

मुखविवर के तालुवर्त्स्य क्षेत्र (जहां अंग्रेज़ी sh अर्थात् ≈ अंत० स्व० वर्णमाला [ʃ] ≈ उच्चरित होता है) तथा उसके आगे के भाग में वायुधारा के अवरुद्ध होने (न होने) के फलस्वरूप उच्चरित स्वन । उदाहरणार्थ–[प्, त्] पूर्ववर्ती स्वन हैं जबकि [क्, ख्] अपूर्ववर्ती ।

anticipation पूर्वापेक्षा

किसी स्वन के उच्चारण की समाप्ति से पहले ही आगामी स्वन के उच्चारण के लिए वागवयवों के तत्पर हो जाने से उस स्वन पर पड़नेवाला प्रभाव । उदाहरणार्थ—चित्+मय>चिन्मय, वाक्+मय वाङ्मय ।

anticipatory co-articulation पूर्वापेक्षी सह-उच्चारण

वह प्रक्रिया जिसमें उच्चारण से संबंध न रखने वाला कोई वागवयव परवर्ती स्वन के उच्चारण के लिए संबंधित उच्चारणस्थान की ओर क्रियाशील होता है । उदाहरणार्थ–'स्वयं' शब्द के 'स्' के उच्चारण में ओठों का वृताकार होना 'व्' की अपेक्षित प्रक्रिया के लिए आवश्यक है ।

anti-resonance प्रत्यनुनाद

सम्मिश्र अनुनादक के बैंड पारक फिल्टर के स्थान पर बैंड-निरोधक के रूप में क्रियाशील होने से उत्पन्न प्रभाव ।

anunāsik (=nasal) अनुनासिक

दे० nasal (oral).

ānunāsikya (nasality) आनुनासिक्य

दे० nasal (oral).

anuprādana (secondary feature of articulation) अनुप्रदान

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) मुखविवर को छोड़कर कंठ आदि में होने वाला प्रयत्न; मुख्य प्रयत्न के साथ-साथ मुखविवर के बाहर प्रयत्न-उद्भूत विशेषता।

anusvāra अनुस्वार

(अ) स्वर के बाद उच्चरित होने वाला अनुनासिक स्वन। यह परिवेश-नियंत्रित होता है। इसका परिवेश स्वर के बाद और स्वरेत्तर स्वनों के पूर्व पदांत में है। यह इस स्थिति में आने वाले सभी नासिक्य स्वनों का सामान्य वाचक है। उदाहरणार्थ—संगीत (सम् + गीत), संचय (सम् + चय), संताप (सम् + ताप), संशय (सम् + शय)।

(आ) अनुस्वार के लिपि-संकेत को भी अनुस्वार कहते हैं।

दे० nasalization sign.

anvavasarga (relaxation or wide opening of vocal organs) अन्ववसर्ग

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) स्वनों का उच्चारण करने वाले अवयवों की विस्तृत या शिथिल स्थिति। जैसे—अनुदात्त सुर के उच्चारण में। (अन्ववसर्ग : गात्राणां विस्तृतता)।

apabhraṃśa (corrupt form) अपभ्रंश

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) मानक से इतर उच्चारण। जैसे संस्कृत में गौ: के स्थान पर गावी, गोणी आदि।

apex जिह्वाग्र

दे० tip of the tongue.

aphaeresis (=apheresis, aphesis) — आदि लोप

(अ) पूर्ववर्ती शब्द के अंतिम स्वर के प्रभाव के बिना किसी शब्द के आदि स्वर, व्यंजन या अक्षर का लोप। जैसे–सं० अभ्यंतर>हिं० भीतर, सं० स्थाली> हिं० थाली आदि।

(आ) आदिस्वर-लोप; स्वर से आरंभ होने वाले शब्द के प्रथम स्वर का लुप्त होना। यह लोप प्राय: पूर्ववर्ती उपपद (आर्टिकल) या अन्य शब्द के अंतिम स्वर के प्रभाव के कारण होता है। जैसे अं० I am> I' m आदि।

apical — जिह्वाग्रीय

(अ) (वि०) जिसके उच्चारण में जिह्वाग्र का योग हो।

(आ) (पुं०) इस तरह उच्चरित व्यंजन। दंत्य, वर्त्स्य और मूर्धन्य व्यंजन इसी प्रकार के व्यंजन हैं।

apocope — अंत्य लोप

किसी शब्द के अंतिम वर्ण, अक्षर या अंश का लुप्त होना। जैसे–सं० पाप> हिं० (बोलचाल) पाप्; फ्रां० bombe > bomb, सं० शिला > हिं० सिल, सं० आम्र > हिं० आम, सं० माता>हिं० मा।

apophony — अवश्रुति

दे० ablaut.

approximant — अप्राक्सीमेंट, अभिगामी

वह अनुनादी स्वन जिसके उच्चारण में करण उच्चारणस्थान की ओर इस तरह अग्रसर हुआ हो कि वायु बिना घर्षण के प्रवाहित हो। सभी स्वर, अर्धस्वर और तरल स्वन इसके अंतर्गत आते हैं।

दे० stricture.

3—353 मानव संसाधन विकास मंत्रालय/(एनडी)/88

araṅ (unrhotacized visarga) अरङ

(संस्कृत का एक पारिभाषिक शब्द) अरिफित विसर्ग (विसर्ग-नीयो रिफितो दीर्घपूर्वः स्वरोदयः आकारम्)।

arch चापचिह्न

श्रृंखला अथवा क्रमबद्धता-सूचक एक चिह्न विशेष (⌒) अथवा (‿) जिसका प्रयोग व्याकरणिक विश्लेषण या स्वन-अनुक्रम में किया जाता है। जैसे—वाक्य→संज्ञापदबंध क्रियापदबंध, ir (birth) तथा ou (bout)

archiphoneme आर्की-स्वनिम

(अ) अन्यत्रसिद्ध दो स्वतंत्र स्वनिमों का वह एकीकृत स्वरूप जो किसी स्थिति-विशेष में निर्विषमीकरण का परिणाम होता है।

दे० neutralization.

(आ) आंशिक पूरण की स्थिति में पाया जाने वाला स्वनिम।

दे० partial complementation.

हिंदी में अनुस्वार आर्की-स्वनिम का उदाहरण माना जा सकता है, क्योंकि एक स्थिति में नासिक्य व्यंजम न्, म् व्यतिरेक का उदाहरण बनने के कारण स्वनिम हैं (जैसे—नाली : माली), किंतु व्यंजनपूर्व स्थिति में इनके व्यतिरेक का भेद समाप्त हो जाता है। जैसे—संताप : संपत्ति (सन्ताप : सम्पत्ति)।

इसी प्रकार जर्मन और रूसी भाषाओं में आद्य और मध्य स्थिति में तो /t, d/ स्वतंत्र स्वनिम हैं, किंतु अंत्य स्थिति में उनका निर्विषमीकरण हो जाता है।

आर्कीस्वनिम को सामान्यतः कैपिटल अक्षरों में लिखा जाता है। उदाहरणार्थ t, d के घोषत्व अभिलक्षण के निर्विषमीकरण से उत्पन्न आर्कीस्वनिम को /T/ से व्यक्त किया जाता है।

archisegment आर्की-खंड

अभिलक्षण-गुच्छ के रूप में किसी स्वन का प्रतिफलन जिसमें एक या एक से अधिक अभिलक्षण निलंबित रहते हैं। उदा० 'सम्बोधन', 'सन्ताप', 'सञ्चय', 'सङ्गीत', में प्रयुक्त नासिक्य ध्वनि के रूप में आर्कीस्वनिम N के उच्चारण-स्थान से संबंधित अभिलक्षण—यथा द्व्योष्ठय दंत्य, आदि।

archiunit आर्की-इकाई

प्रजनक स्वनप्रक्रिया की वह इकाई जिसके अभिलक्षण-गुच्छ के सभी अभिलक्षण अभिव्यक्त नहीं होते। अनुस्वार को जब एक आर्की-इकाई के रूप में देखते हैं तब वह वर्तनी में बिंदु के उस रूप में प्रतिफलित होता है जिसमें उच्चारण-स्थान संबंधी अभिलक्षण अनुमेय होने के कारण अभिव्यक्त नहीं किए जा सकते।

दे० unit.

ardhamātrā (half mora) अर्धमात्रा

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) मात्रा का अर्धमान।

दे० mora.

ariphita (unrhotacized) अरिफित

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) जो 'र्' स्वन में परिवर्तित न हुआ हो।

articulation उच्चारण

किसी करण द्वारा स्वन की उत्पत्ति।

दे० manner of articulation, point of articulation.

articulator करण

चल वागवयव जो स्वनोच्चारण के समय विभिन्न स्थितियां ग्रहण करता है। जैसे—जिह्वा, ओठ आदि।

दे० place of articulation.

articulatory phonetics **उच्चारणात्मक स्वनविज्ञान**

स्वनविज्ञान की वह शाखा जिसमें स्वनों का अध्ययन उनके उच्चारण में प्रयुक्त वागवयवों की संचालन-प्रक्रिया के आधार पर होता है ।

articulator process **उच्चारणात्मक प्रक्रिया**

स्वनों के उच्चारण की क्रियाविधि । इसमें उच्चारण-स्थान और प्रयत्न का योग होता है ।

artificial larynx **कृत्रिम काकल, कृत्रिम स्वरयंत्र**

(अ) **काकल** (स्वरयंत्र) का उपयोग न कर पाने वाले व्यक्ति के लिए स्वनोच्चारण में सहायक यंत्र-विशेष ।

(आ) काकल का मॉडल ।

artificial palate **कृत्रिम तालु**
(=false palate)

धातु या वलकनाइट का बना उपकरण जिससे स्वनों के उच्चारणस्थान तथा जिह्वा के उत्थापन के अंश का और उसके ऊपर उठने की स्थिति का ज्ञान होता है । इस पर रंग या खड़िया लगाकर वक्ता इसे अपने तालु पर रख लेता है ।

artificial segment **कृत्रिम स्वनिक खंड**
(-instrumental segment)

वह स्वन जिसकी पहचान किसी यंत्र द्वारा होती है ।

तु० audible segment.

aspirate(d) **महाप्राण**

महाप्राणता से युक्त । दे० aspiration.

aspirated stop **महाप्राण स्पर्श**

महाप्राणता से युक्त स्पर्श व्यंजन। महाप्राणता की एक परिभाषा के अनुसार ख्, छ्, ठ्, थ्, फ्(अघोष व्यंजन) तथा घ्, झ्, ढ्, ध्, म् (घोष व्यंजन) महाप्राण स्पर्श हैं किंतु एक अन्य परिभाषा के अनुसार ख्, छ्, ठ्, थ्, फ् (अघोष व्यंजन) ही महाप्राण स्पर्श हैं।

aspiration **महाप्रणता, महाप्राणत्व**

(अ) स्वनों के उच्चारण में के साथ निर्मुक्त अतिरिक्त प्रश्वास।

(आ) उच्चारण-प्रक्रिया के अंतर्गत किसी विवर में आलोड़ित वायु का मिश्रण। इससे सामान्य वायु का प्रवाह असंगीतात्मक हो जाता है।

इस परिभाषा के अनुसार 'ल्', 'र्' अथवा किसी स्वर का भी महाप्राणयुक्त रूप होना संभव है।

(इ) स्पर्श-व्यंजन के उच्चारण में निर्मोचन के बाद अघोषत्व की अवधि।

इस परिभाषा के अनुसार महाप्राणत्व केवल अघोष व्यंजनों (ख्, छ्, ठ्, थ्, फ्) में ही मिलता है। घोष व्यंजनों (घ्, झ्, ढ्, ध्, भ्) में पाया जाने वाला तथाकथित महाप्राणत्व वस्तुतः मर्मर कहलाता है। दे० murmur.

टिप्पणी : रोमन लिपि में अघोष, महाप्रण स्पर्श 'फ्' को [p^h या p^6] रूप में लिखा जाता है।

asprṣṭa (non-contact) **अस्पृष्ठ**

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) स्पर्शरहित। वह प्रयत्न जिसमें करण उच्चारण-स्थान का स्पर्श नहीं करता। यह स्थिति स्वर, अनुस्वार और ऊष्म स्वनों के उच्चारण में मिलती है (स्वरानुस्वारोष्मणाम स्पृष्टं करणं स्थितम्)। इसका विलोम स्पृष्ट है जिसमें स्पर्श ध्वनियां उत्पन्न होती हैं (तत्र स्पृष्टं प्रयत्नं स्पर्शानाम्)।

assibilant **स्पर्शोष्म**

(अ) स्वनों का ऐसा सहोच्चरित अनुक्रम जिसमें स्पर्श और ऊष्म का संयोग हो। जैसे मराठी तथा भीली में 'च्' का 'त्स' उच्चारण या रूमानियन 'त्स' व्यंजन।

(आ) स्पर्श-घर्षी व्यंजन के लिए प्रयुक्त एक (वैकल्पिक) पर्याय।

assibilation **ऊष्मी करण**

ऐतिहासिक विकास-क्रम की दृष्टि से समीभवन की वह प्रक्रिया जिसमें ऊष्मेतर व्यंजन ऊष्म बन जाता है (जैसे–ला० vitium >इता० vezzo)। मूल भारोपीय के कुछ शब्दों में कंठ्य स्वन 'शतम्' वर्ग में ऊष्म हो गए थे, जबकि 'केंतुम' में वे कंठ्य ही रहे, जैसे —

केंतुम वर्ग	शतम् वर्ग
(लैटिन) केन्तुम	(अवेस्ता) सत्म
(इटैलियन) केन्तो	(संस्कृत) शतम्

assimilated phoneme **समीकृत (समीभूत) स्वनिम**

वह स्वनिम जो पूर्ववर्ती या परवर्ती स्वनिम के प्रभाव से, पूर्ण या आंशिक रूप में, उसी स्वनिम का रूप ग्रहण कर लेता है। जैसे– सं० 'चक्र' > हिं० 'चक्का' में 'र्'।

assimilation **समीकरण; समीभवन**

वह स्वनिक प्रक्रिया जिसमें कोई स्वन अपने निकटवर्ती स्वन को पूर्णतः या अंशतः अपने अनुरूप बना लेता है। इसके दो मुख्य भेद हैं—(1) पुरः समीकरण (समीभवन), दे० progressive assimilation, तथा (2) पश्च समीकरण (समी भवन), दे० regressive assimilation.

assimilatory phoneme **समीकारक स्वनिम**

वह स्वनिम जो किसी अन्य स्वनिम को पूर्ण या आंशिक रूप में अपने समान बना लेता है। जैसे–सं० 'चक्र' (> प्रा० 'चक्क') में 'क'।

asterisk तारांक, ताराचिह्न

तारे का आकार का वह चिह्न (*) जिसे किसी विशिष्टता को प्रकट करने के लिए शब्द या अभिव्यक्ति के ऊपर लगाया जाता है ।

तुलनात्मक अथवा ऐतिहासिक भाषाविज्ञान विषयक अध्ययन में शब्दों के पूर्व इसे लगाने पर यह घोषित होता है कि वह शब्द या शब्द-रूप (तारांकित रूप) भाषा में वस्तुतः उपलब्ध नहीं है, परंतु उसे ज्ञात सामग्री और भाषा-वैज्ञानिक नियमों के आधार पर पुनःरचित किया गया है ।

रचनांतरण व्याकरण में इसे उन रचनाओं के पूर्व लगाया जाता है जो अव्याकरणिक और अस्वीकार्य होती हैं ।

āsthāpita (arrested) आस्थापित

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) स्फोटरहित व्यंजन । दे० abhinidhāna.

asvaraka (untoned) अस्वरक

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) स्वराघातरहित शब्द ।

टिप्पणी : यह शब्द उन शब्दों से भिन्नता दिखाने के लिए प्रयुक्त होता है जिनमें आघात तो है लेकिन जिनका उच्चारण किसी कारणवश आघातयुक्त नहीं होता (अक्रियमाणे ह्युपदेशिवद्भावे आन्तर्यत आदेशा अस्वरकाणाम स्वरकाः स्युः) ।

āsya prayatna (mouth process) आस्य प्रयत्न

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) दे० ābhyantara prayatna.

asyllabic (=non-syllabic) अनाक्षरिक

वह स्वनिम जो स्वयं अक्षर (सिलेबल) निर्माण में अक्षम हो अथवा जो अक्षर-शिखर बनने की स्थिति में न हो ।

दे० syllable, syllabic, syllabic peak.

atisparśa (excess of contact) **अतिस्पर्श**

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) स्पर्श-काल की असामान्य दीर्घता । इसे उच्चारण-दोष माना जाता है। (दुःस्पर्श) ।

ativyakta (over distinct) **अतिव्यक्त**

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) अतिशय उच्चारण का दोष (नातिव्यक्तं न चाव्यक्तमेवं वर्णानुदीरयेत्) ।

ativyasta (wide apart) **अतिव्यस्त**

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) ऐसा उच्चारण जिसमें ओठ बहुत अधिक खुले हों । जैसे – (आ) और (ओ) के उच्चारण में ।

audible segment **श्रव्य खंड**
(=perceptual phone
=real phone
=real segment)

वह स्वन जिसकी पहचान स्वनविज्ञान में प्रशिक्षित व्यक्ति की सामान्य (normal) श्रवण क्षमता के आधार पर होती है ।

तु० artificial segment.

auditory phonetics **श्रवणात्मक स्वनविज्ञान**

स्वनविज्ञान की वह शाखा जिसमें वाक्-स्वनों का विश्लेषण-अध्ययन, श्रवणेंद्रिय द्वारा उनके ग्रहण किए जाने की संक्रियाओं के आधार पर किया जाता है ।

automatic alternation **स्वनाश्रित परिवर्तन**

परवर्ती अथवा पूर्ववर्ती स्वनिम के द्वारा किसी रूपिम में प्रभावित परिवर्तन । (उदाहरणार्थ अंग्रेजी में बहुवचन प्रत्यय [s] के अघोष व्यंजनों के बाद – स (बुक्स, बुक), घोष व्यंजनों के बाद - ज़ (पेन्ज़ 'पेन') और घर्षियों तथा स्पर्श-घर्षियों के बाद- इज (रोजिज 'गुलाब के फूल') में होने वाले परिवर्तन । यह स्वनिक परिवर्तन से इसलिए भिन्न है कि अंग्रेज़ी भाषा में सर्वत्र [s] का इसी रूप में परिवर्तन नहीं होता ।

autonomous sound change **निरूपाधिक स्वन-परिवर्तन**
अनाश्रित स्वन-परिवर्तन

दे० spontaneous sound change.

ayogavāha **अयोगवाह**

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) स्वनों का वह वर्ग जिनका उच्चारण बिना किसी अन्य स्वन की सहायता से नहीं होता । जैसे - **अनुस्वार, विसर्ग, जिह्वामूलीय, उपध्मानीय** और **यम** (अकारादिना वर्णसमाम्नायेन संहिताः सन्तः ये वहन्ति आत्मलाभं ते अयोगवाहाः) ।

अयोगवाह में स्वर और व्यंजन दोनों के गुण समाविष्ट रहते हैं ।

back (non-back) **पश्च (अपश्च)**

जिह्वा द्वारा अपनी तटस्थ स्थिति की अपेक्षा आकुंचित (निरा-कुंचित) स्थिति में उच्चरित स्वन ।

व्यंजनों में मृदुतालव्य, अलिजिह्वीय, ग्रसनीय पश्च स्वन होते हैं जबकि स्वरों में [u, o,ɔ) । इसके विपरीत कोमलतालु से पूर्ववर्ती उच्चारण-स्थानों से उच्चरित स्वन [प्, त्, च्] और स्वरों में (इ, ए, ऐ] अपश्च स्वन हैं । दे० back vowel neutral position.

back of the tongue **जिह्वा पश्च**

जीभ का पिछला भाग जो सामान्यतः कोमल तालु के सम्मुख होता है ।

back vowel **पश्च स्वर**

वह स्वर जिसके उच्चारण में जिह्वा का पश्च भाग कोमल तालु की ओर ऊपर उठता है । जैसे—हिंदी में ओ, उ, ऊ तथा अंग्रेज़ी से आगत अर्धवृत ऑ [ɔ] जो डॉक्टर आदि शब्दों के शुद्ध उच्चारण में प्रयुक्त होता है ।

bāhya prayatna
(extra-buccal process) **बाह्य प्रयत्न**

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) स्वनों के उच्चारण में मुखविवर से इतर स्थान में होने वाले प्रयत्न ।

टिप्पणी : संस्कृत व्याकरण के अनुसार यह प्रयत्न निम्नलिखित तीन भिन्न अभिलक्षण उत्पन्न करता है—(क) अघोष-घोष (श्वासद्वारीय), (ख) अल्पप्राण - महाप्राण (फुप्फुसीय), और (ग) अनुनासिक - निरनुनासिक (नासिक्य) ।

band width **बैंड की चौड़ाई**
बैंड विस्तार

आवृत्तियों का वह परास (रेंज) जिसमें किसी अनुनादक या फिल्टर की अनुक्रिया प्रभावपूर्ण ढंग से देखी जा सकती है ।

basic alternant **आधारित परिवर्तन,**
आधारित विकल्प

दो या दो से अधिक परिवर्तों में से वह परिवर्त जिसके प्रयोग में वितरण की दृष्टि से प्रतिबंध न्यूनतम होता है और जिसे वर्ग-प्रतिनिधि के रूप में चुना जाता है । दे० alternant.

bilabial **उभयोष्ठ्य, द्वि-ओष्ठ्य**

(अ) (वि०) जिसके उच्चारण में दोनों ओठों का योग हो, अर्थात् जिसके उच्चारण में दोनों ओठ एक दूसरे का स्पर्श करें अथवा निकट आ जाएं ।

(आ) (पुं०) इस तरह उच्चरित व्यंजन । जैसे - प्, फ्, ब्, भ्, म् ।

bilateral opposition **द्विपक्षीय प्रतियोग**

दो विरोधी स्वनिमों में पाई जाने वाली वह समानता जो अभिलक्षण रूप में केवल दो विरोधी सदस्यों तक सीमित होती है । उदाहरणार्थ जर्मन भाषा के आर्कीस्वनिम /T/ से संबद्ध दो स्वनिम /t/ और /d/ हैं जिनका भेद अभिलक्षण मात्र घोषत्व है ।

binary feature **द्विचर अभिलक्षण**

तुलनात्मक अथवा व्यतिरेकी आधार (पैरामीटर) पर किसी भाषिक इकाई का द्विविध वर्गीकरण । जैसे- घोषत्व के आधार पर : घोष-अघोष, महाप्राणत्व के आधार पर : महाप्राण - अल्पप्राण आदि ।

binary principle **द्विचर नियम**

(अ) वह नियम जो किसी भाषिक इकाई (अवयवी=constitute) को दो उपखंडों (सन्निहित अवयवों) में विभाजित करता है ।

(आ) (स्वनिमिक अभिलक्षण के स्तर पर) वह नियम जो किसी स्वनिम को निर्धारित आधार (पैरामीटर) पर दो उपखंडों में विभाजित करता है । दे० binary feature.

blade **(जिह्वा) फलक**

जिह्वाग्र से लेकर जिह्वोपाग्र तक जिह्वा का भाग जो सामान्य स्थिती में दंतकूट (मसूड़े) के सामने रहता है ।

blank filling rule(s) **रिक्ति पूरक नियम**

दे० segment redundancy rule(s).

bound accent **बद्ध बलाघात**

दे० fixed stress.

boundary **सीमा**

(अ) किसी भाषिक इकाई का प्रसार ।

(आ) ऋणात्मक स्वनिक खंड । यदि 'सीमा' को ऋणात्मक स्वनिक खंड मान लिया जाए तो इस आधार (पैरामीटर) पर स्वनों को [± स्वनिक खंड में] विभाजित करना संभव है ।

विभिन्न स्तरों की भाषिक इकाइयों के परिप्रेक्ष्य में यह सीमा पांच निम्नलिखित रूपों में व्यक्त होती है – (1) आक्षरिक सीमा (=); (2) रूपिमिक सीमा [+], (3) शाब्दिक सीमा [#], (4) पदबंधीय सीमा [,] अथवा [।], और (5) वाक्यात्मक सीमा [.] अथवा [।।.]

boundary modification — **सीमावर्ती आपरिवर्तन**

व्याकरणिक अथवा स्वनप्रक्रियात्मक सीमा पर किसी स्वन-इकाई में होनेवाला उप-स्वनिक अथवा अपरिच्छेदक (अर्थभेद-रहित) परिवर्तन ।

braces — **मझला कोष्ठक, धनु कोष्ठक, धनुर्बंधनी**

(अ) (रचनांतरण व्याकरण) दो कोष्ठकों { } का वह चिह्न-युग्म जो आंशिक रूप में समरूप दो नियमों का एक नियम में संलयन करता है, और इस प्रकार समरूप अंशों की पुनरावृत्ति नहीं होती है। उदाहरणार्थ :—

क→ ख / ग — { ङ }

यह नियम निम्नलिखित दो नियमों को समाविष्ट किए हुए है :—

(1) क→ ख /ग—घ

(2) क→ ख /ग—ङ

(आ) (रूपप्रक्रिया) — रूपिम विशेष को अभिव्यक्त करने वाले कोष्ठक ।

(इ) (समुच्चय सिद्धांत) — समुच्चय विशेष को अभिव्यक्त करने वाले कोष्ठक ।

breath group — **एकश्वासी वर्ग, एकश्वास का वर्ग**

एक ही वक्ष-स्पंद के परिणामस्वरूप निकलती वायु के दौरान उच्चरित स्वन-समुच्चय, वाक्यांश अथवा वाक्य ।

breathing 1. श्वसन

फुप्फुसीय वायु-प्रवाह । दे० pulmonic air stream.

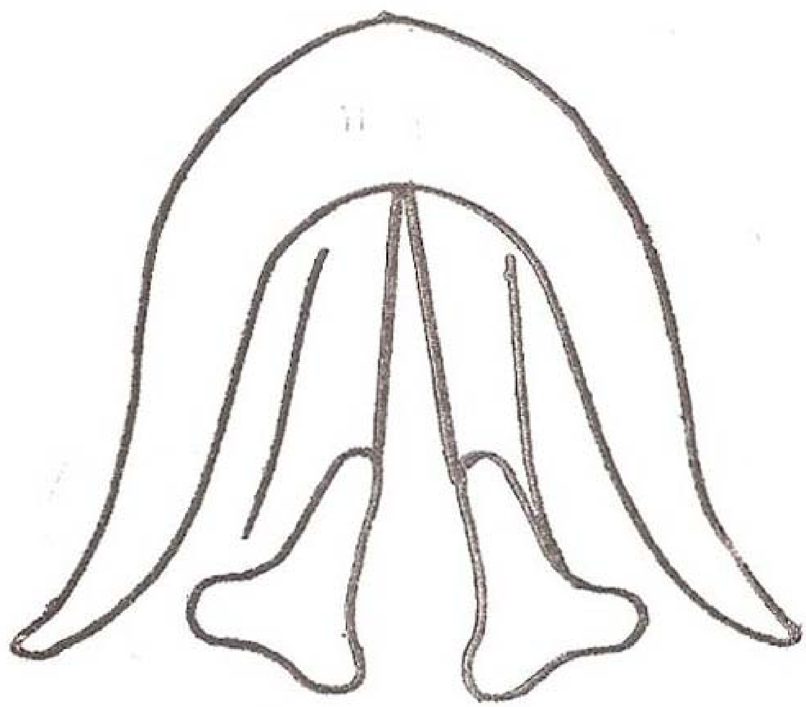

श्वसन

चित्र 2

2. प्राणत्व

स्वनों के उच्चारण में फुप्फुसीय वायुप्रवाह का योग । इसके आधार (पैरामीटर) पर स्वनों को दो वर्गों में बांटा जाता है—(1) महाप्राण, (2) अल्पप्राण । दे० aspiration तथा deaspiration.

टिप्पणी : प्राणत्व के सूचक दो चिह्न हैं—(1) उलटा अल्प-विराम (कामा) (') जो महाप्राणत्व का बोधक है । (2) सामान्य अल्प-विराम (,) जो अल्पप्राणत्व का प्रतीक है ।

breathy voice **श्वसित घोष**

स्वनन प्रक्रिया का प्रकार जिसमें घोषतंत्रियां इस स्थिति में हों कि वे आंशिक रूप में कंपित हों तथा उनके बीच से वायुधारा तीव्र गति से अधिक मात्रा में प्रवाहित हो । जैसे हिंदी में घोष महाप्राण के उच्चारण में । दे० phonation process में मर्मर ।

breve [˘] ह्रस्वक

(अ) किसी स्वर पर लगाया जाने वाला वह चिह्न जो यह सूचित करता है कि उस स्वर का उच्चारण ह्रस्व रूप में होगा ।

(आ) छंद के चरण में अथवा स्वतंत्र रूप से किसी अक्षर पर लगाया जाने वाला वह चिह्न [˘] जो यह प्रकट करता है कि अक्षर बलाघातहीन अथवा ह्रस्व है ।

broad transcription स्थूल लिप्यंकन

स्वन-लिप्यंकन की वह पद्धति जिसमें सूक्ष्म स्वनिक विशेषताओं का समावेश नहीं होता । ऐसे लेखन में प्रत्येक परिच्छेदक (अर्थ-भेदक) स्वन के लिए ही एक पृथक् चिह्न होता है न कि प्रत्येक अपरिच्छेदक स्वन के लिए भी । अर्थात् यह पद्धति स्वनिमिक लिप्यंकन के पर्याप्त निकट है। दे० सूक्ष्म लिप्यंकन का विलोम ।

broken pitch
(=rising-falling pitch) खंडित स्वराघात

वह स्वराघात जिसकी मात्रा (स्तर) अक्षर (सिलेबल) के आदि और अंत में समान हो, पर मध्य में इन दोनों से भिन्न हो । इसे [V] ∽ [Λ] से चिह्नित करते हैं ।

स्वराघात के आदि से अंत तक ही एक जैसा न रह पाने के कारण इसे खंडित स्वराघात कहा जाता है । अनुतान के संदर्भ में इसे आरोही-अवरोही अंत्य परिरेखा कहते हैं। दे० terminal contour.

buccal cavity
(oral/vocal cavity) मुख विवर

मुंह में ओठों से लेकर गले तक का वह भाग जिसमें मुख्यत: वायु के निकलते समय उच्चारण-अवयवों द्वारा उत्पन्न अवरोध के फलस्वरूप स्वरों तथा व्यंजनों का उच्चारण होता है ।

दे० cavity.

cacophony श्रुतिकटुत्व, दुःश्रवत्व

(अ) भाषा विशेष में स्वनों या स्वन-गुच्छों में सुश्राव्यता का अभाव । तु० euphony.

(आ) कर्णकट स्वन या स्वन-समूह ।

cacuminal मूर्धन्य

दे० retroflex.

cardinal vowels मान स्वर

स्वर-स्वनों की वह व्यवस्था जो किसी भाषा विशेष से संबद्ध नहीं होती, किंतु सामान्य संदर्भों में, जिसकी जिह्वागत तथा ओष्ठगत स्थितियां एवं ध्वानिक विशेषताएं सुनिश्चित मान ली गई हैं और जिसका प्रयोग किसी भाषा-विशेष के स्वरों से तुलना के लिए किया जाता है । इस व्यवस्था में चार स्वर अग्र हैं और चार पश्च तथा ये क्रमश: संवृत, अर्धसंवृत, अर्धविवृत और विवृत कहे जाते हैं ।

सबसे पहले इन्हें डेनियल जोन्ज़ ने संदर्भ-स्वर के रूप में परिभाषित किया था । मान स्वरों के निम्नलिखित पांच अभिलक्षण हैं :—

(1) ये किसी एक भाषा के नहीं हैं । ये स्वर-विश्लेषण के लिए संदर्भ-साधन का काम देते हैं । ये यादृच्छिक ढंग से निर्धारित किए गए हैं ।

(2) इनकी ध्वानिक विशेषताएं सुनिश्चित हैं ।

(3) ये स्वर-क्षेत्र की परिधि पर स्थित होते हैं ।

(4) ये श्रवणात्मक दृष्टि से समान दूरी पर स्थित होते हैं ।

(5) मुख्य मान स्वरों की संख्या आठ है और इन्हें क्रमश: क्रम संख्या 1 से 8 के द्वारा अभिहित किया जाता है ।

इनके अतिरिक्त ओठों की आकृति के आधार पर इन्हीं आठ मान स्वरों के समानांतर आठ गौण मान स्वर (secondary cardinals) भी माने गए हैं। इनमें वृत्ताकार तथा अवृत्ताकार का भेद होता है। फलतः यदि मुख्य मान स्वर वृत्ताकार हैं तो उनके गौण मान स्वर अवृत्ताकार होते हैं और इसी प्रकार जो मुख्य मान स्वर अवृत्ताकार होते हैं तो उनके गौण मान स्वर वृत्ताकार होते हैं ।

गौण मान स्वरों का एक उपवर्ग मध्य स्वरों का है । इन्हें उपगौण मान स्वर (tertiary cardinals) कहते हैं। स्वर-उच्चता के अनुसार इनके संवृत, अर्धसंवृत तथा अर्धविवृत ये तीन भेद होते हैं और वर्तुलन के आधार पर वृत्ताकार और अवृत्ताकार दो उपभेद । इस प्रकार इनकी संख्या छह है ।

चार्ट :

मुख्य मान स्वर

अग्र		पश्च
संवृत मान स्वर एक	[i]	मान स्वर आठ [u]
अर्ध-संवृत मान स्वर दो	[e]	मान स्वरसात [o]
अर्ध-विवृत मान स्वर तीन	[ɛ]	मान स्वर छह [ɔ]
विवृत मान स्वर चार	[a]	मान स्वर पांच [ɑ]

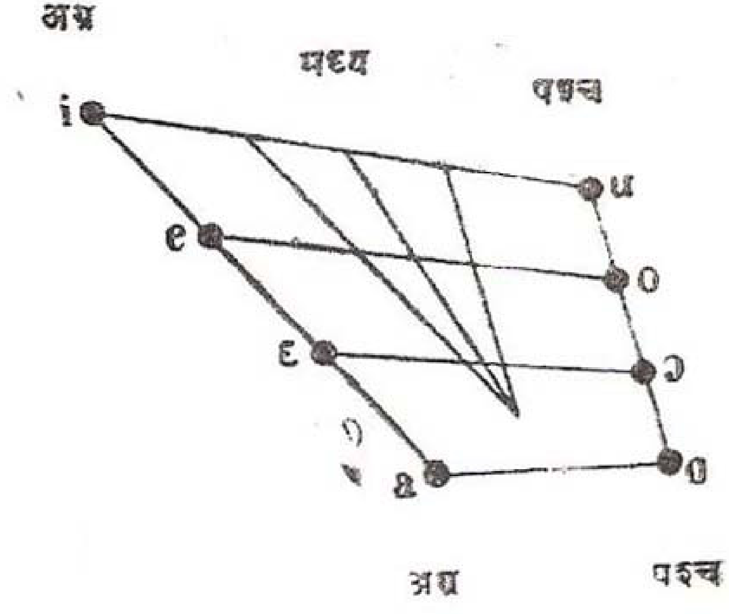

गौण मान स्वर

मान स्वर नौ [y]	मान स्वर सोलह [ɯ]
मान स्वर दस [ø]	मान स्वर पंद्रह [ɤ]
मान स्वर ग्यारह [œ]	मान स्वर चौदह [ʌ]
मानस्वर बारह [ɶ]	मान स्वर तेरह [ɒ]

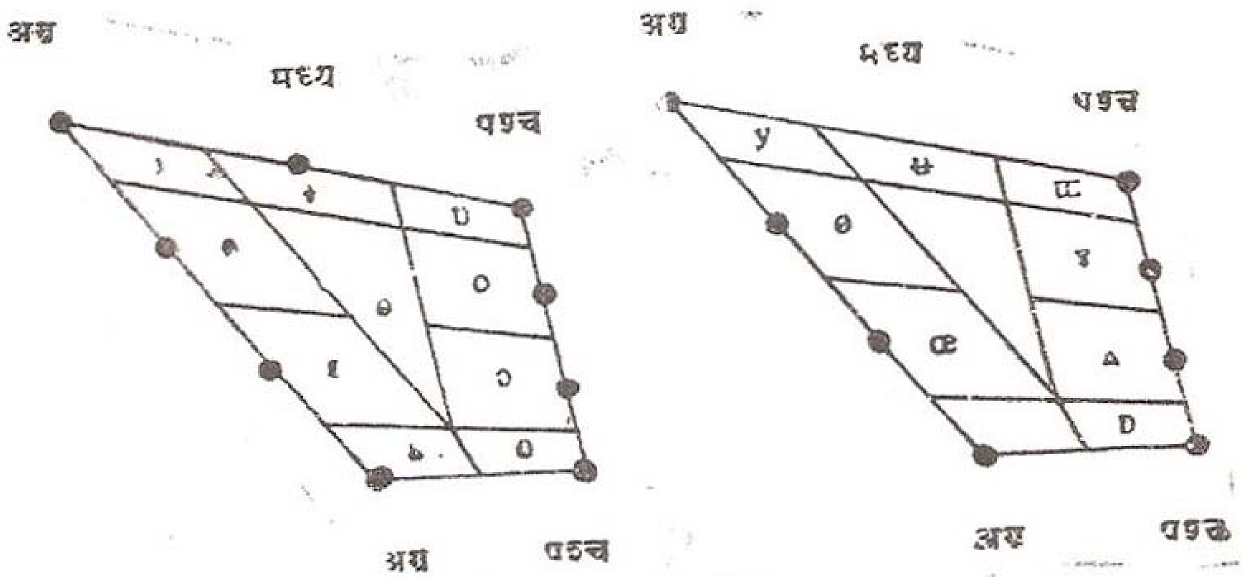

चित्र 4

उपगौण मान स्वर

मान स्वर सत्रह [ɨ]	मान स्वर अठारह [ʉ]
मान स्वर उन्नीस [ɘ]	मान स्वर बीस [ɵ]
मान स्वर इक्कीस [ɜ]	मान स्वर बाईस [ɞ]

गौण तथा उपगौण मान स्वरों को अपसामान्य स्वर भी कहते हैं ।

छह अन्य गौणमान स्वरों की ओर संकेत मिलता है । ये सभी मान स्वर मध्य स्वर हैं जिन्हें तीन युग्मों के रूप में देखा जा सकता है । मध्यवर्ती स्वर होने के कारण इन्हें उपगौण मान स्वरों के उपवर्ग के रूप में माना जाता है । इनमें संख्या 19 से 22 स्वर-क्षेत्र की परिधि पर नहीं होते ।

उपर्युक्त गौण तथा उपगौण मान स्वरों के उच्चारण-स्थान का संकेत नीचे दिए गए रेखाचित्र में संख्याओं के अनुसार दिखाया गया है :

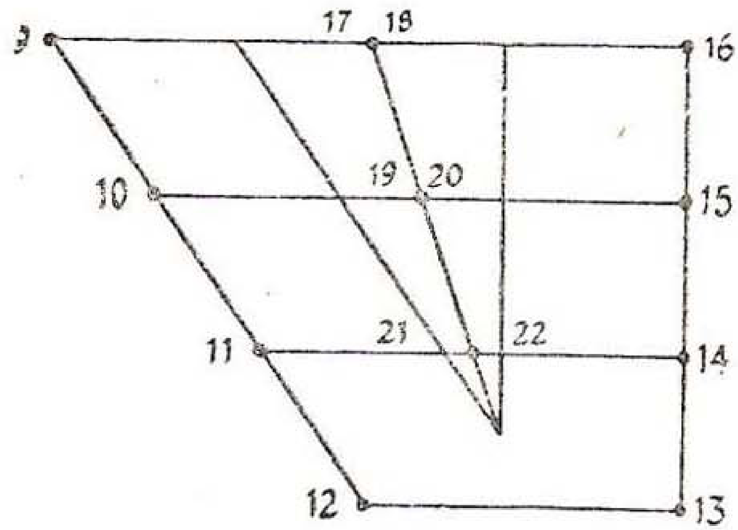

चित्र 4.1

catch श्वासद्वारीय स्पर्श

दे॰ glottal stop.

cavity विवर
(=chamber)

वाग्यंत्र के भीतर की पांच गुहिकाओं में से कोई एक जिसका कम-से-कम एक सिरा खुला या बंद हो सकता है । ऐसे पांच विवर-क्षेत्र इस प्रकार हैं : मुख-विवर, नासा-विवर, फुप्फुसीय विवर अथवा फेफड़े, ग्रसनी-विवर, ग्रासनलीय (भोजन नलीय) विवर । दे॰ buccal (oral) cavity, nasal cavity, pulmonic cavity, esophageal cavity, pharyngeal cavity.

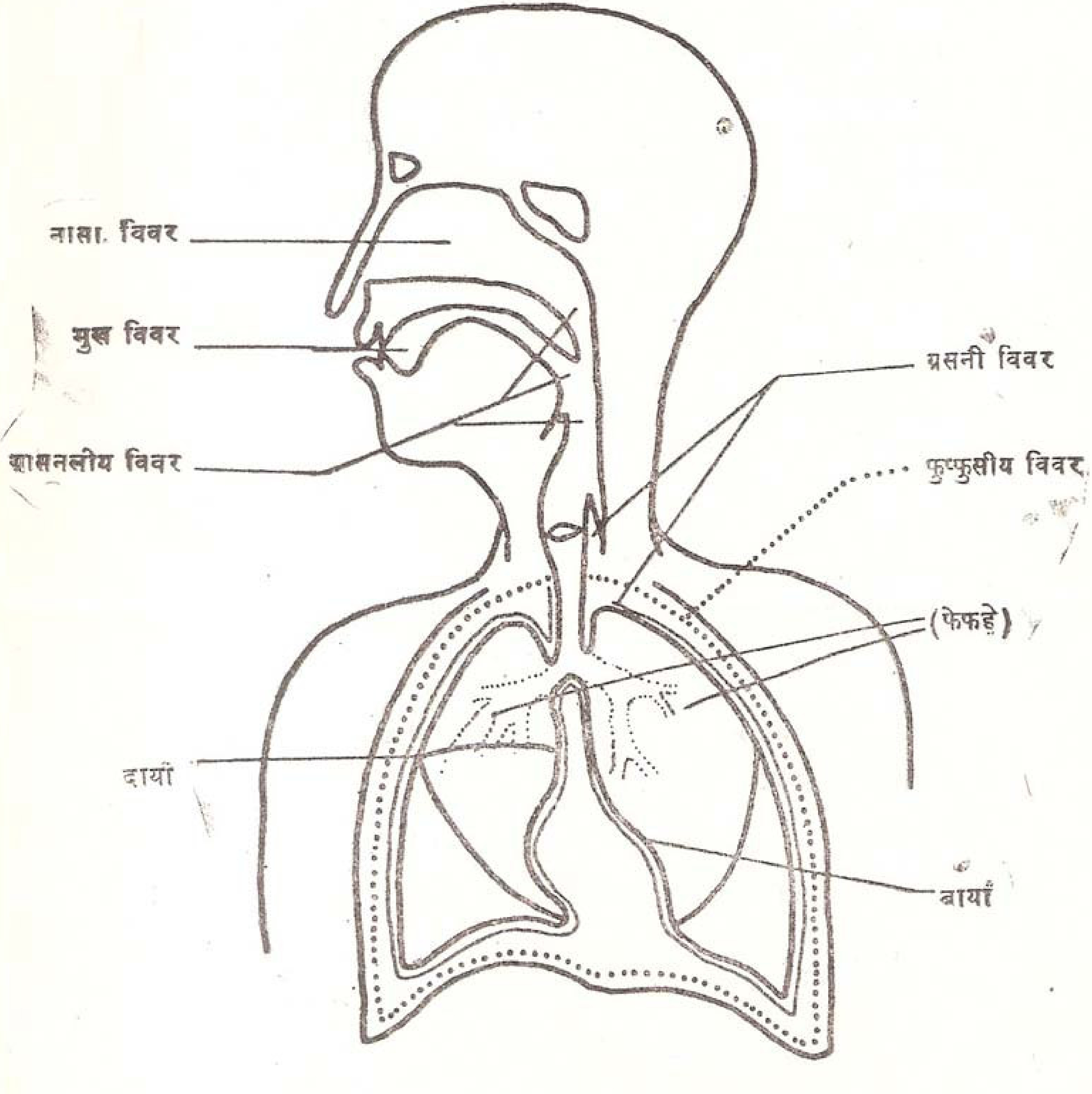

चित्र 5

गुहिकाएं

cedilla सेडिला (सैदिया), ऊष्मक

उच्चारण विशेष (प्राय: ऊष्मत्व) का संकेत देने के लिए वर्ण के नीचे लगाया जाने वाला एक विशेषक चिह्न (̧)। फ्रांसीसी, स्पेनी तथा पुर्तगाली में c के साथ इस चिह्न के लगने से [ç] इसका, उच्चारण 'क्' के स्थान पर 'स्' या 'त्स्' हो जाता है। तुर्की में इसका प्रयोग c और s के साथ होने पर इनका उच्चारण क्रमश: चकार और शकार हो जाता है, जबकि रूमानियन में t और s के नीचे लगने पर इनका उच्चारण क्रमश: 'त्स्' और 'श्' हो जाता है।

central vowel केंद्रीय स्वर

वह स्वर जिसके अचारण में जिह्वा अग्र स्वर और पश्च स्वर के बीच के क्षेत्र में स्थित होती है। सामान्यत: यह क्षेत्र कठोर और कोमल तालु का संधिस्थल होता है। जैसे, [ə]

तु० mid-vowel.

centring diphthong अभिकेंद्री संध्यक्षर

ऐसा संध्यक्षर जिसका द्वितीय अंश केंद्रीय स्वर होता है। बाहर से केंद्र की ओर अभिमुख होने के कारण इसे अभिकेंद्री कहते हैं। अंग्रेजी के [ə] (dear), [uə] (poor), [ɛ ə] (boar) इसी कोटि के संध्यक्षर हैं।

cerebral मूर्धन्य, प्रतिवेष्टित

दे० retroflex.

cerebralization प्रतिवेष्टन

दे० retroflexion.

cerebralized प्रतिवेष्टित

दे० nata.

chamber कोष्ठ, विवर

दे० cavity.

character लिपिचिह्न, वर्ण

(अ) लेखन, अर्थात् लिपि की इकाई का रूढ़ प्रतीक ।

(आ) लेखन में लिपिचिह्न को अंकित करने का रूप । जैसे,— [क्+अ] के लिए देवनागरी में <क> और बंगला में <<|o> ।

checked (unchecked) निरुद्ध (अनिरुद्ध)

(ध्वानिक विवरण) अल्प (अधिक) अवसंदन के साथ न्यून (अधिक) समयांतराल में ऊर्जा-विसर्जन की उच्च (निम्न) दर ।

(उच्चारणात्मक विवरण) प्रश्वासद्वार में वायु धारा के अवरुद्ध (अनवरुद्ध) होने के कारण अल्प (प्रचुर) वायु की स्थिति में उच्चरित (स्वन) । निरुद्ध स्वनिम तीन रूपों में उच्चरित होते हैं—हिक्कित (श्वासद्वारीय रंजित) व्यंजन, अंतःस्फोटी या क्लिक ।

chroneme मात्रिम

काल की मात्रा की वह अर्थभेदक इकाई, जिससे ह्रस्व, दीर्घ आदि स्वनों का भेद किया जाता है । इसके आधार पर दीर्घता [:] को भी स्वनिमिक स्तर प्रदान किया जाता है । इसे मात्रा-स्वनिम भी कहते हैं ।

circumflex 1. स्वरित

(1) वह स्वराघात जिसमें उदात्त और अनुदात्त का मेल या समाहार होता है : समाहारः स्वरितः । इसमें अक्षर के स्वराघात का प्रारंभिक अंश उदात्ततर होता है । संस्कृत का 'स्वरित' यूनानी सर्कमफ्लेक्स के समीप होते हुए भी उसका समानार्थी नहीं है ।

(ग्रीक आदि भाषा में) आरोही-अवरोही तान का सूचक स्वराघात। अन्य भाषाओं में यह दीर्घता, संकुचन अथवा अवरोही-आरोही तान तथा कुछ अन्य भाषाओं में स्वर-गुण का सूचक है।

इस आघात का विशेषक चिह्न [∧] है। वैदिक पाठ में इसे अक्षर के ऊपर खड़ी पाई से अभिव्यक्त किया जाता है।

टिप्पणी : संस्कृत के कुछ वैयाकरणों ने स्वरित में प्रयुक्त तान को 'आक्षिप्त' की संज्ञा दी है जिसका अर्थ है 'नीचे लाया गया'।

clear 'l' — **अग्र 'ल्', स्पष्ट 'ल्'**

जिह्वा की उच्च और अग्र स्थिति में उच्चरित 'ल्'। अंग्रेजी में स्वरों और [j] के पूर्व इस प्रकार का 'ल्' मिलता है। उदाहरणार्थ Little का पहला l अग्र या स्पष्ट है, तथा दूसरा पश्च या अस्पष्ट। तु० dark 'l'।

click — **क्लिक**

कोमल-तालव्य वायुप्रवाह-तंत्र की प्रक्रिया में उच्चरित स्पर्श। इस प्रकार के स्वन जुलू तथा बुशमैन जैसी अफ्रीकी भाषाओं में मिलते हैं। इस स्वन के तीन मुख्य प्रकार हैं : (1) ओष्ठस्पर्शी (2) वर्त्स-स्पर्शी, और (3) तालु-स्पर्शी।

दे० velaric air stream process.

close — **संवृत**

(1) स्वनों के उच्चारण में जिह्वा के तालु की ओर अधिकतम (उच्चतम) उठने की स्थिति।

(2) इस स्थिति में उत्पन्न स्वर। जैसे—ई, ऊ।

दे० vowel height.

closed syllable — **व्यंजनांत अक्षर**

वह अक्षर जिसके अंत में (जिसके शिखर के बाद) कोई व्यंजन-स्वन हो। जैसे—सत्, चित् और (संस्कृत के) कः, कम्।

close juncture सन्निकृष्ट संहिता

शब्द-सीमा के भीतर एक स्वनिम के उच्चारण से दूसरे स्वनिम के उच्चारण में विराम-रहित संक्रमण। जैसे–nitrate (night+rate), नतेन (न+तेन), पीली (पी+ली) आदि।

दे० open juncture.

close vowel संवृत स्वर

वह स्वर जिसके उच्चारण में जिह्वा तालु की ओर अधिकतम (उच्चतम) स्थिति में उठती है। जैसे– i, u.

दे० vowel height.

closing diphthong संवारी संध्यक्षर

ऐसा संयुक्त स्वर जिसका पहला स्वर आक्षरिक अर्थात् प्रमुख हो और दूसरा अनाक्षरिक अर्थात गौण। दूसरा अनाक्षरिक स्वर अपने पूर्ववर्ती आक्षरिक स्वर के उच्चारण की तुलना में अनिवार्यतः संवृत होता है। उदाहरणार्थ अंग्रजी में day [dei], go [gou] आदि। कुछ विद्वान इसी को अवरोही संध्यक्षर कहते हैं।

closure संवार, अवरोध

उच्चारण-स्थान के साथ करण का इस तरह स्पर्श, कि वायुप्रवाह पूर्णतया अवरुद्ध हो जाए। स्पर्श ध्वनियां इसी स्थिति में उच्चरित होती हैं।

दे० stop.

cluster गुच्छ

स्वनिमों का समूह; दो या दो से अधिक स्वनों का अनुक्रम। उदाहरणार्थ कृत्स्न (=संपूर्ण) के अक्षर 'त्स्न' में त्+स्+न का योग। यह उदाहरण व्यंजन गुच्छ का है।

coalescence (=contraction) प्रश्लेष, प्रश्लेषण

संधि का एक भेद जिसमें दो स्वनिम एकाकार होकर एक ऐसे अन्य स्वनिम में परिवर्तित होते हैं जिसमें आंशिक रूप से दोनों स्वनों की समानता देखी जा सकती है। संस्कृत की गुण संधि इसका एक उदाहरण है।

co-articulation **सह-उच्चारण**
(=secondary articulation)

उच्चारण-प्रक्रिया में मुख्य वागवयव के साथ ही किसी अन्य (गौण) वागवयव की क्रियाशीलता के फलस्वरूप उद्भूत उच्चारण। काल की दृष्टि से सहवर्ती उच्चारण होने के बावजूद सह-उच्चारण के प्राथमिक उच्चारण की तुलना में इसमें सचार की मात्रा कम होती है। एक दृष्टि से इसे प्राथमिक उच्चारण पर आरोपित उच्चारण माना जा सकता है।

दे० glottalization, labialization, nasalization, palatalization, velarization, pharyngealization.

coda **अंत**

किसी अक्षर का शिखर के बाद आनेवाला स्वन। जैसे काम् (आ) में 'म्'।

Λ
श् म्

तु० onset.

colon **कोलन**

एक विरामचिह्न [:] जिसका प्रयोग स्पष्टीकरण, उदाहरण, दृष्टांत, विवरण, विभाजन, परिभाषा, पुनःकथन, सारकथन, उद्धरण आदि से पहले किया जाता है और 'जैसे' तथा 'निम्नलिखित' आदि शब्दों के बाद भी।

combinatory variant **संयोजी परिवर्त**
(=सोपाधिक परिवर्त)

दे० conditional variant.

comma **अल्पविराम, कामा**

एक विराम चिह्न [,] जो वाक्य में घटकों के पार्थक्य का बोध कराता है और जो वाग्धारा में क्षणिक विराम का भी संकेत देता है। यह चिह्न एकल रूप में 'और' आदि समुच्चय बोधकरहित शब्दों या उपवाक्यों के बीच में, समानाधिकरण शब्दों के बीच में, संबोधन शब्द या पदबंध के बाद, संबंधवाचक एवं विशेषण उपवाक्यों के पहले तथा छंद के चरण के बीच में (यति होने पर) प्रयुक्त होता है। यह युग्म रूप में पदांश, उपवाक्य अथवा किसी स्पष्टीकरण को, वाक्य की अन्विति भंग किए बिना, प्रकट करता है।

compact (diffuse) सहंत (विसृत)

(ध्वानिक विवरण) स्पेक्ट्रम के अपेक्षाकृत संकरे, केंद्रीय (अकेंद्रीय) क्षेत्र में ऊर्जा का उच्चतर (निम्नतर) संकेंद्रण और उसके साथ ही ऊर्जा की समग्र मात्रा में वृद्धि (ह्रास) ।

(उच्चारणात्मक विवरण) अग्रवर्ती कोरदार (पश्चवर्ती कोरदार) । यह अंतर उस अनुनाद कोष्ठ के आकार और आयतन के बारे में होता है जो सबसे अधिक संकीर्ण संकोच के सामने या उसके पीछे बनता है । अग्रवर्ती कोर-दार स्वनिमों (विस्तृत स्वरों, कोमल तालव्य या तालव्य व्यंजनों) का अनुनादक श्रृंगी आकार का होता है जबकि पश्चवर्ती कोरदार स्वनिमों (संवृत स्वरों, ओष्ठ्य, दंत्य, वर्त्स्य व्यंजनों) के अनुनादक की गुहिका हेल्महोल्त्स अनुनादक से मिलती-जुलती है ।

स्वर-व्यवस्था में यह अभिलक्षण दो अन्य वर्गों में विभाजित हो जाता है :
सहंत : असहंत (केंद्रीय क्षेत्र में ऊर्जा का उच्च या निम्न संकेंद्रण) और विसृत : अविसृत (अकेंद्रीय क्षेत्र में ऊर्जा का उच्च या निम्न संकेंद्रण) ।

उपर्युक्त प्रक्रिया से उच्चरित स्वन संहत (विसृत) कहलाता है ।

compensation प्रतिपूरण, प्रतिपूर्ति

(अ) विभिन्न उपायों से एक-सा ध्वानिक प्रभाव उत्पन्न करना । यदि हम किसी उच्चारण-कारक को दबाते हैं या परिवर्तित करते हैं तो दूसरे कारकों में फेर-बदल करके उसकी क्षतिपूर्ति कर सकते हैं ।

(आ) वह प्रक्रिया जिसमें शब्द विशेष में किसी स्वन के लुप्त होने या परिवर्तित हो जाने पर उसका आसन्न स्वन दीर्घ या ह्रस्व रूप में परिवर्तित हो जाता है । जैसे—म०आ०भा० अग्ग > हिं० आग, सं० सिंह>पा०, प्रा० सीह, सं० वंश>हिं० बांस, सं० दंत>हिं० दांत ।

दे० compensatory lengthening तथा compensatory shortening.

compensatory lengthening प्रतिपूरक दीर्घीकरण

परवर्ती व्यंजन के लुप्त होने पर पूर्ववर्ती स्वर का दीर्घ हो जाना । जैसे—प्रा० कम्म > हिं० काम ।

compensatory shortening प्रतिपूरक ह्रस्वीकरण

परवर्ती संयुक्त व्यंजन के स्थान पर द्वित्व हो जाने से पूर्ववर्ती स्वर का ह्रस्व हो जाना। जैसे–सं० शून्य>हिं० सुन्न।

complementary distribution पूरक वितरण

किसी स्वनिम के उपस्वनों का ऐसा वितरण जो परस्पर व्यावर्तक परिवेश में हो अर्थात् एक उपस्वन जिस परिवेश में हो दूसरा उसमें नहीं आता हो। दे० mutually exclusive environment. उदाहरण के लिए अंग्रेज़ी के [^{l} k $^{!}$] स्वनिम के दो उपस्वन (1) अल्पप्राण [k] का और (2) महाप्राण [kʰ] का वितरण। अल्पप्राण [k] या तो [s] के बाद आता है (sky) अथवा मध्य या अंत्य स्थिति में किसी अन्य व्यंजन के पहले आता है (act), जबकि महाप्राण [kʰ] आद्य स्थिति में किसी स्वर के पूर्व आता है (key).

complementation पूरण

दे० complementary distribution

complex articulator संमिश्र करण

स्वन के उच्चारण में एक साथ प्रयुक्त दो या दो से अधिक एकल करण।

complex wave संमिश्र तरंग

वह तरंग जिसमें कंपनों की आवृत्ति एक समान न होकर अनेक रूपों की हो। तु० sine wave.

component घटक

(अभिलक्षण स्तर) स्वनिक अथवा स्वनिमिक प्रक्रिया के स्पष्टीकरण के लिए अभिलक्षण स्तर पर निर्धारित स्वनिक अथवा स्वनिमिक इकाई। जैसे–स्पर्श, संघर्षी, नासिक्य, ओष्ठ्य, दंत्य, तान, बलाघात आदि।

किसी भाषी के उच्चारों को सहवर्ती घटकों के संदर्भ में विश्लेषित करने से एक ओर स्वराघात, बलाघात, आदि अखंडात्मक लक्षण मिलते हैं और दूसरी ओर स्वनिक और स्वनिमिक जैसी खंडात्मक इकाई को चिह्नित किया जा सकता है।

componential analysis **घटकीय विश्लेषण**

घटकों के आधार पर स्वन, स्वनिम आदि भाषिक इकाइयों का अध्ययन।

घटकीय विश्लेषण से स्वन, स्वनिम आदि इकाइयों के उच्चारण के आधार तथा उनके प्रकार्य का ज्ञान होता है।

compound phoneme **संयुक्त स्वनिम**

दे० diphthong.

conditional variant **सोपाधिक परिवर्त**

वह परिवर्त जो परिवेश-विशेष पर आश्रित हो। जैसे--उपस्वन, उपरूप आदि। तु० free variant.

परिवेशगत अथवा वाक्यगत स्थिति पर निर्भर होने के कारण इसे स्थानाश्रित परिवर्त (positional variant) भी कहते हैं। विभिन्न स्वरों के संयोग से व्यंजन-स्वनिमों में (उपस्वनों के रूप में) स्वनिक परिवर्तन होने के कारण उसे संयोजी परिवर्त (combinatory variant) भी कहते हैं।

conditional variation **सोपाधिक परिवर्तन**

वह परिवर्तन या विकल्पन जो परिवेश विशेष पर आश्रित होता है। दे० conditional variant.

conjunctive ordering **संयोजक क्रमबंधन**

आंशिक रूप में समरूप दो या दो से अधिक नियमों को ऐसे क्रम में रखना जिससे वे नियम **स्पष्टत:** लागू हो सकें। आंशिक रूप में समरूप नियमों के विषम अंश इस **प्रकार** क्रमबद्ध किए जाते हैं कि अगर एक अंश लागू होता हो तो दूसरे अंश को भी लागू करना संभव हो, बशर्ते कि दूसरे अंश को लागू करने की परिवेशजन्य स्थिति अनुकूल हो।

संयोजक क्रमबंधन को धनुर्बंधनी द्वारा व्यक्त किया जाता है।

तु० disjunctive ordering.

consonant **व्यंजन**

1. स्वनात्मक स्वर :

(क) वह स्वन जो मुखविवर (और आवश्यकता के अनुसार नासिका-विवर) से प्रश्वसित वायु के मार्ग में उच्चारण-अवयवों द्वारा किसी प्रकार की रुकावट उत्पन्न करने से उच्चरित होता है। कुछ भाषाओं में अंतःश्वसित वायु से भी व्यंजन उच्चरित होते हैं, किंतु ऐसे व्यंजनों की संख्या अपेक्षाकृत बहुत कम है (इस परिभाषा की सीमा यह है कि इससे संस्कृत के ल्, र् और लृ, ऋ के व्यंजन-स्वर के बीच का भेद स्पष्ट नहीं हो पाता)।

(ख) (कुछ विद्वानों के अनुसार) वे सभी स्वन-व्यंजन जो अनाक्षरिक होते हैं। (इससे संस्कृत ल्, र् और लृ, ॠ की समस्या का समाधान तो हो जाता है, परंतु अंग्रेज़ी के bottom [bɔt$^{m}_{1}$], button [bʌt$^{n}_{1}$] और little [^{lit}!] के आक्षरिक $^{m}_{1}$ $^{n}_{1}$ $^{l}_{1}$ को व्यंजन की किसी कोटि में रखा जाए या स्वर की कोटि में, इस समस्या का समाधान नहीं होता)।

2. स्वनिमिक स्तर :

वह आक्षरिक अथवा अनाक्षरिक स्वन जो संधि, स्वनिमिक या रूपस्वनिमिक नियमों के अनुस्वार स्वरेतर-वर्ग का सदस्य हो। कुछ विद्वानों ने स्वर और व्यंजन के भेद को स्वनिमिक स्तर पर स्थापित किया है। संस्कृत ऋ, लृ अपने संधि तथा रूपस्वनिमिक नियमों में स्वर के अनुरूप पाए जाते हैं, इसलिए इन आक्षरिक स्वनों को स्वर कहा गया है, जबकि अंग्रेज़ी के आक्षरिक $^{l}_{1}$, $^{m}_{1}$, $^{m}_{1}$ को अन्य व्यंजन स्वनों के अनुरूप सिद्ध होने के कारण उन्हें व्यंजन माना गया है।

3. प्रकार्यात्मक स्तर :

4. अभिलक्षण स्तर :

वह स्वन जिसका अभिलक्षण गुच्छ (—स्वरात्मक) तथा (+व्यंजनात्मक) हो। चॉमस्की तथा हाले स्वनों के द्विविध विभाजन के स्थान पर चतुर्विध विभाजन प्रस्तुत करते हैं: (i) शुद्ध स्वर, (ii) शुद्ध व्यंजन, (iii) तरल, (iv) श्रुति। इस चतुर्विध विभाजन में दो प्रभेदक अभिलक्षणों के समुच्चय को ध्यान में रखा जाता है। जैसे—स्वरात्मक: व्यंजनात्मक। स्वरात्मक तथा व्यंजनात्मक प्रभेद को चित्र में यों दिखाया जाता है :

		स्वरात्मक +	स्वरात्मक —
व्यंजनात्मक	+	तरल	शुद्ध व्यंजन
	—	शुद्ध स्वर	श्रुति

consonantal (non-consonantal) व्यंजनात्मक (अव्यंजनात्मक)

(अ) (ध्वानिक विवरण) समग्र ऊर्जा की निम्नतर (उच्चतर) मात्रा, पहले फार्मेंट की आवृत्ति का निम्न होना (न होना)।

(आ) (उच्चारणात्मक विवरण) वाक्-पथ के मध्य रेखा क्षेत्र (mid sagittal) (मध्यरेखेतर क्षेत्र) में वायुधारा के अवरुद्ध करके उच्चरित स्वन।

[प्, त्, क्] आदि व्यंजन तथा [ल्, र्] तरल स्वन व्यंजनात्मक होते हैं, जबकि [इ, उ, अ] आदि स्वर और [य्, व्] आदि अर्धस्वर अव्यंजनात्मक।

consonantoid व्यंजनाभ

दे० non-vocoid.

consonantization (=consonantalization) व्यंजनीकरण

किसी स्वर या अर्धस्वर का व्यंजन रूप में परिवर्तित होना या उच्चरित किया जाना ।

constriction संकोचन

करण को उच्चारण स्थान के निकट इस तरह लाना कि जब श्वासधारा उनके बीच से निकले तो घर्षण सुनाई पड़े ।

constrictive घर्षी, संकोची

दे० fricative.

context प्रसंग, प्रकरण, संदर्भ

दे० environment.

continuant (non-continuant) प्रवाही (अप्रवाही)

ऐसा उच्चारण जिसमें वाक्-पथ में वायुधारा का मार्ग इस सीमा तक अवरुद्ध नहीं रहता (अवरुद्ध रहता है) कि उक्त मार्ग बंद हो जाए (खुला रहे) । इस स्थिति में उच्चरित सभी स्वर और संघर्षी स्वन प्रवाही होते हैं जबकि स्पर्श, नासिक्य (व्यंजन) और स्पर्शघर्षी स्वन अप्रवाही । दे० frictionless continuant.

continuous spectrum — **संतत स्पैक्ट्रम**

अनंत आवृत्तियों वाला स्पैक्ट्रम जिसका प्रत्येक घटक निकटस्थ अन्य घटकों से भिन्न होता है। ऐसा स्पैक्ट्रम प्रायः असंगीतात्मक ध्वनियों का बनता है।

प्रति से ंड चक्रावृत्तियां

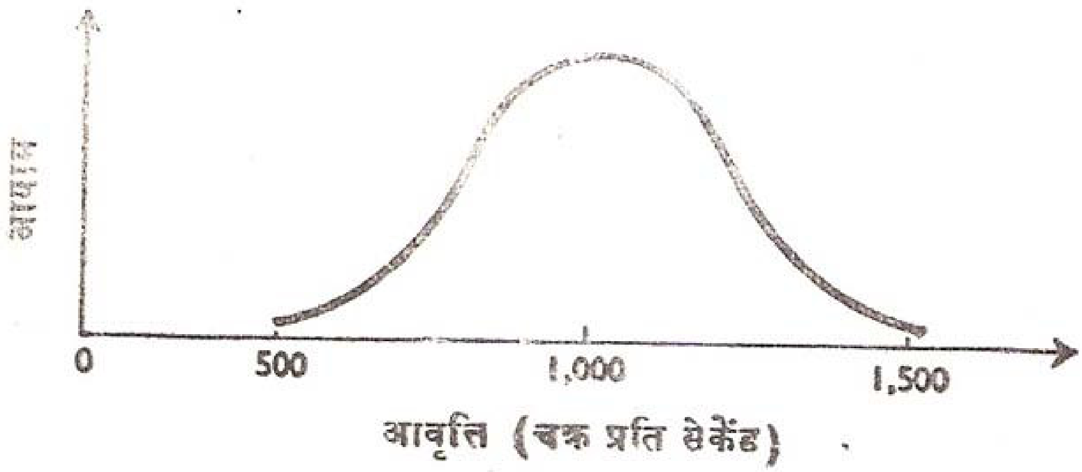

चित्र 6

तु० line spectrum.

contoid
=consonantoid — **व्यंजनाभ**

दे० non-vocoid.

contour
(=intonation contour) — **परिरेखा**

शब्द, पदबंध या वाक्य में स्वराघात में आरोह, अवरोह या समस्थिति आदि को व्यक्त करने वाली रेखा; उक्त स्वराघात परिवर्तनों वाली अभिरचना।

शब्द-स्तर पर इसे **परिरेखा तान** कहते हैं और वाक्य स्तर पर **समतान**।

contour tone — **परिरेखा तान**

तान का वह रूप जिसमें स्वराघात अपेक्षाकृत परिवर्तनशील होता है। जैसे—चीनी, थाई, वियतनामी आदि भाषाओं में। चीनी भाषा की तान-व्यवस्था का उदाहरण इस प्रकार है :

1- lj 1_ IↃ
मा 'मां', मा 'सन', मा 'घोड़ा', मा 'फटकार'

अनुतान	तान	
अंग्रेजी	परिरेखा तान चीनी	समतान योरुबा
Yes		
I agree (कथन)	ma मां	o wa वह आता है
Did you say "yes"? (प्रश्न)	ma सन	o wa उसने देखा
I am listening (जारी)	ma घोड़ा	o wa वह (जीवित) है
Possibly yes (संदिग्ध)	ma फटकार	
Definitely yes (बल)		

चित्र 7

contraction प्रश्लेष, प्रश्लेषण

दे० coalescence.

contrast व्यतिरेक

सर्वसम अथवा सदृश परिवेश वाले दो स्वनों का वैषम्य । इसका प्रयोग प्रायः प्रतियोग अथवा विरोध के पर्याय के रूप में किया जाता है । दे० opposition, identical environment, analogous environment(s).

contrasting distribution (contrastive distribution) व्यतिरेकी वितरण

दो या दो से अधिक सदृश स्वनों या रूपों का ऐसा वितरण जिससे समान परिवेश वाले शब्दों की भिन्नता की प्रतीति हो । जैसे काम : नाम मे/क्/: /न्/ और चरता : चलता में {चर} : {चल} आदि

contrasting stress व्यतिरेकी बलाघात

बलाघात का वह भेद जिससे दो रूपों का अर्थ-भेद स्पष्ट हो जाता है । जैसे अंग्रेजी में /pərmit/ क्रिया और /pərmit/संज्ञा

contrastive pair व्यतिरेकी युग्म

भेदक अभिलक्षणों को प्रकट करने वाला युग्म । इसे अल्पतम युग्म या न्युनतम युग्म भी कहते हैं । दे० minimal pair.

coronal (non-coronal) जिह्वाफलकीय (अजिह्वाफलकीय)

(अ) जिह्वाफलक की तटस्थ स्थिति से ऊपर उठकर (जिह्वाफलक को तटस्थ स्थिति में रखकर) किया गया उच्चारण ।

(आ) उक्त स्थिति में उच्चरित स्वन । उदाहरणार्थ त्, द्, स् जिह्वा-फलकीय हैं जबकि प्, ब्, क् अजिह्वाफलकीय ।

5—353 मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एन० डी०)/88

creaky voice काकलरंजन

(अ) घोषतंत्रियों की स्थिति-विशेष पर आधारित एक स्वनिक अभिलक्षण ।

(आ) स्वनन प्रक्रिया का एक भेद । दे॰ phonation process.

चित्र के लिए दे॰ vocal cords.

crest of sonority मुखरता का शिखर

किसी अक्षर के उच्चारण में स्वनत्व (स्वन के उच्चारण) की चरम मात्रा; स्वन में प्रखरता का शिखर होने से ही वह आक्षरिक कहलाता है। दे॰ syllable.

cuneiform कीलाक्षर, बाणमुख

वह आक्षरिक लेखन जिसमें शंक्वाकार संकेतों का प्रयोग किया जाता है । इसका विकास भावलिपि से ही माना जाता है। इसका आविष्कार सुमेरवासियों ने किया था तथा इसका व्यवहार असीरी, सुमेरी, ईरानी तथा अन्य जातियों द्वारा किया जाता था । उक्त संकेत गीली मिट्टी में अंकित किए जाते थे । दे॰ ideogram.

cycle चक्र, आवर्तन

किसी नियम के अनुसार उत्तरोत्तर होने वाले परिवर्तनों का एसा क्रम जिसके अंत में प्रारंभिक अवस्था पुन: प्रकट हो जाए ।

damped wave अवमंदित तरंग

वह तरंग जिसका आयाम उत्तरोत्तर घटता जाता है । दे॰ damping

damping अवमंदन

किसी आवर्त गति के आयाम में क्रमशः ह्रास होने की क्रिया। इसमें घर्षण, वायु के प्रतिरोध आदि कारणों से गति की ऊर्जा क्रमशः घटती जाती है।

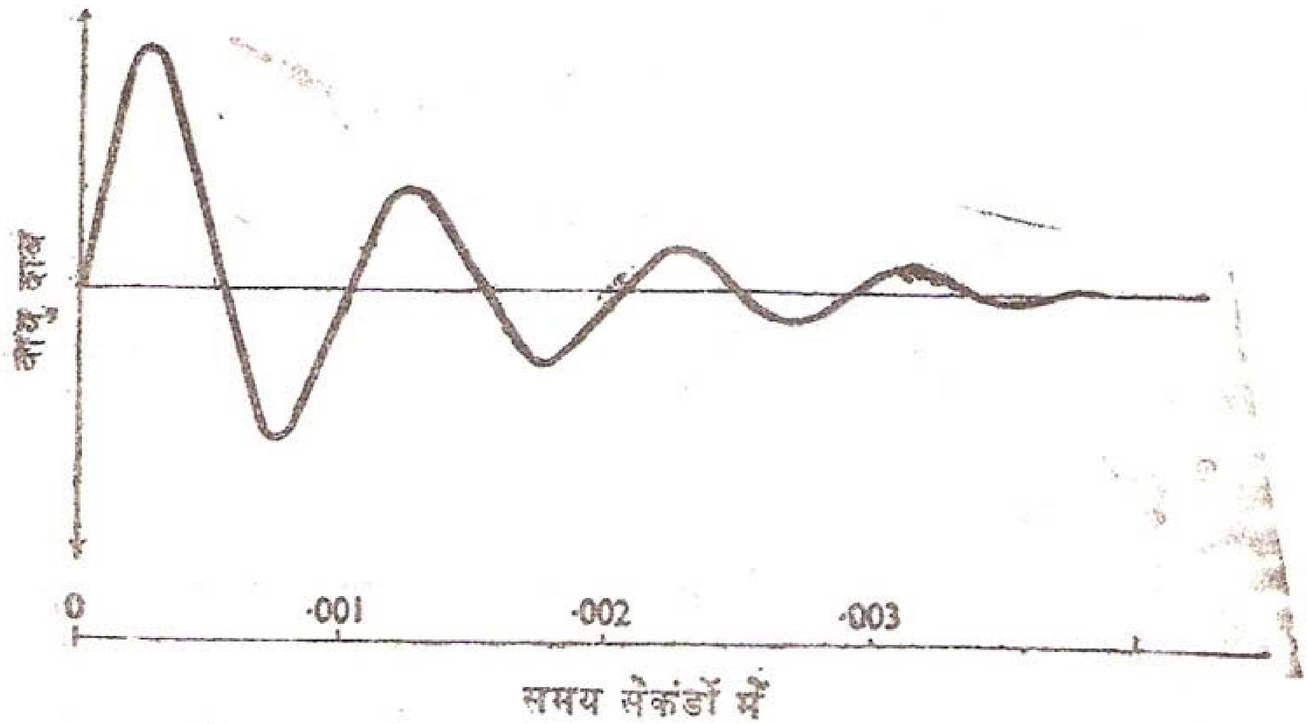

चित्र 7.1

अवमंदित तरंग

dark 'l' पश्च 'ल्', अस्पष्ट 'ल्'

जिह्वा-पश्च के उच्च स्थिति तक उठने से उच्चरित 'ल्'। अंग्रेजी में इस प्रकार का 'ल्' अंत्य स्थिति में, और [j] को छोड़कर अन्य व्यंजनों के पूर्व प्रयुक्त होता है। जैसे— feel [fi :l] field [fi:ld]

dash डैश

(अ) (विराम चिह्न) पड़ी रेखा [—] जिसका प्रयोग वाक्य में आकस्मिक विराम के लिए, उच्चारणगत हिचकिचाहट दर्शाने के लिए, वाक्य में निक्षिप्त शब्द, पदबंध अथवा उपवाक्य को रखने के लिए, अक्षरों, शब्दों का लोप दिखाने के लिए, पंक्ति को विभाजित करने के लिए या कोलन के स्थानापन्न के रूप में किया जाता है।

(आ) (रचनांतरण व्याकरण) पड़ी रेखा [—] वाला वह चिह्न जो नियम लागू होने के स्थान का बोधक है। उदाहरणार्थ क → ख/ग — घ निम्नलिखित का संकेतक है :

संरचनात्मक विवरण (सं० वि०)	ग	क	घ
	1,	2,	3
संरचनात्मक परिवर्तन (सं० परि०)	1,	[ख] 2	3

उपर्युक्त में परिवर्तन स्थान 2 पर हुआ है जिसे ऊपर के नियम में डैश [—] से चिह्नित किया गया है।

deaspiration अल्पप्राणीकरण

किसी महाप्राण व्यंजन का अल्पप्राण हो जाना। जैसे—दूध का बोलचाल का रूप 'दूद'।

decibel डेसिबेल

'बेल '(Bel) का दसवां भाग। दो स्वनों की तीव्रताओं के स्तरों के आपेक्षिक नाप का मात्रक बेल कहलाता है। यह 10 पर आधारित लागरिटमी मात्रक है और यदि दो स्वनों की तीव्रताएं I_1, और I_2 हों तो उनके तीव्रता स्तरों का अंतर $= \log_{10} I_1/I_2$ बेल होता है। यह अंतर 1_2बेल तब होता है जब $\frac{I_1}{I_2} = 10$ हो।

अतः यह मात्रक बहुत बड़ा है और इसका दसवां भाग डेसिबेल ही मात्रक के रूप में अधिक प्रचलित है और उपर्युक्त तीव्रता-स्तरों का अंतर $10 \times \log_{10} I_1/I_2$ डेसिबेल कहलाता है। एक डेसिबेल के द्वारा तीव्रता में 26 प्रतिशत की वृद्धि व्यक्त होती है। यह लगभग वह न्यूनतम तीव्रता-परिवर्तन है जिसका पता कान को लग सकता है।

delayed release विलंबित निर्मोचन

दे० instantaneous release.

deletion लोप

किसी भाषिक इकाई के लुप्त हो जाने की स्थिति। यह लोप स्वन स्तर पर भी हो सकता है और अक्षर स्तर पर भी। जैसे—सिमट>सिम्ट (स्वर लोप); मधु-दुघ (भौंरा) >मदुघ (अक्षरलोप)।

dental stop दंत्य स्पर्श

वह स्पर्श स्वन जिसके उच्चारण में ऊपर के दांत उच्चारण-स्थान का और जिह्वाग्रकरण का काम करता है। जैसे—भारतीय भाषाओं का तवर्ग, फ़्रांसीसी का t, d, आदि।

descriptive phonetics वर्णनात्मक स्वनविज्ञान

स्वनविज्ञान की वह शाखा जिसमें भाषा-विशेष की स्वनिक विशेषताओं का विश्लेषण तथा अध्ययन किया जाता है।

devoiced अघोषीकृत

(वह स्वन) जिसके घोषत्व का लोप हो गया हो; घोषत्व से हीन (स्वन)।

devoicing अघोषीकरण

घोष स्वन का घोषत्वहीन हो जाना। जैसे—फा० खर्ज>हिं० खर्च, सं० गगन> पै० प्रा० ककन, सं० प्रादुः>पा० पातु।

diacritic features विशेषक अभिलक्षण

स्वनिमिक प्रक्रिया को नियंत्रित करने वाले वे अभिलक्षण जो स्वनिम स्तर के न हों (जैसे व्याकरणिक, कोशीय आदि)। हिंदी में संधि के नियमों को समझने के लिए कुछ शब्दों को [+संस्कृत] विशेषक अभिलक्षण से युक्त करना पड़ता है। उदाहरण के लिए नासिक्य व्यंजन के पूर्व आने वाला स्पर्श व्यंजन पंचम वर्ण से परिवर्तित हो जाता है, यथा सत्+मति>सन्मति, वाक्+मय>वाङ्मय परंतु हिंदी के तद्भव शब्दों में यह नियम लागू नहीं होता।

diacritic grapheme **विशेषक लेखिम, विशेषक वर्णिम**

ऐसा लेखिम जिसका (स्थल विशेष में) अपना स्वनिमिक मूल्य प्रभावी नहीं होता, लेकिन फिर भी जो अपने आसन्न लेखिम के स्वनिमिक मूल्य को प्रभावित करता है। उदाहरणार्थ अंग्रेजी के choice शब्द में (e)। यहां (e) का अपना कोई स्वनिमिक महत्त्व नहीं है, लेकिन वह अपने पूर्ववर्ती लेखिम (c) की स्वनिमिक प्रकृति को प्रभावित करते हुए उसके/s/मूल्य को संकेतित करता है।

diacritic (al) marks **विशेषक चिह्न, उपचिह्न**

किसी वर्ण के ऊपर, नीचे या दायें या बायें कही भी लगाए जाने वाले निशान या संकेत-चिह्न जिनसे मूल वर्ण द्वारा अभिव्यक्त स्वनिक मल्य से भिन्न मूल्य प्रकट होता है। उदाहरणार्थ परिवर्धित देवनागरी में "फ" के नीचे बिंदु लगाने से (फ़) दंत्योष्ठ्य संघर्षी उच्चारण प्रकट होता है अथवा ह्रस्व 'ए' और 'ओ' के लिए ॆ, ॊ तथा कश्मीरी के विशिष्ट स्वर 'अ' के लिए ॅ (अॆ) आदि विशेषक चिह्न स्वीकृत हैं।

diaeresis (dieresis) **स्वर विसंधि, प्रगृह्य**

ऐसा चिह्न [¨] जो दो आसन्न स्वरों में से एक पर यह स्पष्ट करने के लिए अंकित किया जाता है कि उक्त स्वर अन्य स्वर के साथ मिलकर संध्यक्षर का निर्माण नहीं कर रहा है। इस चिह्न का प्रयोग अभिश्रुति (उमलाउट) को अभिव्यक्त करने के लिए भी किया जाता है।

तु० synaeresis.

diaphone **विषु स्वन**

किसी भाषा के स्वनिम के वे अनेक उपस्वन जिनका उच्चारण उस भाषा के विभिन्न भाषिक वर्गों द्वारा किया जाता है। उदाहरणार्थ दक्षिणी अंग्रेजी के बोलने वाले विभिन्न लोग get के [e] को जब अनेक प्रकार से विवृत करके बोलते हैं तो उक्त ध्वनि विषु स्वन कहलाती है।

diasyllabic **द्वि-आक्षरिक**

दो अक्षरों से युक्त अथवा दो अक्षरों वाला। जैसे—नदी, पथिक।

diffuse विसृत

दे० compact.

digraph द्‌विवर्ण, द्‌विग्राफ

(अनाक्षरिक लेखनप्रधान भाषाओं में) दो आनुक्रमिक वर्णों का वह समूह जिसका उच्चारण-मूल्य उस स्थिति विशेष में दो स्वनों का योग न होकर एक ही स्वन वाला होता है । जैसे अंग्रेज़ी में shadow का [sh] और bread का [ea]।

diphthong संध्यक्षर, द्‌विस्वरक

दो स्वरों का ऐसा अनुक्रम जो मिलकर एक आक्षरिक शिखर का निर्माण करते हैं और जिसके उच्चारण में जिह्‌वा एक स्वर की स्थिति में आते ही दूसरे स्वर की स्थिति में विसर्पण करती है। उदाहरणार्थ हिंदी के 'भैया' और 'कौवा' में क्रमशः ऐ [अइ] और औ [अउ] ।

diphthongization संध्यक्षरीकरण

किसी एक स्वर का संध्यक्षर के रूप में परिवर्तित हो जाना । उदाहरणार्थ लातीनी tenat का रोमन में trent, trene, में बदलना ।

discontinuant अप्रवाही

दे० abrupt.

disjunction वियोजन

दो या दो से अधिक (स्वनिक अथवा स्वनिमिक) खंडों का ऐसा अनुक्रम जिनके बीच में कोई (स्वनिक अथवा स्वनिमिक) खंड अकेले या युग्म में आ जाए।

disjunctive ordering वियोजक क्रमबंधन

दो या दो से अधिक नियमों की परिवेशजन्य स्थिति की अनुकूलता के कारण उन नियमों में से किसी भी नियम के लागू होने पर उनकी ऐसी क्रमिक व्यवस्था कि वे परस्पर व्यावर्तक हो जाएं ।

उदाहरणार्थ फ्रांसीसी में शब्दों पर बलाघात उनके अंतिम दो अक्षरों में से किसी एक अक्षर पर पड़ता है। यदि शब्दांत में [ə] हो तो बलाघात उस अक्षर के पूर्व अक्षर पर पड़ता है, अन्यथा अंत्य अक्षर पर इसे दो निम्नलिखित नियमों द्वारा व्यक्त करना संभव है :–

(1) स्वर→[बलाघात]/– व्यंजन₀ [ə] #

(2) स्वर→[बलाघात]/– व्यंजन₀ #

यद्यपि दोनों नियम बलाघात निर्धारण से संबद्ध हैं फिर भी पृथक्-पृथक् रूप में व्यक्त होने के कारण प्रक्रिया की समानता को स्पष्ट नहीं कर पाते। वियोजक क्रमबंधन के आधार पर इन दो समरूप नियमों का संलयन निम्नलिखित रीति से किया जा सकता है :—

स्वर → [बलाघात]/– व्यंजन₀ [ə]) # वैकल्पिक अंश को लघु कोष्ठक द्वारा व्यक्त किया जाता है।

दे० parenthesis. तु० conjunctive ordering.

disjuncture अवग्रह, विसंहिता

दो या दो से अधिक (स्वनिक अथवा स्वनिमिक) संश्लिष्ट खंडों के बीच किसी स्वन अथवा स्वनिम के आरोपण द्वारा उसके संश्लेषण का भंग होना।

दे० disjunction तथा open juncture.

dissimilation विषमीकरण, विषमी भवन

वह स्वनिक प्रक्रिया जिसमें कोई स्वन अपने निकटवर्ती स्वन को अंशत: भिन्न बना लेता है। इसके दो भेद हैं—(1) पुर: विषमीकरण। दे० progressive dissimilation, और (2) पश्च विषमीकरण। दे० regressive dissimilation, तु० assimilation.

distinctive feature(s) परिच्छेदक अभिलक्षण, अवच्छेदक अभिलक्षण

स्वनों में सार्थक प्रभेद दिखाने वाला अभिलक्षण। उदाहरणार्थ हिंदी /प्/ और/ब्/का परिच्छेदक अभिलक्षण 'घोषत्व' है, जबकि /प्/ और /फ्/ का 'महाप्राणत्व', और /ब/ और /म्/ का 'नासिक्यत्व'। इसके दो भेद होते हैं—(1) अंतर्निहित अभिलक्षण और (2) स्वनगुणिमिक अभिलक्षण। दे० inherent features, prosodic features.

distributed (non-distributed) **वितरित (अवितरित)**

वायुधारा के प्रवाह की दिशा के साथ-साथ अधिक (कम) दूरी तक व्याप्त संकोचन के माध्यम से ध्वनि का उत्पन्न होना ।

यह अभिलक्षण घर्षी स्वनों में भेद करने के काम आता है।[ɸ, 8, ʃ, x] स्वन वितरित हैं, जबकि [f, θ, s̤] वितरित ।

distribution **वितरण**

परिवेश-विशेष के अनुसार किसी भाषिक इकाई के संभावित प्रयोगों का विन्यास ।

disyllabic word **द्‌व्यक्षरी शब्द, द्‌वि-अक्षरी शब्द**

दो अक्षरों वाला शब्द । जैसे (हिंदी में) माथा, गई, आदि ।

dorsal **पश्चजिह्‌वीय**

(अ) पश्चजिह्‌वा से उच्चरित व्यंजन ।

(आ) कुछ विद्‌वानों के अनुसार कंठ्य या कोमल तालव्य स्वनों के लिए प्रयुक्त पर्याय । जैसे —[क्], [ग्] ।

dorsum **पश्चजिह्‌वा**

जिह्‌वा का पिछला भाग । यह निष्क्रियता की अवस्था में कोमल तालु की ओर अभिमुख होता है । दे० dorsal.

double consonant **द्‌विव्यंजन**

दे० long consonant.

double stop **द्‌विस्थानीय स्पर्श**

वह स्वन जिसके उच्चारण में वायुधारा पूरी तरह अवरुद्ध हो जाती है और इस स्थिति में कम-से-कम दो पूर्ण अवरोध होते हैं। उदाहरणार्थ [śakti] 'शक्ति' के उच्चारण में पहले कोमल तालव्य अवरोध होगा, और फिर दंत्य ओष्ठ्य अवरोध के बाद वायुधारा का निर्मोचन होगा । दे० long consonant.

duration **(काल) मात्रा**

काल के संदर्भ में किसी भाषिक इकाई की वस्तुनिष्ठ (माप्य) मात्रा।

इसके दो भेद होते हैं—(1) निरपेक्ष (काल) मात्रा (2) सापेक्ष (काल) मात्रा। दे० absolute duration तथा relative duration.

मात्रा और दीर्घता की संकल्पना में भेद होता है। दे० length.

dyad **द्विक, युग्मक**

केवल दो (स्वनिक अथवा स्वनिमिक) खंडों का अनुक्रम।

eclipsis, ecthlipsis **व्यंजन लोप, हल् लोप**

बोलने या लिखने में किसी व्यंजन का लुप्त हो जाना, जैसे फा० 'खरीददार' >हि० खरीदार।

egressive air stream (=compressive air stream) **बहिर्गामी वायुप्रवाह, संपीडित वायुधारा**

प्रारंभक के वायुविवर के केन्द्र की ओर अग्रसर होने के कारण विवर में हुए संकोच के फलस्वरूप बाहर निकलती हुई वायुधारा।

ejective consonant **हिक्कित व्यंजन**

श्वासद्वारीय वायुप्रवाह तंत्र से उत्पन्न कोई स्पर्श। यह स्वन अनिवार्यतः अघोष होता है। इस प्रकार के व्यंजन अमरीकी-इंडियन, काकेशी और अफ्रीकी (हाउस) भाषाओं में मिलते हैं। दे० glottalic air stream mechanism.

ellipses (=blank marks) — **लोप चिह्न, अध्याहार चिह्न**

अवाच्य या गोप्य शब्दों के स्थान पर या किसी कथन में प्रयुक्त चिह्न [.................... अथवा XXXXXX] । जैसे :—(1) राम ने अपने मित्र को ....कहकर गाली दी (2) हिमगिरि के XXXXXXX जलप्रवाह ।

ellision — **लोप**

दे० segment deletion.

environment — **परिवेश**

किसी स्वन का अपने निकटवर्ती स्वनों के साथ पूर्वापर संबंध; किसी बड़ी स्वनिमिक (phonological) या व्याकरणिक इकाई के भीतर किसी स्वन की स्थिति ।

परिवेश में यह बताना आवश्यक होता है कि विचारणीय स्वन या रूप किन स्थितियों (आद्य, मध्य, अंत्य, पूर्व और पर आदि) में प्रयुक्त होता है ।

epenthesis — **अपिनिहिति**

(अ) किसी शब्द के दो व्यंजनों के बीच, अर्थात् मध्य स्थिति में किसी ह्रस्व स्वर का आगम । जैसे, बर्फ > बरफ ।

(आ) आगम का एक रूप; मध्यस्वरागम । दे० segment addition.

epiglottis — **उपजिह्वा**

एक पतली लचकदार उपास्थि जो जिह्वा की पिछली ओर निकली हुई होती है और श्वासद्वार के बिल्कुल सामने स्थित है । यह खाने-पीने के समय दर्वीकल्प उपास्थि के साथ मिलकर श्वासद्वार को बंद कर देती है ताकि ये वस्तुएं श्वास-नली में न जा कर भोजन-नली में ही जाएं ।

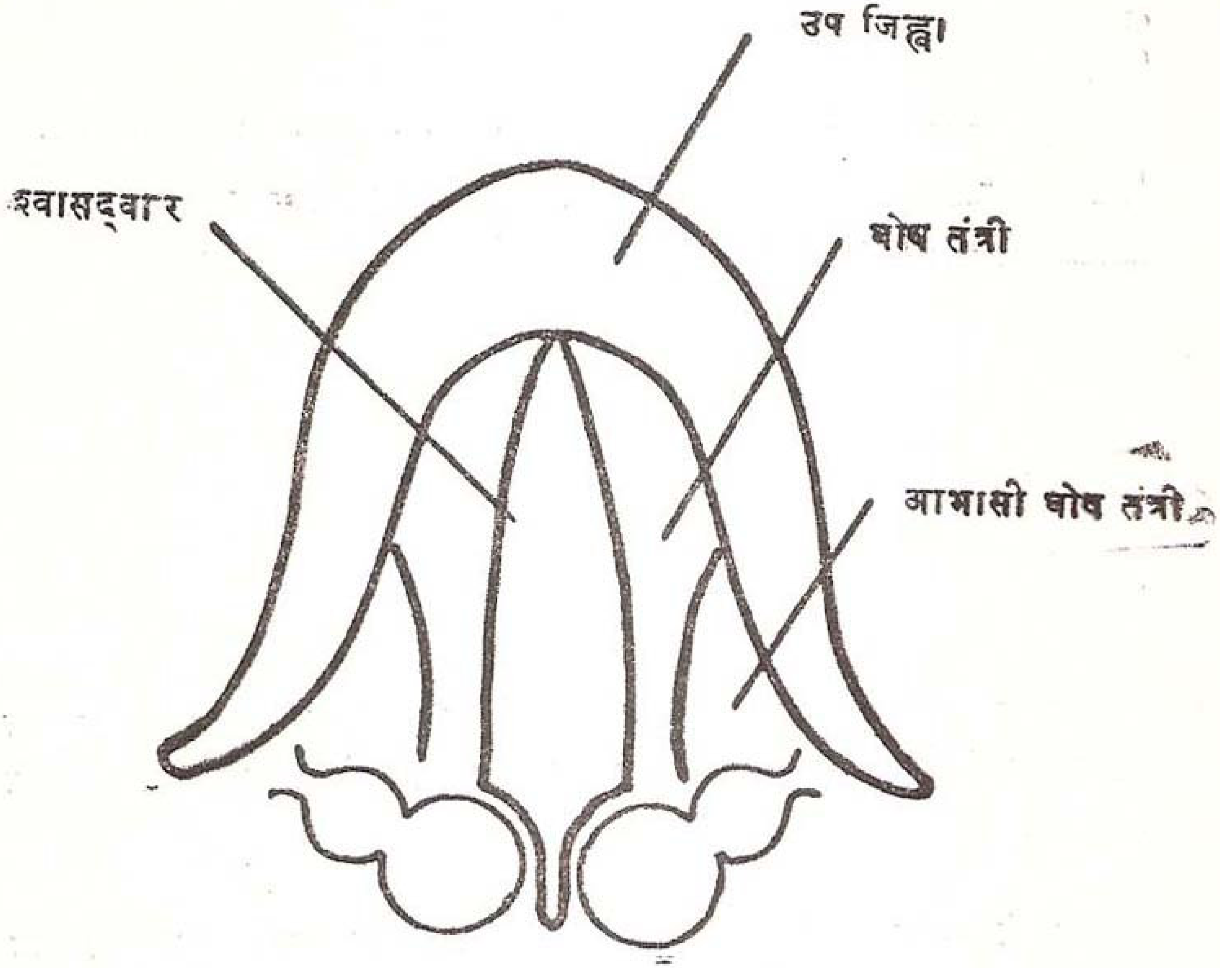

चित्र 7.2

epithesis अंतनिहिति

(व्युत्पत्तिमूलक औचित्य के बिना) मुख-सुख, उच्चारण-सुकरता अथवा सुश्रव्यता के कारण किसी स्वन, वर्ण अथवा अक्षर का किसी शब्द के अंत में योग। जैसे—सं० सरित् > हिं० सरिता, फा० दवा > हिं० दवाई आदि।

equality mark तुल्यता चिह्न

एक विराम चिह्न [=] जिसका प्रयोग किसी शब्द, पदबंध या व्याकरण की किसी इकाई के पर्याय के लिए प्रयुक्त किया जाता है। जैसे—मेघ=बादल, राम ने रावन को मारा=रावण राम द्वारा मारा गया।

esophageal cavity ग्रसनी विवर

दे० cavity.

euphony सुश्रव्यता, सुस्वन

(अ) स्वनों का इस रूप में विन्यास कि कर्ण-मधुर प्रभाव उत्पन्न हो ।

(आ) मुख-सुख, प्रयत्नलाघव अथवा क्षिप्रोच्चारण के कारण अनुकूल स्वन परिवर्तन या स्वन-विन्यास ।

exclamation mark विस्मयादिबोधक चिह्न

बिंदुयुक्त पूर्णविराम की तरह का वह चिह्न [!] जो विस्मय, शोक, करुणा, हर्ष आदि के सूचक शब्द, पदबंध अथवा वाक्य के अंत में आता है ।

experimental phonetics प्रायोगिक स्वनविज्ञान

दे० instrumental phonetics.

explosion स्फोटन

स्पर्श-ध्वनियों के उच्चारण के समय अवरुध् वायुधारा का निर्मोचन । दे० air stream process.

external sandhi बाह्य-संधि

दो पदों के अत्यंत सन्निकर्ष से उत्पन्न स्वन परिवर्तन की प्रक्रिया । जैसे—रामः गच्छति > रामो/गच्छति ।

falling diphthong अवरोही संध्यक्षर

वह संध्यक्षर जिसके दो स्वरों में से पहला स्वर दूसरे की अपेक्षा अधिक बलाघात-युक्त होता है ; क्षीयमाण अथवा ह्रासोन्मुख संध्यक्षर । जैसे अंग्रेजी में ie (make) ou (post), ai (night) आदि । तु० rising diphthong.

falling pitch अनुदात्त, अवरोही स्वराघात

वह स्वराघात जो प्रारंभ की तुलना में अक्षरांत में निम्नस्तरीय अर्थात् ह्रासमान हो । अनुतान के स्तर पर इसे अवरोही अंत्य परिरेखा कहते हैं । इसे [/] से चिह्नित करते हैं । दे० terminal contour, तु० rising pitch.

false palate कृत्रिम तालु

दे० artificial palate.

feature changing rules **अभिलक्षण परिवर्तक नियम**

प्रजनक स्वन प्रक्रिया के वे नियम जो किसी स्वन के एक या एक से अधिक अभिलक्षणों को (—) या (+) मूल्य में परिवर्तित करते हैं। इनका फार्मेट इस प्रकार है : क→ख/य—र। इनमें 'क' और 'ख' प्रभेदक अभिलक्षणों के स्तंभ (अभिलक्षण-गुच्छ) को अभिव्यक्त करते हैं और → चिह्न यह व्यक्त करता है कि 'क', 'ख' के रूप में प्रतिफलित हुआ है। इस तरह के नियमों में 'क' के कुछ अभिलक्षणों के मूल्य बदल जाते हैं अथवा इसके सहारे पूरी इकाई का लोप हो सकता है।

feature(s) **अभिलक्षण**

भाषिक खंड अथवा इकाई का गुणधर्म। इन गुणों को ऐसे युग्म या गुच्छ के रूप में देखा जा सकता है जिन्हें और अधिक खंडित या विभाजित नहीं किया जा सकता।

टिप्पणी : (स्वनविज्ञान) में स्वनिक अभिलक्षणों के दो प्रकार्य होते हैं— (1) स्वनिक (2) वर्गीकारक। अपने वर्गीकारक प्रकार्य में अभिलक्षण द्विचर होते हैं और स्वनिक प्रकार्य में इनके लिए शरीरक्रियात्मक व्याख्या की अपेक्षा होती है। स्वनिक प्रकार्य के रूप में इनका संबंध वाग्व्यवहार के उन पक्षों से है जिनका स्वतंत्र रूप में नियंत्रण हो सकता है। याकोब्सन और हॉले द्वारा प्रस्तावित अभिलक्षण इस प्रकार हैं—**स्वरात्मक-अस्वरात्मक, व्यंजनात्मक-अव्यंजनात्मक, नासिक्य-निरनुनासिक्य, संहत-विसृत, स्फोटी-प्रवाही रुक्ष-अरुक्ष (मृदु), निरुद्ध-अनिरुद्ध, घोष-अघोष, दृढ़-शिथिल (अदृढ़), अनुदात्त-उदात्त, सपाट-असपाट, तीक्ष्ण-अतीक्ष्ण।**

चॉमस्की और हॉले द्वारा प्रस्तावित अभिलक्षण इस प्रकार हैं—**पूर्ववर्ती-अपूर्ववर्ती, जिह्वाफलकीय-अजिह्वाफलकीय, वितरित-अवितरित, पश्च-अपश्च, उच्च-अनुच्च, निम्न-अनिम्न, वर्तुलित-अवर्तुलित, दृढ़-अदृढ़, नासिक्य-अनासिक्य, पार्श्विक-अपार्श्विक, रुक्ष-अरुक्ष, तात्कालिक निर्मोचन-विलंबित निर्मोचन, घोष-अघोष, व्यंजनात्मक-अव्यंजनात्मक, स्वरात्मक-अस्वरात्मक, मुखरित-अमुखरित।**

filter फिल्टर

कोई भी ऐसी युक्ति या साधन जिससे किसी संमिश्र स्वन की कुछ आवृत्तियों को प्रबल (और साथ ही कुछ को क्षीण) किया जा सके।

काकल, जिह्वा, ओठों, कोमल तालु आदि को क्रियाशील करके अनुनाद कोष्ठ के आकार और आयतन को इस प्रकार परिवर्तित किया जाता है कि काकल से उत्पन्न संमिश्र स्वन की कुछ आवत्तियों में प्रबलता आ जाए और कुछ में क्षीणता। ध्वनियों के तरंगीय अध्ययन के संदर्भ में यह अनुनाद-कोष्ठ ही फिल्टर का काम करता है।

fixed accent,
fixed stress
(=bound accent) नियत बलाघात

शब्द के एक निश्चित अक्षर पर पड़नेवाला बलाघात जो रूपात्मक परिवर्तनों या वाक्यविन्यासात्मक प्रकार्यों से अप्रभावित अथवा अपरिवर्तित रहता है। उदाहरणार्थ फ्रांसीसी भाषा में बलाघात सदा अंत्याक्षर पर होता है, जबकि पोलिश में उपांत्य अक्षर पर तथा फिनिश और चेक में पहले अक्षर पर।

flap उत्क्षेप

उत्क्षिप्त व्यंजन के उच्चारण की प्रक्रिया। दे० flapped.

flapped उत्क्षिप्त

वह व्यंजन जिसके उच्चारण में करण (जिह्वाग्र) पीछे खिंचकर उच्चारण-स्थान (वर्त्स या कठोर तालु) की ओर मुड़ता है और अंततः झटके से अपनी सामान्य स्थिति में आ जाता है। जैसे—हिंदी ड़, ढ़।

flat (non-flat) सपाट (असपाट)

(ध्वनिक विवरण) असपाट स्वनिमों की तुलना में सपाट स्वनिमों के ऊपरी आवृत्ति घटकों का नीचे खिसक आना अथवा उनकी ऊर्जा में अपेक्षाकृत कमी हो जाना। (उच्चारणात्मक विवरण) संकुचित छिद्र (व्यापक छिद्र) वाले स्वनिम। संकुचित छिद्र वाले स्वनिमों की तुलना में व्यापक छिद्र वाले स्वनिम मुख अनुनाद के पश्च या अग्र रंध्र के संकुचित होने के कारण उत्पन्न होते हैं और इसमें सहवर्ती कोमलतालव्यरंजन की प्रक्रिया भी जुड़ी होती है जो मुख अनुनादक का विस्तार करती है।

formant **फार्मेंट, आवृत्ति बैंड**

(अ) वाक्-पथ के अनुनाद ।

(आ) स्पैक्ट्रम का वह क्षेत्र जिसमें आवृत्ति-घटक सापेक्ष रूप में बड़े होते हैं ।

ध्वनि के फार्मेंट वाक्-पथ के आकार पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर होते हैं और ध्वनि के अभिलाक्षणिक गुण के लिए मुख्यतया उत्तरदायी होते हैं ।

स्पेक्ट्रमलेखी के संदर्भ में फार्मेंटों को एफ०, एफ० 1, एफ० 2 आदि क्षेत्रों से चिह्नित किया जाता है जिसमें निम्न आवृत्ति से उच्च आवृत्ति की ओर जाने पर फार्मेंट की क्रमिक संख्या बढ़ती जाती है ।

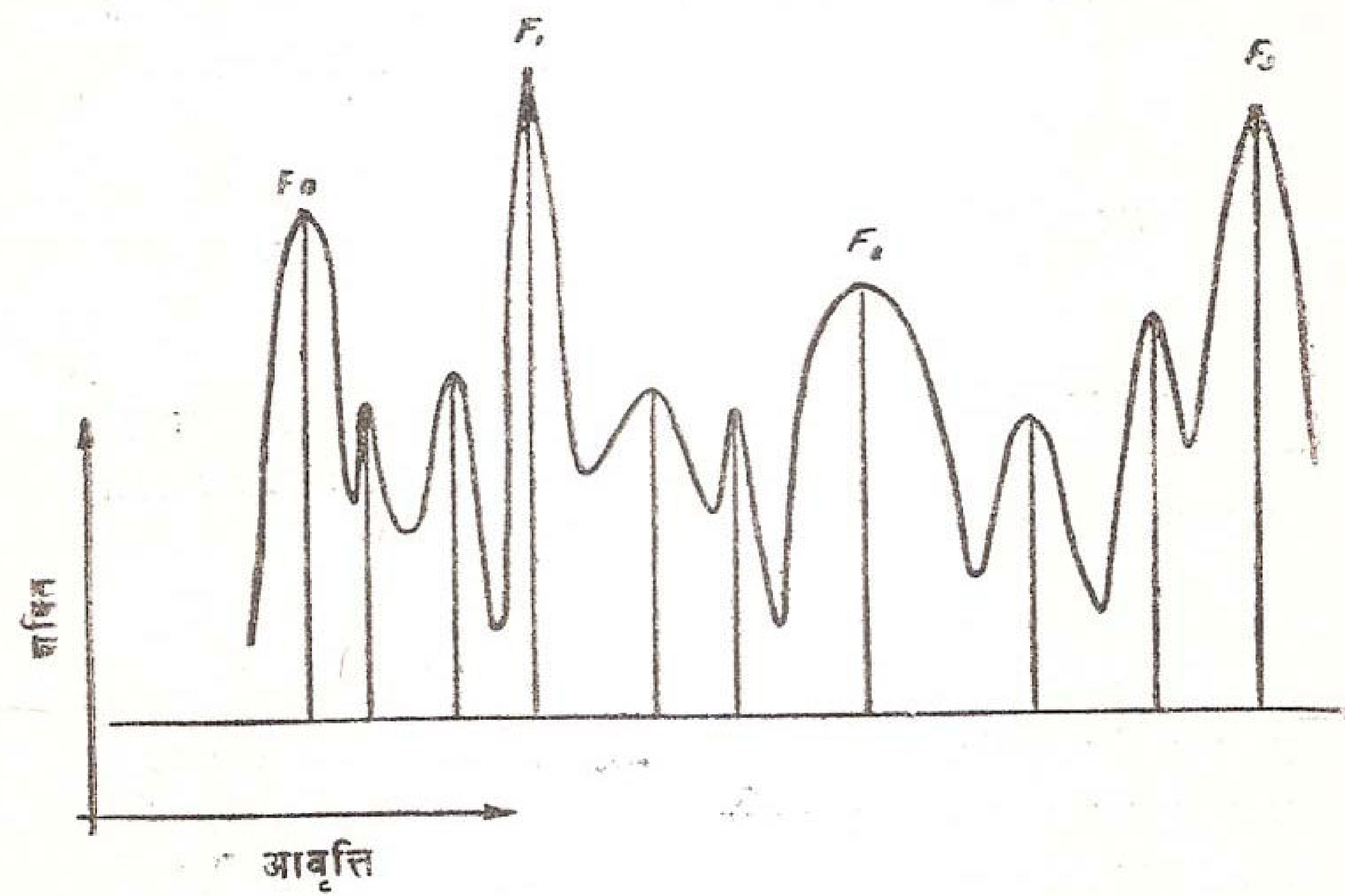

फार्मेंट

चित्र 8

आवृत्ति

अंग्रेजी के स्वरों के स्पेक्ट्रमलेख के संदर्भ में पहले और दूसरे फार्मेंट के आवृत्ति-मूल्य को नीचे के चार्ट द्वारा देखा जा सकता है :

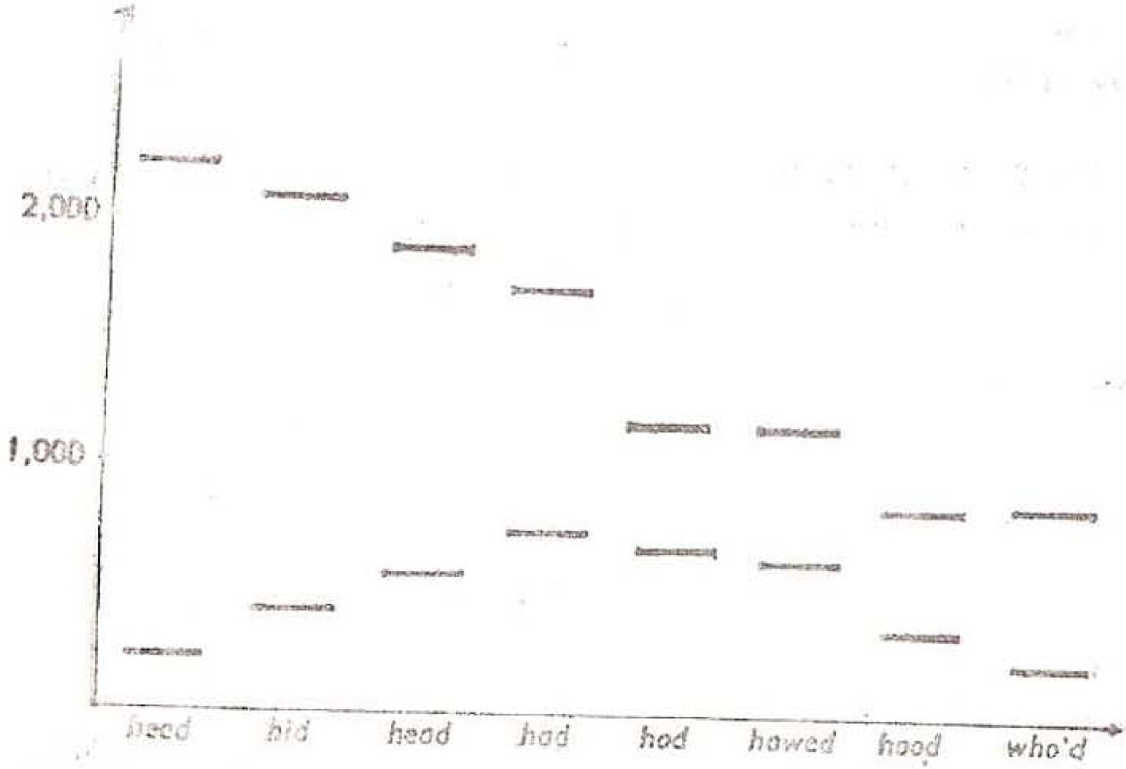

अंग्रेजी भाषा के कुछ स्वरों के प्रथम और द्वितीय फार्मेंटों की आवृत्तियां का स्पेक्ट्रोग्राम

चित्र 9

fortis (tense) consonant दृढ़ व्यंजन

वागवयवों की मांस पेशियों की अपेक्षाकृत तनावयुक्त स्थिति से उच्चरित व्यंजन स्वन ।

free accent अनियत बलाघात

दे० free stress.

6—353 मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एन०डी०)/88

free distribution **मुक्त वितरण, स्वतंत्र वितरण**

स्वनिक दृष्टि से भिन्न दो स्वनों का ऐसा वितरण जिनका परिवेश एक होने पर भी वे व्यतिरेकी (अर्थभेदक) नहीं होते। उदाहरणार्थ, जापानी में (ल्) और (र्)।

free stress **मुक्त बलाघात, स्वतंत्र बलाघात**
(=free accent)

वह बलाघात जो विभक्ति-रूप या वाक्यात्मक प्रकार्य के अनुसार किसी भी अक्षर पर हो सकता है। तु० bound stress.

free variation **मुक्त परिवर्तन,**
स्वतंत्र परिवर्तन

दे० free distribution.

frequency आवृत्ति

1. (सामान्य) किसी भी स्वन, शब्द या रूप आदि का एक से अधिक बार प्रयुक्त होना।

2. (भौतिक स्वनविज्ञान) (अ) आवर्त गति में एक सेकंड में पूरे होने वाले पूर्ण आवर्तनों, दोलनों या चक्रों की संख्या। इसका मान आवर्त काल के व्युत्क्रम के बराबर होता है अर्थात्

$$\text{आवृत्ति} = \frac{1}{\text{आवर्त काल}}$$

(आ) किसी ध्वनि स्रोत से एक सेकंड में उत्पन्न होने वाली अथवा किसी बिंदु पर एक सेकंड में पहुंचने वाली ध्वनि-तरंगों की अर्थात् संघननों या विरलनों की संख्या।

टिप्पणी : किसी ध्वनि-तरंग के आवृत्तिभेद का संबंध उस ध्वनि के स्वराघात भेद के साथ रहता है।

frequency component — **आवत्ति घटक**

संमिश्र तरंग में समाविष्ट ज्या तरंगों में से कोई एक तरंग ।

fricative
(=spirant) — **घर्षी, संघर्षी**

वह व्यंजन जिसके उच्चारण में वायु-मार्ग संकुचित हो जाता है और वायु घर्षण करके निकलती है । जैसे स्, ज्, फ् । दे० stricture.

frictionless continuant — **घर्षणरहित प्रवाही**

वे प्रवाही स्वन जिनमें स्थानीय घर्षण न हो । जैसे य्, व् ।

front of the tongue — **उपाग्र, जिह्वोपाग्र**

जिह्वा-नोक और जिह्वा-मध्य के बीच का वह भाग जो वर्त्स के सम्मुख होता है । तालव्य और दंत्य स्वनों का उच्चारण इसी करण से होता है ।

front vowel — **अग्र स्वर**

वह स्वर जिसके उच्चारण में जिह्वा आगे की ओर संघनित होकर कठोर तालु की ओर उठती है । जैसे हिंदी के 'ई', 'ए' आदि ।

full stop
(=period) — **पूर्ण विराम**

एक विराम-चिह्न जिसका प्रयोग किसी वाक्य के अंत में किया जाता है । रोमन में इसका रूप (.) है और देवनागरी में (।) ।

टिप्पणी—हिंदी की कुछ पत्र-पत्रिकाओं में भी रोमन रूप (.) का प्रयोग चल रहा है ।

fundamental frequency — **मूल आवृत्ति**

संमिश्र तरंग की पुनरावृत्ति की बारंबारता । यदि किसी पुनरावर्ती तरंग का विश्लेषण उसकी घटक-आवृत्तियों के आधार पर किया जाए तो मूल आवृत्ति घटक-आवृत्तियों का महत्तम सार्वहर (highest common denominator) होगी ।

general phonetics — **सामान्य स्वनविज्ञान**

मनुष्य उच्चारण तंत्र द्वारा स्वनों के उत्पादन की प्रक्रिया तथा ऐसे इस प्रकार के उच्चरित स्वनों का विश्लेषण तथा अध्ययन ।

generative phonology — **प्रजनक स्वनप्रक्रिया**

रचनांतरण व्याकरण का स्वन संबंधी घटक जिसका संबंध स्वनिम व्यवस्था के अध्ययन-विश्लेषण से है । इसके प्रवर्तक नोम चॉमस्की हैं । दे० phoneme

glide — **श्रुति, विसर्प**

(अ) एक स्वन के उच्चारण के तत्काल बाद दूसरे स्वन का उच्चारण करने के लिए जब वागवयव नई स्थिति में आते हैं तो कभी-कभी वायु के निकलते रहने के कारण बीच में एक असार्थक स्वन सुनाई पड़ता है, उसे श्रुति कहते हैं । उदाहरणार्थ 'गये' में 'यकार' इसी प्रकार का स्वन है ।

(आ) कुछ विद्वान अनाक्षरिक स्वरक (अर्धस्वर) को इसी कोटि में रखते हैं । consonant : लिभअक्षण स्तर

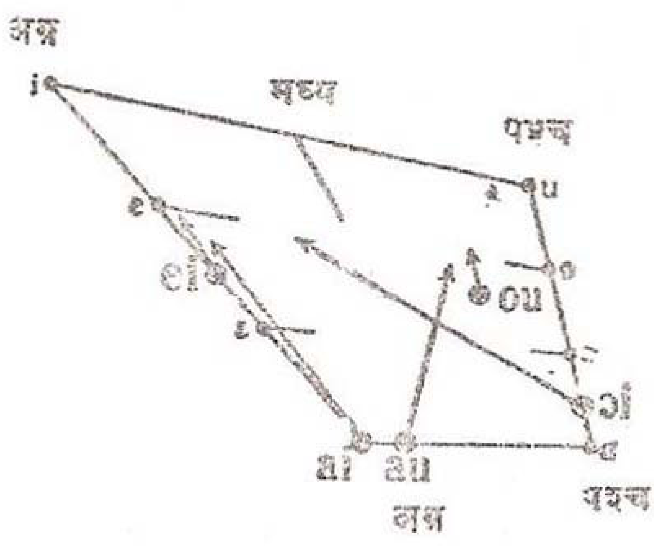

चित्र 10

glottalization श्वासद्वारीय रंजन

1. सह-उच्चारण का एक भेद । दे० co-articulation.

2. (अ) किसी स्वन के प्राथमिक उच्चारण के साथ-साथ फेफड़ों से आती हुई वायुधारा को घोषतंत्रियों में रोक लेना ।

(आ) किसी स्वन के उच्चारण पर श्वासद्वारीय स्पर्श को आरोपित करना ।

इसे श्वासद्वारीय स्पर्श के चिह्न द्वारा व्यंजित किया जाता है । जैसे–[tʔ]

glottal stop (=catch) श्वासद्वारीय स्पर्श, खबिलीय स्पर्श

श्वासद्वार को बंद करके स्फोटक प्रभाव द्वारा वायु को एकदम बाहर निकालने से उच्चरित होने वाला स्वन । यह कई पूर्वी तथा अफ्रीकी भाषाओं में पूर्ण स्वनिम है और इसका अंतर्राष्ट्रीय स्वनिक चिह्न [ʔ] है । चित्र के लिए देखिए phonation process.

glottalic airstream mechanism श्वासद्वारीय वायुप्रवाह तंत्र

वायुप्रवाह का वह तंत्र जिसमें बंद स्वरयंत्र के ऊपर की ओर उठने के फल-स्वरूप ग्रसनी में वायु संपीडित हो जाती है और प्रवाह की दिशा बहिर्मुखी होती है अथवा प्रकंपित स्वरयंत्र नीचे की ओर खिंचता है तथा प्रवाह की दिशा अंतर्मुखी होती है । बहिर्मुखी प्रवाह वाले व्यंजन हिक्कित और अंतर्मुखी प्रवाह वाले व्यंजन अंतःस्फोटी कहलाते हैं ।

इस प्रक्रिया में स्वरयंत्र प्रारंभक होता है और वायुदिशा, यथास्थिति, अंतर्मुखी और बहिर्मुखी होती है ।

glottis श्वासद्वार, खबिल

घोषतंत्रियों के बीच का अंतराल । दे० phonation process.

grapheme **लेखिम, वर्णिम**

(अ) वर्णमाला का कोई वर्ण-विशेष ।

(आ) स्वन या संयुक्त स्वन का वह लिखित रूप जो किसी स्वनिम को व्यक्त करता है ।

graphemics (=graphonomy) **लेखिमविज्ञान**

लेखन-व्यवस्था और भाषिक व्यवस्था के संबंधों का अध्ययन करने वाला विज्ञान ।

graphetics **लेखविज्ञान**

आकार-प्रकार की दृष्टि से वर्णों या लिपिचिह्नों का अध्ययन ।

लेखविज्ञान का मूलाधार लिपिचिह्नों का आकार-प्रकार है न कि उनका प्रयोग । प्रयोग की दृष्टि से उनका अध्ययन लेखिमविज्ञान के अंतर्गत आता है ।

graphology **वर्णिम प्रक्रिया, लेखिम प्रक्रिया**

वह लिपि-व्यवस्था का विज्ञान जिसके अंतर्गत शब्दों में प्रयुक्त होने वाले लेखिम और उनका विन्यास समाविष्ट है ।

लेखविज्ञान और वर्णिमप्रक्रिया के अध्ययन क्षेत्र का अंतर बहुत कुछ स्वन-विज्ञान और स्वनप्रक्रिया के समांतर है ।

graphonomy **लेखिमविज्ञान**

दे० graphemics.

grave (acute) अनुदात्त (उदात्त)

(अ) (ध्वानिक विवरण) स्पेक्ट्रम के निम्न (उच्च) भाग में ऊर्जा का संकेंद्रण ।

(आ) (उच्चारणात्मक विवरण) परिधीय (माध्यमिक) अनुदात्त स्वनों का उच्चारण स्थान वाक्पथ पर परिधि पर होता है । अतः अनुदात्त स्वन परिधीय कहलाते हैं जबकि उदात्त स्वन वाक्पथ के मध्य भाग में उच्चरित होने के कारण माध्यमिक कहलाते हैं । अपने संवादी माध्यमिक स्वनिमों (तालव्य, दंत्य) की तुलना में परिधीय स्वनिमों (मृदु-तालव्य, ओष्ठ्य) का अनुनादक अपेक्षाकृत विस्तृत और अल्पविखंडित होता है ।

grave accent (non-acute) अनुदात्त

सुर का अवरोह; अवरोही सुर; उदात्त आघात का अभाव । पाणिनि के अनुसार नीचैरनुदात्तः अर्थात् अनुदात्त निम्न या नीचा होता है । यदि अनुदात्त का अर्थ सुरविहीन लें तो यह यूनानी आघात ग्रेव का समानार्थी नहीं है । यदि इसका अर्थ उदात्त से थोड़ा निम्न लें तो यह ग्रेव का समानार्थी हो जाता है ।

इस आघात का चिह्न [/] है । वैदिक पाठ में इसे अक्षर के नीचे पड़ी पाई से द्योतित किया जाता है । यदि एकसातत्य में कई अनुदात्त अक्षर आएं तो उन्हें प्रचय कहा जाता है । दे० acute accent तथा circumflex.

grooved articulator नलक करण

जिह्वा की वह स्थिति जिसमें मध्य भाग की अपेक्षा उसके पार्श्व भाग ऊपर उठे होते हैं । अंग्रेजी के /s, z/ के उच्चारण में जिह्वा की यही स्थिति होती है ।

grooved fricative (spirant) नलक घर्षी

नलक करण से उत्पन्न घर्षी स्वन । दे० grooved articulator.

guru (heavy) **गुरु**

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) अक्षर परिमाण (measure) का एक भेद। अक्षर की वह मात्रा जिसमें स्वर या तो दीर्घ होता है या व्यंजनांत। इसे ऽ चिह्न द्वारा व्यक्त किया जाता है।

half close **अर्ध-संवृत**

स्वर-उच्चता का एक स्पर्श-बिंदु। दे० vowel height.

half close vowel **अर्ध-संवृत स्वर**

वह स्वर जिसके उच्चारण में जिह्वा स्वर-उच्चता की अर्ध-संवृत स्थिति में हो, जैसे—e, o। दे० vowel height.

half open **अर्ध-विवृत**

स्वर-उच्चता का एक संदर्भ-बिंदु। दे० vowel height.

half open vowel **अर्ध विवृत स्वर**

वह स्वर जिसके उच्चारण में जिह्वा स्वर-उच्चता के अर्ध-विवृत स्थिति में हो। जैसे—ɛ, ɔ दे० vowel height.

hal sign **हल् चिह्न**

किसी व्यंजन को स्वररहित रूप में प्रकट करने के लिए उसके नीचे लगाई जाने वाली तिरछी रेखा [्]. जैसे—पश्चात्, विद्या।

haplography **समाक्षर-लोप (लिपिगत)**

लिखने की प्रक्रिया में लिखे जाने वाले दो वर्णों या अक्षरों में से एक का न लिखा जाना। जैसे—ख़रीददार > ख़रीदार।

haplology **समाक्षरलोप (उच्चारणगत)**

वाग्धारा में बोले जाने वाले दो स्वनों या अक्षरों में से एक का न बोला जाना। जैसे—मधुदुग्ध>मदुग्ध।

hard palate कठोर तालु

मुख विवर में तालु का सबसे अगला भाग जो वर्त्स और कोमल तालु के बीच है। संस्कृत मूर्धन्य स्वनों का उच्चारण यहीं से होता है।

harmonic संनादी

किसी तरंग रूप की मूल आवृत्ति की पूर्ण संख्या का गुणक। यदि किसी संमिश्र तरंग रूप की मूल आवृन्ति 200 (चक्र) साइकिल प्रति सेकंड है तो 400 (चक्र) साइकिल प्रति सेकंड और 600 (चक्र) साइकिल प्रति सेकंड आवृत्तियों के घटक प्रायः द्वितीय और तृतीय सनांदी कहलाते हैं।

heterorganic articulation असवर्ण उच्चारण, भिन्नस्थानीय उच्चारण

स्वनों के उच्चारण का वह रूप जिसमें या दो दो करणों अथवा दो उच्चारण-स्थानों का योग होता है। उदाहरणार्थ 'स्वल्प' के उच्चारण में [स्]—[व्] और [ल्]—[प्] तु० homorganic articulation.

hiatus विसंधि, प्रग्रह

दो स्वनों (प्रायः स्वरों) के बीच अत्यल्प विराम, जो उच्चारण में सामान्य विराम से मात्रा में कम होता है।

hiatus vowel प्रगृह्य स्वर

प्रग्रह की अवस्था में पूर्ववर्ती स्वर। दे० hiatus.

hieroglyph चित्रलेख

चित्रलिपि में लिखा तथा खुदा हुआ कोई शब्द या अक्षर।

दे० hieroglyphic writing.

hieroglyphic writing चित्रलिपि

लेखन की वह पद्धति जिसमें लिपि-संकेत चित्रात्मक होते हैं। प्राचीन मिस्रवासी इसी प्रकार की लिपि का प्रयोग करते थे।

high (non-high) उच्च (अनुच्च)

(अ) स्वर-उच्चता का एक संदर्भ बिंदु । दे० vowel height.

(आ) जिह्वा का तटस्थ स्थिति से ऊपर उठने (न उठने) से उच्चरित स्वन । व्यंजनों में मूर्धन्य, तालव्य, कोमल तालव्य उच्च स्वन हैं और स्वरों में इ, उ । इसी प्रकार व्यंजनों में द्वि-ओष्ठ्य, दंत्योष्ठ्य, दंत्य, वर्त्स्य, अग्र-जिह्वीय, ग्रसन्य अनुच्च स्वन हैं और स्वरों में ए, ओ, औ, अ, आ ।

higher low उच्चतर निम्न

स्वर-उच्चता का एक संदर्भ-बिंदु । दे० vowel height.

higher low vowel उच्चतर निम्न स्वर

वह स्वर जिसके उच्चारण में जिह्वा स्वर-उच्चता की उच्चतर निम्न स्थिति में हो, जैसे—x, w आदि । दे० vowel height.

higher mid उच्चतर मध्य

स्वर-उच्चता का एक संदर्भ-बिंदु । दे० vowel height.

higher mid vowel उच्चतर मध्य स्वर

वह स्वर जिसके उच्चारण में जिह्वा स्वर-उच्चता की उच्चतर मध्य स्थिति में हो । जैसे—e, o दे० vowel height.

high-level pitch उच्च स्वराघात

स्वराघात स्तर का एक भेद । दे० pitch level.

high vowel उच्च स्वर

वह स्वर जिसके उच्चारण में जिह्वा स्वर-उच्चता की उच्च स्थिति में हो । जैसे—i, u दे० vowel height.

historical phonetics — **ऐतिहासिक स्वनविज्ञान**

भाषा विशेष की स्वनिक विशेषताओं का कालक्रमिक विश्लेषण तथा अध्ययन ।

hold (=retention) — **धारण**

किसी स्वन के उच्चारण की वह अवस्था जिसमें करण उच्चारण-स्थान पर टिका रहता है और वायुमार्ग भी बंद रहता है । दे० phases of articulation.

homorganic articulation — **तुल्यस्थानीय उच्चारण, सवर्ण उच्चारण**

स्वनों का ऐसा उच्चारण जिसमें एक ही करण और एक ही उच्चारण-स्थान का योग रहता है तथा इस प्रक्रिया में संकोचन और संवार भी एक-सा होता है । उदाहरणार्थ हिंदी 'अच्छा' में [च्]-[छ] और 'संत' में [न्] - [त्] तु० heterorganic articulation.

hyphen — **योजक चिह्न, हाइफन**

एक प्रकार का विरामचिह्न (–) जो दो या दो से अधिक शब्दों में समस्तपद बनाने के लिए (माता-पिता), शब्दों की पुनरुक्ति बताने के लिए (धीरे-धीरे), कठिन संधि से बचने के लिए (बहु-अर्थक) या अगली पंक्ति में आए एक ही शब्द के शेष अंश को द्योतित्त करने के लिए प्रयुक्त होता है ।

identical environment(s) — **सर्वसम परिवेश**

ऐसे परिवेश जो अपने निकटवर्ती स्वनों और स्वनिमिक तथा व्याकरणिक इकाइयों की दृष्टि से समान हों । उदाहरणार्थ 'माल' और 'छाल' शब्द-युग्मों में [म्] और [छ्] का परिवेश । यहां [म्] और [छ] का परिवेश सर्वसम है ।

ideogram — **भावलेख**

रुपिम या शब्द का प्रतिनिधित्व करनेवाला लेखिम ।

(अ) इस प्रकार के लिपिचिह्न में स्वनिम या आक्षरिक इकाई के अलग संकेत नहीं होते ।

(आ) वह आलेखात्मक चिह्न, प्रतीक अथवा चित्र जो किसी वस्तु के नाम का उल्लेख किए बिना उसके स्वरूप को प्रकट करता है या जो अमूर्त विचार या गुण को प्रतीक रूप में निरूपित करता है। भावलेखन की यह प्रक्रिया रेखात्मक होती है और इसे भावलिपि भी कहा जा सकता है। इसके उदाहरण मध्य अमेरिका, चीन तथा पश्चिमी अफ्रीका आदि में मिलते हैं।

(इ) धन चिह्न [+] अथवा गुणन चिह्न [×] भी भावलेखन का उदाहरण है। उक्त धन का चिह्न 'योग,' 'और', तथा 'अधिक' इन सभी संकल्पनाओं के सर्वसमावेशी अंतर्भाव का बोधक है।

ideograph — **भावचित्र, भावलेख**

दे० ideogram.

implosion — **अंतःस्फोटन**

अंतर्मुखी वायुप्रवाह के साथ स्पर्श का निर्मोचन। दे० air stream process.

implosive — **अंतःस्फोटी**

श्वासद्वारीय अंतर्मुखी वायुप्रवाह तंत्र द्वारा उत्पन्न कोई स्पर्श स्वन। देखिए, स्वरयंत्रीय वायुप्रवाह तंत्र। सिंधी के ज़, ब़, ड़, ग़ इसी प्रकार के स्वन हैं।

incomplete stop (=unexploded stop) — **अपूर्ण स्पर्श, अनिर्मोचित स्पर्श**

वह स्पर्श जिसका निर्मोचन नहीं होता। किसी शब्द के भीतर जब कोई दो व्यंजन क्रम से आएं अथवा कोई स्पर्श व्यंजन मौन के पूर्व की स्थिति में आए तब यह संभव है कि उसका उच्चारण बिना निर्मोचन के किया जा सके। उदाहरणार्थ 'सप्ताह' का 'प्' और 'कब' का 'ब्'।

information — **सूचना**

ऐसी जानकारी जिसमें चयन की संभाव्यता हो। यह व्यतिरिक्तता का है। दे० redundancy.

ingressive (rarefactive) air stream — **अंतर्गामी (विरलित) वायुप्रवाह**

प्रारंभक के अपकेंद्री होने पर वायु कोष्ठक के विस्तार के फलस्वरूप भीतर खिंचती वायु-धारा ।

inherent feature(s) — अंतर्निहित अभिलक्षण

स्वनों के उच्चारण में समय-अनुक्रम से तटस्थ गुणों को परिभाषित करने वाला परिच्छेदक अभिलक्षण ।

यह उल्लेखनीय है कि स्वनगुणिमिक अभिलक्षण को समय-अनुक्रम की अपेक्षा रहती है जबकि अंतर्निहित अभिलक्षण को नहीं। स्वनगुणिमिक अभिलक्षण के तीन उपवर्गों—बल (बलाघात), परिमाण (मात्रा) तथा स्वराघात (तान) के समांतर अंतर्निहित अभिलक्षण के भी तीन उपवर्ग बनाए गए हैं—(1) मुखरता अभिलक्षण, (2) कालविस्तार अभिलक्षण, (3) तानता अभिलक्षण। दे० sonority feature, protensity feature, tonality feature.

inherent vowel — अंतर्निहित स्वर

वह स्वर जो अक्षर या शब्द की आभ्यंतर संरचना के होते हुए भी बाह्य संरचना में न होने के कारण उच्चरित नहीं होता। हिंदी में 'अ' कई स्थितियों में इस प्रकार का उदाहरण माना जा सकता है । जैसे—

लकड़ी, लकड़हारा

लड़का, लड़कपन

लेख+क>लेखक

पढ़+न>पढ़न

हिंदी की वर्तनी में स्वर का संकेत अंतर्निहित रहता है ।

initiator — प्रारंभक

विवर या गुहिका के आयतन को छोटा-बड़ा करनेवाला करण। फेफड़े, स्वरयंत्र और जिह्वा (विशेषकर जिह्वापश्च) में से कोई भी प्रारंभक हो सकता है ।

insertion — निवेशन

दे० segment addition.

instantaneous release — **तात्कालिक निर्मोचन**
(delayed release) — **(विलंबित निर्मोचन)**

स्पर्श स्वनों का इस प्रकार तेज़ी (देरी) से निर्मोचित होना कि वायुप्रवाह किसी संघर्षण या प्रक्षोभ के बिना (साथ) निकले । सभी स्पर्श-संघर्षी स्वन (च्, छ्, ज्, झ्, ञ्) विलंबित निर्मोचन वाले हैं और प्, त्, क् तात्कालिक निर्मोचन वाले ।

instrumental phonetics — **यांत्रिक स्वनविज्ञान**
(=experimental phonetics)

भाषाविज्ञान की वह शाखा जिसमें वक्ता द्वारा वाक्-स्वनों के उच्चारण से लेकर श्रोता द्वारा उनके अभिग्रहण तक की प्रक्रिया और तत्संबंधी सभी विशेषताओं का यांत्रिक उपकरणों की सहायता से अध्ययन किया जाता है ।

instrumental segment — **यांत्रिक खंड**

दे० artificial segment.

intensity — **तीव्रता**

किसी स्वन की ध्वानिक ऊर्जा जो प्रबलता का आधार बनती है । दे० loudness.

interlude — **आंतरालिक**

यदि किसी अक्षर के अंत को परवर्ती अक्षर के प्रारंभ से पृथक् न किया जा सके तो दो ऐसे पार्श्ववर्ती अक्षरों के शीर्षों के मध्यवर्ती रूप में उच्चरित होने वाला स्वन या स्वनगुच्छ ।

internal sandhi — **आभ्यंतर संधि**

संधि की वह प्रक्रिया जो शब्द या पद के भीतर होती है । जैसे—वि + अर्थ > व्यर्थ ।

International Phonetic Alphabet (I.P.A.) — **अंतर्राष्ट्रीय स्वन-वर्णमाला, इंटरनेशनल फोनेटिक एल्फाबेट**

किसी भी भाषा के वाक्-स्वनों के लिप्यंकन के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्वन संस्था द्वारा तैयार की गई वह वर्णमाला जिसमें उच्चारण-व्यवस्था का ध्यान रखते हुए लिपि-चिह्नों तथा विशेषक चिह्नों का समावेश किया गया है । इसकी तालिका यों है —

अंतर्राष्ट्रीय स्वन-वर्णमाला (सन् 1935 तक पुनरीक्षित)

व्यंजन	उभयोष्ठ्य	दंतोष्ठ्य	दंत्य वर्त्स्य	मूर्धन्य	वर्त्स्य तालव्य	तालव्य वर्त्स्य	तालव्य	मृदु तालव्य	अलिजिह्वीय	ग्रसनीय	श्वासद्वारीय
स्पर्श - - -	p b		t d	ʈ ɖ			c ɟ	k g	q ɢ		ʔ
नासिक्य - -	m	ɱ	n	ɳ			ɲ	ŋ	ɴ		
पार्श्विक - -			l	ɭ			ʎ				
पार्श्विक-संघर्षी -			ɬ ɮ								
लुंठित - -			r						ʀ		
उत्क्षिप्त - -			ɾ	ɽ					ʀ		
लुंठित संघर्षी -			ɼ								
संघर्षी - - -	ɸ β	f v	θð|sz|ɹ	ʂ ʐ	ʃ ʒ	ɕ ʑ	ç ʝ	x ɣ	χ ʁ	ħ ʕ	h ɦ
घर्षण-रहित प्रवाही और अर्ध-स्वर -	w|ɥ	ʋ	ɹ				j (ɥ)	(w) ɰ	ʁ		

स्वर	वर्तुलित	अग्र/मध्य/पश्च
संवृत - - -	(y ʉ u)	i y ɨ ʉ ɯ u
अर्ध-संवृत - -	(ø o)	e ø ɤ o
		ə
अर्ध-विवृत - -	(œ ɔ)	ɛ œ ʌ ɔ
		ɐ
		æ
विवृत - - -	(ɒ)	a ɑ ɒ

चित्र 11

intervocalic स्वरमध्य
(=intervocal)

दो स्वरों के बीच आनेवाला व्यंजन, जैसे संस्कृत 'कोकिल' में मध्यवर्ती 'क्' ।

intonation अनुतान, काकु

पदबंध या वाक्य के स्थल-विशेष या स्थल-विशेषों पर आघात से उत्पन्न उच्चारण-वैशिष्ट्य । दे० accent, pitch.

टिप्पणी : अनुतान स्वनिमिक और अस्वनिमिक हो सकता है । स्वनिमिक (व्यतिरेकी) अनुतान पदबंध या वाक्य स्तर पर घटित होने पर अर्थ-भेदक होता है, जबकि अस्वनिमिक (अव्यतिरेकी) अनुतान पदबंध या वाक्य स्तर पर अर्थभेदक नहीं होता ।

inverted commas उद्धरण चिह्न

दे० quotation marks.

irregualar alternation अनियमित परिवर्तन

(अ) सुनिश्चित स्वनिक परिवेश में कभी-कभी होनेवाला परिवर्तन ।

(आ) (प्रजनक स्वनप्रक्रिया) अनियमित परिवर्तन से संबद्ध नियम जो उपव्यवस्था का निर्माण करते हैं और गौण नियम कहलाते हैं ।

iṣat-spṛṣṭa (slight-contact) ईषत्स्पृष्ट

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) अर्धस्वरों (य, व) के उच्चारण में किया जाने वाला एक प्रकार का प्रयत्न जिसमें संस्पर्श बहुत कम होता है ।

jihvāmūlīya जिह्वामूलीय
(formed at the root of the tongue)

दे० visarga.

juncture **संहिता**

(अ) स्वनिमों के बीच संपर्क होने पर उनकी सहलग्नता की स्थिति। इस स्थिति को रूपिमों के बीच संक्रमण की अवस्था कह सकते हैं जिसके दो मुख्य भेद किए जा सकते हैं—(1) स्वनिमिक संहिता, (2) संरचनात्मक संहिता। दे० phonemic juncture, structural juncture.

(आ) विराम स्तर पर परिकल्पित अधिखंडात्मक स्वनिम।

kymogram **तरंगलेख, काइमोग्राम**

काइमोग्राम यंत्र से प्राप्त ध्वनितरंगों का अनुरेखन।

kymograph **काइमोग्राफ, तरंगग्राही, तरंगलेखी**

स्वनों की अनुनासिकता, घोषता, महाप्राणता आदि का अंकन तरंगों के रूप में करनेवाला एक यंत्र जो यांत्रिक स्वनविज्ञान में काम आता है।

labial **ओष्ठ्य**

वह स्वन जिसके उच्चारण में अधरौष्ठ करण का काम करता है। जैसे—ब्, व्, फ्, फ़्।

labialization **ओष्ठीकरण, ओष्ठ्यरंजन**

(1) सह-उच्चारण का एक भेद। दे० co-articulation.

(2) (क) किसी स्वन के प्राथमिक उच्चारण के साथ-साथ ओठों को वर्तुलित करना।

(ख) किसी स्वन के उच्चारण पर वर्तुलित अग्र संवृत स्वर [Y] को आरोपित करना।

labio-dental **दंतोष्ठ्य**

वह व्यंजन जिसके उच्चारण में ऊपर के सामने वाले दांत उच्चारण-स्थान का और नीचे का ओठ करण का कार्य करता है। जैसे अंग्रेजी के f v तथा हिंदी का 'फ़्' और चावल, आवाज़, संवाद, काव्य का 'व्'।

labio-velar **कंठोष्ठ्य, ओष्ठ-मृदुतालव्य**

वह व्यंजन जिसके उच्चारण में ओठों के गोल किए जाने के साथ-साथ जिह्वा का पश्च भाग कोमल तालु की ओर उठता है। ऐसे स्वन पश्चिमी अफ्रीका में बोली जाने वाली योरुबा, इग्बो, फान्ते आदि भाषाओं में मिलते हैं। इन स्वनों को दो वर्णों के ऊपर (‿) से चिह्नित किया जाता है। जैसे- (k͡p), (g͡b) आदि।

मूल भारोपीय भाषा के पुनर्रचित स्वनिम-समूह में प्रतिस्थापित स्पर्श-शृंखला जिसमें ओष्ठ्य तथा मृदुतालव्य दोनों के गुणों का समावेश माना गया है।

laghu (light) **लघु**

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) अक्षर मात्रा का एक भेद। अक्षर का वह परिमाण जिसमें स्वर ह्रस्व हो और व्यंजनांत भी न हो।

laryngal **काकलीय**
(=laryngeal)

वह स्वन जिसका उच्चारण स्थान श्वासद्वार होता है।

laryngealization **काकलीकरण, काकलरंजन**

1. सह-उच्चारण का एक भेद। दे० co-articulation.

2. (क) किसी स्वन के प्राथमिक उच्चारण के साथ-साथ घोषतंत्रियों का कंपित या रंफित (स्वन) जैसा कंपन (trillization)।

(ख) किसी स्वन को काकलीकृत या काकलरंजित करना। दे० creaky voice.

laryngoscope **काकलदर्शी, लेरिंगोस्कोप**

प्रायोगिक स्वनविज्ञान में काम आनेवाला काकल के आंतरिक रूप अर्थात् घोषतंत्रियों को देखने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला यंत्र (गोल शीशा) जिसमें एक हैंडल लगा रहता है।

larynx काकल, स्वरयंत्र

श्वास-नली के ऊपर का वह भाग जिसमें घोषतंत्रियां स्थित हैं।

चित्र के लिए दे० pharynx.

lateral (non-lateral) पार्श्विक (अपार्श्विक)

(अ) जिह्वा के मध्य भाग के दोनों या एक पार्श्व को नीचे करके (न कर के) वायुप्रवाह को चर्वक दांतों के क्षेत्र से निकलने देने की स्थिति।

(आ) तालु की मध्य रेखा पर जिह्वा नोक या फलक को स्पर्श कराते हुए और भीतर से आने वाली हवा को एक या दोनों पार्श्वों से बाहर निकालते हुए उच्चरित स्वन। हिंदी का (ल्) स्वन पार्श्विक है। इसी प्रकार अंग्रेजी का स्पष्ट तथा अस्पष्ट (*l*) भी पार्श्विक है।

lax **शिथिल, अदृढ़**

दे० tense.

least effort **प्रयत्न लाघव**

शब्दों के इस प्रकार उच्चारण का प्रयत्न जिसमें आयास कम हो। इस के कारण ध्वनियों में परिवर्तन होता है। जैसे हिंदी में—मास्टर साहब>मास्साब (आंचलिक प्रयोग), खरीददार>खरीदार।

length **दीर्घता**

काल के धरातल पर किसी भाषिक इकाई की भावनिष्ठ (भाषिक) मात्रा।

(काल) मात्रा की प्रकृति यदि भौतिक है तो दीर्घता की भाषिक। दीर्घता के आधार पर स्वन का ह्रस्व-दीर्घ भेद करना संभव है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि यह संभव है कि किसी स्वन की (काल) मात्रा एक-सी हो, परंतु भाषिक बोध के धरातल पर अन्य कारणों के फलस्वरूप वह दीर्घ-ह्रस्व के रूप में प्रतीत हो। स्वन अवरोही तान के साथ युक्त होकर दीर्घ प्रतीत होता है जबकि वही स्वन उसी (काल) मात्रा के साथ उस समय ह्रस्व प्रतीत होता है जब वह आरोही तान के साथ युक्त हो।

व्यंजनों को भी ह्रस्व-दीर्घ कहा जाना संभव है। द्वित्व व्यंजन दीर्घ कहे जा सकते हैं जैसे—पता (–t–) पत्ता (–t:–)

दीर्घता चिह्न को प्रकट करने के लिए निम्नलिखित विशेषक चिह्नों का प्रयोग होता है :—

(1) [¯] जैसे—v̄
(2) [:] जैसे—v:

ह्रस्व [˘] और दीर्घ [¯] ~ [:] के बीच की स्थिति को [.] से व्यक्त करते हैं जैसे [v.]

टिप्पणी : संस्कृत वैयाकरणों ने स्वर की दीर्घता के संदर्भ में मात्रा की संकल्पना के आधार पर तीन कोटियां निर्धारित की हैं : (1) ह्रस्व = 1 मात्रा (2) दीर्घ = 2 मात्रा (3) प्लुत = 3 मात्रा। कुछ विद्वानों के अनुसार मात्रा का एक चौथा भेद अतिह्रस्व भी किया जा सकता है। इसी प्रकार व्यंजन की दीर्घता की ओर संकेत मिलता है। सामान्यतः यह माना गया है कि व्यंजन की दीर्घता ½ मात्रा की होती है। एक चौथाई मात्रा को अणु और आधे अणु को परमाणु कहा गया है।

lenis (lax) consonant **शिथिल व्यंजन**

वागवयवों की मांस पेशियों की अपेक्षाकृत तनावरहित स्थिति में उच्चरित व्यंजन स्वन।

letter **वर्ण**

वर्णमाला का वह पारंपरिक चिह्न जो एक वाक्-स्वन या एकाधिक स्वनों का दृश्य प्रतीक होता है। जैसे हिंदी में—अ, आ, इ, क, ख, ग आदि।

levelled pitch **समतल स्वराघात, समतल सुर**

वह स्वराघात जो अक्षर में आदि से अंत तक समरूपी हो। अनुतान के स्तर पर इसे सम अंत्य परिरेखा कहते हैं। इसे [–] से चिह्नित करते हैं।

संस्कृत में इस प्रकार की स्थिति को प्रचय कहते हैं।

ligature 1. युक्तवर्ण

दो वर्णों के संयोग से निर्मित लेखिम। जैसे हिंदी में त्र, द्य आदि।

2. अक्षर चिह्न

वह चिह्न (˘ अथवा ˆ) जो दो अनुक्रमिक स्वनों को एक अक्षर के रूप में उच्चरित होने का संकेत देता है। जैसे अंग्रेज़ी में–boat [bou͡t], हिंदी के पूर्वी उच्चारण में–पैसा [प इ सा/प्+ अइ+स्+आ]

linear writing रेखिक लेखन

लेखन की वह विधि जिसमें स्वन-प्रतीकों को अनुक्रम में प्रयुक्त किया जाता है। इस पद्धति में वस्तुओं या भावों के प्रकाशन के लिए चित्रों का प्रयोग नहीं किया जाता। यूनानी, रोमन, फारसी, देवनागरी लेखन-विधियां रेखिक हैं।

line spectrum रेखिक स्पेक्ट्रम

आधारभूत चक्रावृत्ति के गुणकों के आवृत्ति घटकों के संयोग से बना वह स्पेक्ट्रम जिसमें प्रत्येक घटक के लिए पृथक्-पृथक् रेखा अंकित की जाती है। संगीतात्मक ध्वनियों का स्पेक्ट्रम प्राय: ऐसा होता है।

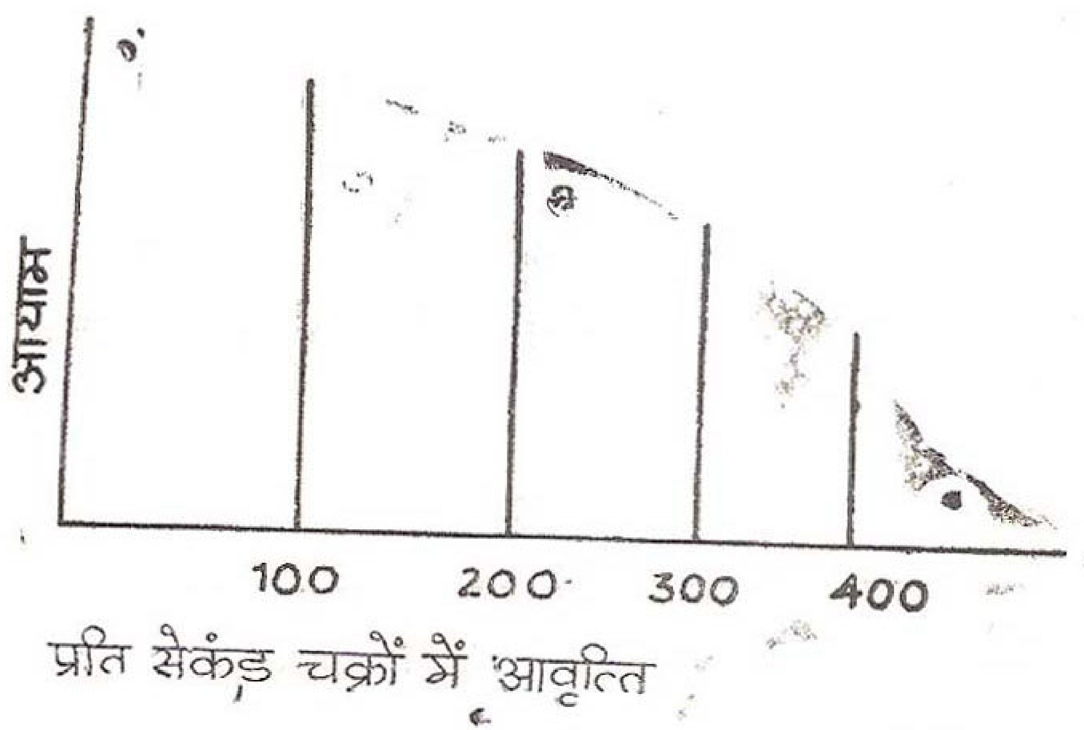

चित्र 12

तु० continuous spectrum.

lingual जिह्वीय

जिह्वा (करण) के द्वारा दंत, वर्त्स या मूर्धा को स्पर्श करने से उच्चरित स्वन ।

liquid तरल स्वन

घर्षणरहित व्यंजन जिसका उच्चारण स्वर की तरह प्रलंबित हो सकता है । यह कंपित या रिफित और पार्श्विक अनुनादी व्यंजन दोनों का समावेशक नाम है । [ल्] और [र्] इसी प्रकार के स्वन हैं ।

logical stress तर्कसंगत बलाघात

दे० phrasal stress.

logogram शब्दचिह्न, लोगोग्राम

दे० ideogram.

logograph शब्दलेख

दे० ideogram.

long consonant

दे० double consonant.

longitudinal wave अनुदैर्ध्य तरंग

वह तरंग जिसमें माध्यम के कण उसी दिशा में विस्थापित होते हैं जिसमें तरंग संचारित होती है ।

long vowel दीर्घ स्वर

वह स्वर जिसके उच्चारण में ह्रस्व स्वर की तुलना में अधिक समय (मात्रा) लगता है । जैसे–अ, इ, उ की तुलना में क्रमश: आ, ई, ऊ ।

संरचनात्मक दृष्टि से दीर्घ स्वर दो ह्रस्व स्वरों का अनुक्रम भी कहा जा सकता है । जैसे—आ=अ+अ, ई=इ+इ ।

loudness **प्रबलता**

ध्वनि से उत्पन्न हुए संवेदन का परिमाण। प्रबलता मुख्यतया ध्वनि तरंग की तीव्रता (intensity) पर निर्भर है। किंतु इन दोनों में सरल संबंध नहीं है। प्रबलता का ऐसा मापक्रम बनाया जाना कठिन है जो यथार्थतः ध्वनि द्वारा उत्पन्न हुए संवेदन की मात्रा निर्धारित कर सके।

low (non-low) **निम्न (अनिम्न)**

(अ) स्वर-उच्चता का एक संदर्भ-बिंदु। दे० vowel height.

(आ) जिह्वा को तटस्थ स्थिति से नीचे लाने (न लाने) की उच्चारण-स्थिति। इस स्थिति में उच्चरित स्वन। व्यंजनों में ग्रसन्य, श्वासद्वारीय निम्न स्वन हैं और स्वरों में ऐ, औ सामान्यतः अनिम्न हैं। शेष सभी व्यंजन और स्वर सामान्यतः अनिम्न हैं।

lower high **निम्नतर उच्च**

स्वर-उच्चता का एक संदर्भ-बिंदु। दे० vowel height.

lower high vowel **निम्नतर उच्च स्वर**

वह स्वर जिसके उच्चारण में जिह्वा स्वर-उच्चता की निम्नतर उच्च स्थिति में हो। जैसे– I, U, दे० vowel height.

low-level pitch **निम्न स्वराघात, अनुदात्ततर स्वराघात**

स्वराघात का एक भेद। दे० pitch level.

lower mid **निम्नतर मध्य**

स्वर-उच्चता का एक संदर्भ-बिंदु। दे० vowel height.

lower mid vowel **निम्नतर मध्य स्वर**

वह स्वर जिसके उच्चारण में जिह्वा स्वर-उच्चता की निम्नतर मध्य स्थिति में हो । जैसे – ɛ,ɔ दे० vowel height.

low vowel **निम्न स्वर**

वह स्वर जिसके उच्चारण में जिह्वा स्वर-उच्चता की निम्न स्थिति में हो । जैसे– a,ɒ दे० vowel height.

macron **दीर्घता चिह्न**

वह विशेषक चिह्न [¯] जो रोमन लिपि में किसी स्वर पर इसलिए लगाया जाता है कि इसे उसके संवादी दीर्घ स्वर के रूप में उच्चारित किया जाए ।

major class features **मुख्य वर्ग अभिलक्षण**

स्वन के वे अभिलक्षण जो उसे स्वर, व्यंजन, अर्धस्वर और तरल वर्गों में विभाजित करते हैं, जैसे स्वरात्मक/अस्वरात्मक, व्यंजनात्मक/अव्यंजनात्मक आदि । निम्नलिखित रेखाचित्र द्रष्टव्य है :

स्वरात्मक

व्यंजनात्मक	+	L तरल	C व्यंजन
	–	V स्वर	G अर्धस्वर

टिप्पणी : आजकल मुखरित/अमुखरित और आक्षरिक/अनाक्षरिक अभिलक्षण को भी मुख्य वर्ग अभिलक्षण के अंतर्गत रखा जाने लगा है ।

major rule(s) **मुख्य नियम**

दे० regular alternation.

manner of articulation **प्रयत्न**

स्वन उच्चारण में वाक्-पथ के संकोचन के प्रकार।

स्वनों के उच्चारण में **करण** के **उच्चारण-स्थान** की ओर अग्रसर होकर वायु को पूर्ण या आंशिक रूप में रोकने या मध्य में वायुमार्ग के अवरुद्ध रहते हुए भी हवा को एक पार्श्व या दोनों पार्श्वों से जाने देने आदि की विभिन्न स्थितियां।

व्यंजनों की दृष्टि से ये प्रयत्न इस प्रकार के होते हैं : (1) स्पर्श, (2) घर्षी, (3) स्पर्श-घर्षी, (4) कंपित, (5) पार्श्विक, (6) ताड़ित, (7) उत्क्षिप्त और (8) लोड़ित। दे० आभ्यंतर प्रयत्न।

marked (segment/rule) **चिह्नित (खंड/नियम)**

निश्चित अभिलक्षण या संदर्भ में अपेक्षाकृत अधिक जटिल, कम सामान्य और न्यूनतम प्रत्याशित (स्वन अथवा नियम)। उदाहरणार्थ, नासिक्य अभिलक्षण के संदर्भ में नासिक्य व्यंजन अथवा अनुनासिक स्वर चिह्नित स्वन हैं (जबकि अनासिक्य व्यंजन अथवा मौखिक स्वर अचिह्नित)। दे० markedness principle और unmarked (segment/rule).

markedness convention(s) **चिह्नितता रूढ़िगत नियम**

चिह्नितता सिद्धांत के आधार पर निर्णीत स्वन के अभिलक्षण के चिह्नित और अचिह्नित मूल्य को [+] और [—] मूल्य में रूपांतरित करने की स्वीकृत नियमावली।

markedness principle चिह्नितता सिद्धांत

स्वनिम अथवा स्वनिमिक नियम की सहजता को अभिहित करनेवाला सिद्धांत ।

यह सिद्धांत स्वनिम अथवा स्वनिमिक नियम को चिह्नित (असहज) अथवा अचिह्नित (सहज) वर्गों में विभाजित करता है। इस सिद्धांत के अनुसार किसी स्वनिम के अभिलक्षण विशेष के [+] और [−] मूल्य को चिह्नित और अचिह्नित के रूप में अभिव्यक्त किया जा सकता है। उदाहरण के रूप में, शब्दांत में आनेवाले वे व्यंजन जो [−घोष] हैं उन्हें [अचिह्नित] कहा जाएगा और जो [+घोष] हैं उन्हें [चिह्नित]। परंतु स्वरमध्य स्थिति में आनेवाले अघोष [−घोष] व्यंजन को [चिह्नित] और घोष [+घोष] व्यंजन को [अचिह्नित] कहा जाएगा ।

चिह्नित को [M] से, अचिह्नित को [U] से संकेतित किया जाता है।

इस सिद्धांत की संकल्पना सबसे पहले प्राहा (प्राग) स्कूल में त्रुबेत्सकॉय द्वारा की गई। आजकल प्रजनक स्वनप्रक्रिया में चॉम्स्की और हॉले ने इसे नया संदर्भ देकर पुनरुज्जीवित किया है।

mark of interrogation प्रश्नचिह्न

विरामचिह्न का वह रूप [?] जिसका प्रयोग लेखन तथा मुद्रण में प्रश्नात्मक वाक्यों के अंत में किया जाता है।

mean mid माध्य मध्य .

स्वर-उच्चता का एक संदर्भ-बिंदु। दे० vowel height·

mean mid vowel माध्य मध्य स्वर

वह स्वर जिसके उच्चारण में जिह्वा स्वर-उच्चता की माध्य मध्य स्थिति में हो। जैसे–E̜, ɲ दे० vowel height.

mel **मेल**

स्वनों के तारत्व (pitch) को मापने की इकाई ।

यद्यपि तारत्व और आवृत्ति में संबंध होता है पर यह संबंध 1:1 आनुपातिक नहीं है । अनुभूतिगम्य तारत्व (जिसकी मापक इकाई मेल होती है) और ध्वनि-तरंगों की भौतिक सत्ता (जिसकी मापक इकाई साइकल प्रति सेकंड होती है) में पर्याप्त अंतर होता है जिसे निम्नलिखित चार्ट द्वारा दिखाया गया है :—

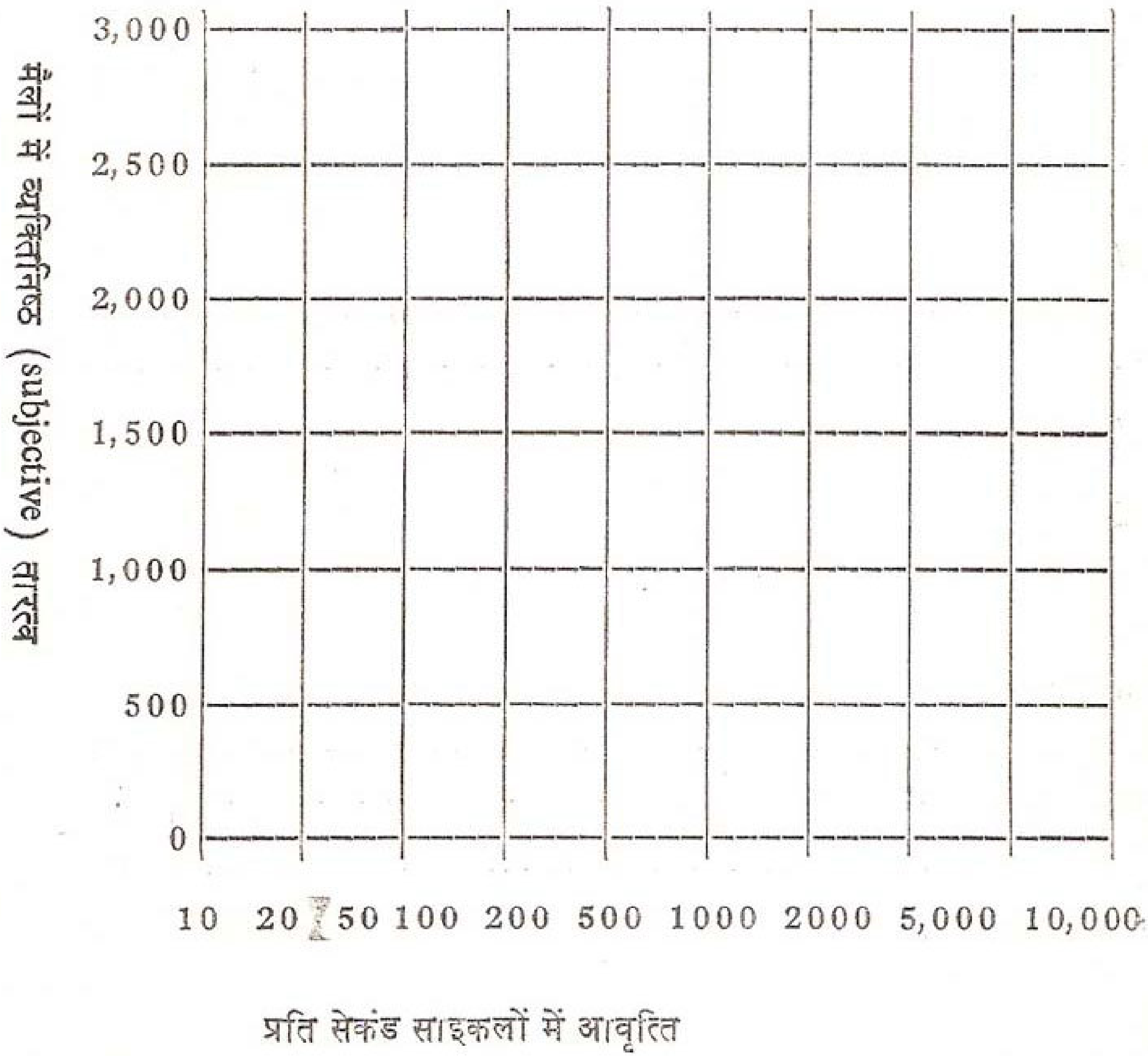

mellow **मृदु**

दे० non-strident.

metathesis **विपर्यय, विपर्यास, व्यत्यय**

शब्द में स्वनों के क्रम का परस्पर-परिवर्तन। जैसे—लखनऊ > नखलऊ, डूबना > बूड़ना आदि।

mid-level pitch **मध्यस्तर स्वराघात**

स्वराघात स्तर का एक भेद। दे० pitch level.

mid vowel **मध्य स्वर**

अर्ध संवृत अथवा अर्धविवृतस्वर। जैसे —e, o। स्तर-उच्चता की दृष्टि से उच्चतम और निम्नतम स्वरों के बीच का स्वर। दे० cardinal vowel(s), तु० central vowel.

minimal pair **न्यूनतम युग्म**

दो शब्दों का वह जोड़ा जो सर्वसम परिवेश में व्यतिरेक के रूप में स्वनिम निर्धारण का आधार बनता है। जैसे—काल : खाल [क्—ख्], रात : लात [र्—ल्]।

minor rule (s) **गौण नियम**

दे० irregular alternation.

mobile articulator **गतिशील करण**

स्वनोच्चारण के समय विभिन्न स्थितियां ग्रहण कर निकोच का निर्माण करने वाला वह वागवयव जो वायुप्रवाह में बाधा डालता है अथवा उसे दिशा देता है। ऐसा गतिशील वागवयव तभी करण कहलाता है जब वह प्रारंभक न हो। दे० initiator.

monophthong **एकस्वरक, समानाक्षर**

वह स्वर जिसके उच्चारण में आदि से लेकर अंत तक एक ही उच्चारण-स्थिति और समध्वानिक लक्षण बना रहता है; सभी सामान्य स्वर; संध्यक्षर का विलोम।

monophthongization **एकस्वरीकरण, समानाक्षरीकरण**

संध्यक्षर का मूल स्वर में परिवर्तन। उदाहरणार्थ हिंदी-ईरानी अए—अय > सं० ए।

monosyllabic word **एकाक्षरी शब्द, एकाच् शब्द**

एक अक्षर वाला शब्द। जैसे हिंदी में आ, ला आदि।

mora **मात्रा**

उच्चारण-काल की इकाई, किसी भी स्वन, विशेषत: स्वर के उच्चारण में समय की जो मात्रा लगती है, उसे भाषिक अध्ययन या विश्लेषण में मात्रा या मात्रा-काल कहते हैं। कालावधि की यह इकाई यादृच्छिक होती है। ह्रस्व स्वर के उच्चारण में लगनेवाले समय को ह्रस्व, दीर्घ स्वर के समय को दीर्घ और ह्रस्व से तिगुने समय वाले स्वन की मात्रा को प्लुत कहते हैं। ओ ऽ म् शब्द का 'ओ' प्लुत है। यही कारण है कि इसमें 'ओ' के बाद ऽ या ३ लिखते हैं। दे० length.

morpheme structure (MS) rule (s) **रूपिम संरचना (रू० सं०) नियम**

दे० redundancy rule (s).

morphemically (morphologically) conditioned alternation **रूपिमाश्रित परिवर्तन, रूप रूपिमाश्रित विकल्पन**

वह विकल्पन जिसमें रूपिम के स्वनिमिक रूप से संबद्ध परिवर्तन का आधार दूसरा स्वनिम होता है। यह पराश्रित कोटि का परिवर्तन होता है। दे० non-automatic alternation.

ऐसा स्वनिक परिवर्तन आगे आनेवाले रूपिम से प्रतिबंधित होता है। उदाहरणार्थ अंग्रेजी रूपिम [wife] के साथ बहुवचन रूपिम जुड़ने से /wajv/ हो जाता है, जबकि संबंधबोधक अथवा कालबोधक रूपिमों के साथ मूल रूप /w a j f/ में कोई स्वनिक परिवर्तन नहीं होता। हिंदी क्रियारूप 'जाना' का 'ज' भूतकालिक रूप 'गया' में 'ग' हो जाना इसी प्रक्रिया का उदाहरण है।

morphographic writing (=morphemic writing) **रूपिमिक लेखन**

वह लेखन पद्धति जिसमें प्रत्येक रूपिम के लिए पृथक् प्रतीक होता है। जैसे—चीनी लेखन पद्धति ।

motor phonetics **गतिक स्वनविज्ञान**

स्वनविज्ञान की वह शाखा जिसमें वाक्-ध्वनियों के उच्चारणतंत्र के अध्ययन के साथ-साथ स्वनों की उच्चारण-प्रक्रिया का अध्ययन भी किया जाता है।

multilateral opposition **बहुविध प्रतियोग**

दो विरोधी स्वनिमों में पाई जाने वाली वह समानता जो अभिलक्षण रूप में दो से अधिक विरोधी सदस्यों में व्याप्त होती है। हिंदी के [फ्] [ख्] के बीच की समानता अर्थात् महाप्राण स्पर्श बहुविध विरोध का उदाहरण है, क्योंकि [फ्] के विरोध में [थ्] और [ठ्] स्वन भी हिंदी की स्वनिम व्यवस्था में हैं।

multisyllabic word **बहु-अक्षरी शब्द, अनेकाच् शब्द**

दे० polysyllabic word.

multivalued feature **बहुमान अभिलक्षण**

वह अभिलक्षण जो किसी भाषिक इकाई को दो से अधिक वर्गों में विभाजित करने की क्षमता रखता है। उदाहरणार्थ उच्चता अभिलक्षण स्वर स्वनों को चार वर्गों [1, 2, 3, 4] में विभाजित करता है। जैसे—डेनी (डैनिश) भाषा के i [4उच्चता], e [3 उच्चता], ε [2 उच्चता] और æ [1 उच्चता] स्वर।

murmur **मर्मर**

(अ) घोषतंत्रियों के स्थिति विशेष पर आधारित एक स्वनिक अभिलक्षण।

(आ) स्वनन प्रक्रिया का एक प्रकार। दे० phonation process.

mute **स्पर्श**

दे० stop.

mutually exclusive environment परस्पर व्यावर्तक परिवेश

वे दो स्वनों के ऐसे दो परिवेश जिनमें इस प्रकार का संबंध हो कि एक स्वन जिस परिवेश में आता हो उसमें दूसरा न आता हो । दे० complementary distribution.

narrow संकीर्ण

दे० wide.

narrow transcription **सूक्ष्म लिप्यंकन**

स्वन लिप्यंकन करने की वह पद्धति, जिसमें सूक्ष्म स्वनिक विशेषताओं का समावेश होता है । इस शैली में यथातथ्य उच्चारण को प्रकट करने वाले स्वनिक ब्यौरे की परिशुद्धता के लिए तथा स्वनिक उच्चार के अभिज्ञेय लक्षणों का सावधानी से द्योतन करने के लिए अतिरिक्त प्रतीकों अर्थात् विशेषक चिह्नों का व्यवहार होता है ।

nasal (non-nasal/oral) **नासिक्य/अनुनासिक (अनासिक्य/निरनानुसिक)**

1. अभिलक्षण-स्वर

(ध्वानिक विवरण) विशिष्ट स्थिर नासिक्य फार्मेंट का होना (न होना); ध्वानिक ऊर्जा का विस्तारण (संकोचन) । (उच्चारणात्मक विवरण) इस प्रकार के स्वन के उच्चारण में नासा अनुनादक का योग होना (न होना) ।

2. वर्णनात्मक स्तर

अलि जिह्वा के नीचे गिरे (उठे) रहने के कारण नासा विवर से होकर वायु के प्रवाहित (अप्रवाहित) स्थिति में उच्चरित स्वन ।

व्यंजनों में म्, न् ञ्, ण्, ङ् और स्वरों में सभी अनुनासिक स्वर यथा अँ, आँ, इँ, ऊँ आदि नासिक्य स्वन हैं ।

टिप्पणी : प्रस्तावित द्विचर प्रतियोग अभिलक्षण में नासिक्य शब्द वर्ग में पंचम वर्ण तथा नासिक्य स्वर दोनों रूपों पर लागू होता है, जबकि परंपरागत स्वन-विज्ञान में नासिक्य शब्द व्यंजनों के लिए और अनुनासिक स्वरों के लिए प्रयुक्त होता है ।

संस्कृत व्याकरण में इसे "आनुनासिक्य" कहा गया है और इसके अतंर्गत अनु-नासिक स्वर और नासिक्य व्यंजन दोनों प्रकार के स्वनों का समावेश होता है, जबकि नासिक्य शब्द संस्कृत शिक्षा ग्रंथों में शुद्ध अनुस्वार के सीमित अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

nasal cavity **नासा-विवर**

नाक के अंदर खाली भाग जिससे सांस अपने स्वाभाविक रूप से आता-जाता है। नासिक्य स्वनों के उच्चारण में इसी से सहायता मिलती है। दे० cavity.

nasality **आनुनासिक्य**

दे० nasal.

nasalization **1. अनुनासिकीकरण, नासिक्य रंजन**

(अ) सह-उच्चारण का एक भेद।

(आ) किसी स्वन के प्राथमिक उच्चारण के साथ-साथ नासा मार्ग को खुला रखते हुए उक्त स्वन को नासा अनुनाद से रंजित करना।

(इ) स्वर के उच्चारण में वायुप्रवाह को मुखविवर के साथ-साथ नासा-विवर से भी निकालना। (इस स्थिति में अनुनासिक स्वर उच्चरित होता है (मुखनासिकावचनोनुनासिकः)।

2. अनुनासिक

उच्चारण की उपर्युक्त प्रक्रिया से उच्चरित स्वर स्वन का गुण।

nasalization sign **अनुनासिकता चिह्न, चंद्रबिंदु**

स्वर के ऊपर लगाया जाने वाला एक चिह्न (ँ) जो स्वर के अनुनासिक (रक्त) होने का द्योतक है। जैसे—ऊँट, हँस, आँख।

nasal release **नासिक्य निर्मोचन**

स्पर्श - नासिक्य व्यंजन-गुच्छ में स्पर्श का वह उन्मोचन जो मुखविवर के स्थान पर नासा विवर से होता है। इस निर्मोचन को व्यंजन के बाद [ᴺ] चिह्न से अभिव्यक्त किया जाता है। जैसे— अंग्रेजी का button [bʌtᴺn̩]।

nasal tract **नासा-पथ**

नासावरोध-स्थल से नासा-द्वार तक का वायुधारा मार्ग । दे० vocal tract.

nata (cerebralized) **नत**

किसी नासिक्य स्वन का मूर्धन्यीकृत रूप । उदाहरणार्थ सं० नरा + नाम् > नराणाम् में 'न' का 'ण' रूप ।

natural class **सहज वर्ग**

स्वनों का वह समूह जो वर्ग के पृथक्-पृथक् सदस्यों की तुलना में कम (स्वनिमिक) अभिलक्षणों द्वारा अभिव्यक्त किया जा सकता है ।

इसके दो मुख्य प्रकार्य हैं—(1) स्वन-सादृश्य को स्वाभविकता के आधार पर बोधित कराना । उदाहरणार्थ [i, e, ε] एक सहज वर्ग है और [+ स्वर, + अग्र] अभिलक्षण गुच्छ द्वारा परिभाषित है, जबकि [i, k, Z] को सहज वर्ग नहीं कहा जा सकता । (2) स्वनिमिक प्रक्रिया को स्वाभाविकता के आधार पर बोधित कराना ।

उदाहरणार्थ $a \rightarrow \varepsilon / - \begin{Bmatrix} i \\ e \\ \varepsilon \end{Bmatrix}$ स्वाभाविक

स्वनिमिक प्रक्रिया है, जबकि $a \rightarrow \varepsilon / - \begin{Bmatrix} i \\ p \\ z \end{Bmatrix}$ की प्रक्रिया

को स्वाभाविक नहीं कहा जा सकता ।

natural rule **सहज नियम**

वह स्वनिमिक नियम जो स्वनिमिक प्रक्रिया की स्वाभाविकता का अतिक्रमण नहीं करता । उदाहरणार्थ किसी अघोष व्यंजन का स्वर मध्य स्थिति में घोष होना सहज नियम है, जबकि किसी घोष व्यंजन का स्वरमध्य स्थिति में अघोष होना असहज नियम ।

8—353 मानव संसाधन विकास मंत्रालय/एन०डी०/88

neutralisation निर्भेदीकरण, तटस्थीकरण

(अ) स्थिति विशेष (निश्चित परिवेश) में दो स्वनिमों के प्रतियोग (भेद) का निलंबन । निलंबित स्वनिमिक अभिलक्षण की स्थिति में आनेवाले अन्यथा स्थापित दो स्वनिमों के वर्ग को आर्कीस्वनिम कहते हैं। दे० archiphoneme.

(आ) आंशिक पूरण की स्थिति । दे० partial complementation.

neutral position तटस्थ स्थिति

बोलने के तत्काल पूर्व वाक्पथ की अवस्था । यह मौनावस्था में सांस लेने की सामान्य स्थिति से निम्नलिखित रूप में भिन्न होती है—(1) अलिजिह्वा के उठे रहने के कारण नासा विवर का बंद रहना, (2) जिह्वा के मुख्य भाग का उस ऊंचाई पर आना जहां से अंग्रेजी स्वर [e] का उच्चारण होता है। (जिह्वा-फलक की ऊंचाई वही बनी रहती है जो मौनावस्था में सांस लेते समय होती है), (3) घोषतंत्रियां स्वतः घोषत्व की स्थिति में होती हैं ।

neutral vowel उदासीन स्वर, तटस्थ स्वर

ऐसा स्वर जिसके उच्चारण में जिह्वा मध्यवर्ती स्थिति में होती है अर्थात् न तो उसका पश्च भाग ऊपर उठता है न अग्रभाग और न ही वह मुख में एकदम नीचे होती है (अर्थात् विश्राम की स्थिति में होती है) । इसका दूसरा नाम 'श्वा' है। उदाहरणार्थ अंग्रेजी में above/əbəv/ के दोनों स्वर about/əbaut/का पहला स्वर इसी प्रकार के स्वर हैं ।

non-enterior अपूर्ववर्ती

दे० anterior.

non-automatic alternation पराश्रित परिवर्तन

किसी रूपिम में स्वाश्रित परिवर्तन से भिन्न कोई परिवर्तन । दे० automatic alternation.

non-back अपश्च

दे० back.

non-consonantal अव्यंजनात्मक

दे॰ consonantal.

non-continuant अप्रवाही

दे॰ continuant.

non-coronal अजिह्वाफलकीय

दे॰ coronal.

non-distributed अवितरित

दे॰ distributed.

non-flat असपाट

दे॰ flat.

non-high अनुच्च

दे॰ high.

non-lateral अपार्श्विक

दे॰ lateral.

non-low अनिम्न

दे॰ low.

non-nasal अनासिक्य

दे॰ nasal.

non-sharp अतीक्ष्ण

दे॰ sharp.

non-sonorant अमुखरित

दे॰ sonorant.

non-strident (=mellow) अरुक्ष (=मृदु)

दे० strident.

non-syllabic अनाक्षरिक

दे० asyllabic.

non-vocalic अस्वरात्मक

दे० vocalic.

non-vocoid स्वरेतर ध्वनि, अस्वराभ

वह स्वन जो स्वर-स्वन या स्वराभ न हो अर्थात् केंद्रीय अनुनादी मौखिक स्वन से इतर स्वन। व्यंजनाभों में स्पर्श, पार्श्विक तथा वे सभी स्वन सम्मिलित हैं जिनके उच्चारण में मुखविवर में घर्षण होता है।

norm allophone प्रतिनिधि उपस्वन

दो या दो से अधिक उपस्वनों में से वह स्वन जिसका प्रयोग व्यापक और वितरणक्रम सीमित रूप में होता है; वह उपस्वन जिसे वर्णन की दृष्टि से उन सबका ज्ञापक माना जाता है।

notation संकेत (न)

लिप्यंकन के वे प्रतीक जो किसी भाषिक रूप को स्वनिक, स्वनिमिक, रूपिमिक अथवा व्याकरणिक आदि रूप में प्रस्तुत करने के लिए अपनाए जाते हैं। जैसे—

[ ], / /, { }, ' , आदि-आदि।

टिप्पणी : विभिन्न भाषावैज्ञानिक संप्रदायों में इन संकेत-चिह्नों का मूल्य अथवा अर्थ भिन्न-भिन्न हो सकता है।

nuclear sound केंद्रकीय स्वन

किसी अक्षर का वह स्वन जो सबसे अधिक मुखरित होता है। आक्षरिक स्वर इसी प्रकार के स्वन का उदाहरण है।

nucleus **केंद्रक**

आक्षरिक का पर्याय । दे० syllabic.

null **रिक्त चिह्‌न**

स्वनिम या स्वन के लोप का द्योतक चिह्न (ϕ) उदाहरणार्थ सिम् अ टा→ सिम् ϕ टा ।

पाणिनि ने इसके लिए 'लु' का प्रयोग किया है ।

obligatory internal close juncture **नित्य आभ्यंतर सन्निकृष्ट संहिता**

(अ) पदबंध और उपवाक्य की सीमा संबंधी अधिखंडात्मक स्वनिम ।

(आ) ऐसे स्वनिम का सूचक चिह्न ।

obligatory terminal close juncture **नित्य अंत्य सन्निकृष्ट संहिता**

(अ) वाक्य की सीमा संबंधी अधिखंडात्मक स्वनिम ।

(आ) ऐसे स्वनिम का सूचक चिह्न ।

o -glide **परश्रुति**

(अ) वह संक्रामी स्वन (विसर्प/श्रुति) जो वायुमार्ग के पूर्ण या अर्धविवर से उत्पन्न होता है और जो किसी स्वन के उच्चारण की निर्मोचन अवस्था में सुना जाता है ।

(आ) किसी स्वन के उच्चारण की तीन अवस्थाओं में से तीसरी अवस्था । इसे निर्मोचन भी कहते हैं । दे० phases of articulation.

on-glide **पूर्वश्रुति**

(अ) वह संक्रामी स्वन (विसर्ग/श्रुति) जो वायुमार्ग के पूर्ण या अर्ध अव-रोध से उत्पन्न होता है और जो किसी स्वन के उच्चारण के प्रथम चरण में सुना जाता है ।

(आ) किसी स्वन के उच्चारण की तीन अवस्थाओं में से पहली अवस्था । दे० phases of articulation.

on-set — प्रारंभ

किसी अक्षर के शिखर का पूर्ववर्ती स्वन या पूर्ववर्ती स्वनों में से प्रथम । जैसे

—काम् (आ में 'क्' और क्रम् अ में 'क्' ।
  ^ ^
क् म्) (क्+र् म्)

open — विवृत

स्वर-उच्चता का एक संदर्भ बिंदु । दे० vowel height.

open juncture — अवग्रह, विप्रकृष्ट संहिता

शब्द, पदबंध या वाक्य की सीमा को सूचित करने वाली विराम संहिता जिसे (+) चिह्न से अंकित किया जाता है । जैसे— night+rate (nitrate), न+तैन (नतैन), पी+ली (पीली) आदि ।

open syllable — स्वरांत अक्षर

वह अक्षर जिसके शिखर-पश्च स्थिति में कोई व्यंजन-स्वन न हो । जैसे— पी, ना आदि ।

open transition — शिथिल संक्रमण

वह अल्पविराम जिसका प्रयोग दो, अनुक्रमिक स्वनिमों के पृथक्-पृथक् उच्चारण के लिए किया जाता है । अंग्रेजी में an- aim का a-name से भेद करने के लिए इसी प्रक्रिया को अपनाया जाता है । तु० open juncture.

open vowel — विवृत स्वर

वह स्वर जिसके उच्चारण में जिह्वा स्वर-उच्चता की विवृत स्थिति में हो । जैसे α, ɒ दे० vowel height.

opposition प्रतियोग

(अ) दे० contrast.

(आ) भाषिक प्रतीक के अभिव्यक्ति (स्वनिक) पक्ष द्वारा एक भाषिक प्रतीक का दूसरे भाषिक प्रतीक से भेद। यही भेद परिच्छेदक अभिलक्षण का कारण होता है और इन्हीं परिच्छेदक अभिलक्षणों के गुच्छ के रूप में स्वनिम की व्याख्या की जाती है। दो भाषिक प्रतीकों अथवा स्वनिमों का 'प्रतियोग' के रूप में भेद मात्र असमानता के आधार पर ही नहीं होता बल्कि उनके समान तत्त्वों के आधार पर करना भी संभव है। त्रुबेत्सकॉय के अनुसार 'प्रतियोग' केवल उन अभिलक्षणों को ही अपने भीतर नहीं समेटता जो दो इकाइयों में भेद का कारण होता है बल्कि दो विरोधी इकाइयों के बीच पाई जाने वाली समानता भी इसी के विचारक्षेत्र में समाविष्ट है। समानता का यह गुण 'तुलना का आधार' कहलाता है जिसके दो विभेद किए जाते हैं :—(1) द्विविध प्रतियोग, (2) बहुविध प्रतियोग। दे० bilateral opposition multilateral opposition.

oral निरनुनासिक

दे० nasal.

oral cavity मुख विवर

दे० buccal cavity.

oral tract मुख-पथ

नासा-पथ को छोड़कर काकल से ओंठ तक का वायुमार्ग। दे० vocal tract.

oro-nasal process मुख-नासिक्य प्रक्रिया

अलिजिह्वा के ऊपर उठने या नीचे गिरने से वायु का मुखविवर या नासाविवर से या साथ-साथ दोनों विवरों से निकलना। इस प्रक्रिया के अंतर्गत वायु के केवल मुखविवर से निकलने पर क्, ख्, ग् आदि मौखिक व्यंजनों का या अ, इ, उ निरनुनासिक स्वरों का और केवल नासा विवर से निकलने पर ङ, ञ, ण्, न् आदि नासिक्य व्यंजनों का तथा दोनों विवरों से निकलने पर अँ, आँ, इँ आदि अनुनासिक स्वरों का उच्चारण होता है

orthoepist **शुद्धोच्चारणविद्**

शुद्ध उच्चारण करने वाला अथवा सिखाने वाला व्यक्ति ।

orthoepy **शुद्धोच्चारण व्यवस्था**

किसी भाषा के वर्णों के ठीक-ठीक उच्चारण का परंपराप्राप्त विधान ।

यहां वर्ण के तीन आयाम हैं-:(1) लिखित (figura), (2) उच्चरित (potestas) और शैक्षिक (nomen) । कुछ विद्वानों के अनुसार इस व्यवस्था का संबंध इन तीनों आयामों से है ।

orthography **1. लेखन-व्यवस्था, वर्णविन्यास**

(अ) किसी भाषा के शब्दों का लिखित या मुद्रित रूप में प्रयुक्त किया गया विशिष्ट क्रम में वर्ण-समूह ।

(आ) भाषा विशेष के स्वनों के बोधक प्रतीकों की पहचान ।

2. शुद्ध लेखन, शुद्ध वर्तनी

किसी भाषा में शब्दों को वर्णों के मानक, परंपराप्राप्त अथवा स्वीकृत क्रम में रखने की व्यवस्था ।

oscillation **दोलन**

दे० periodic motion.

oscillogram **दोलनलेख, ऑसिलोग्राम**

वह पार्श्वचित्र जिसमें ध्वनितरंग को दृश्य रूप में अंकित किया गया हो । उदाहरण के लिए दो स्वरित्र द्विभुजों (200 ∼ और 600 ∼) से निर्मित दोलनलेख को निम्न चित्र द्वारा देखा जा सकता है :

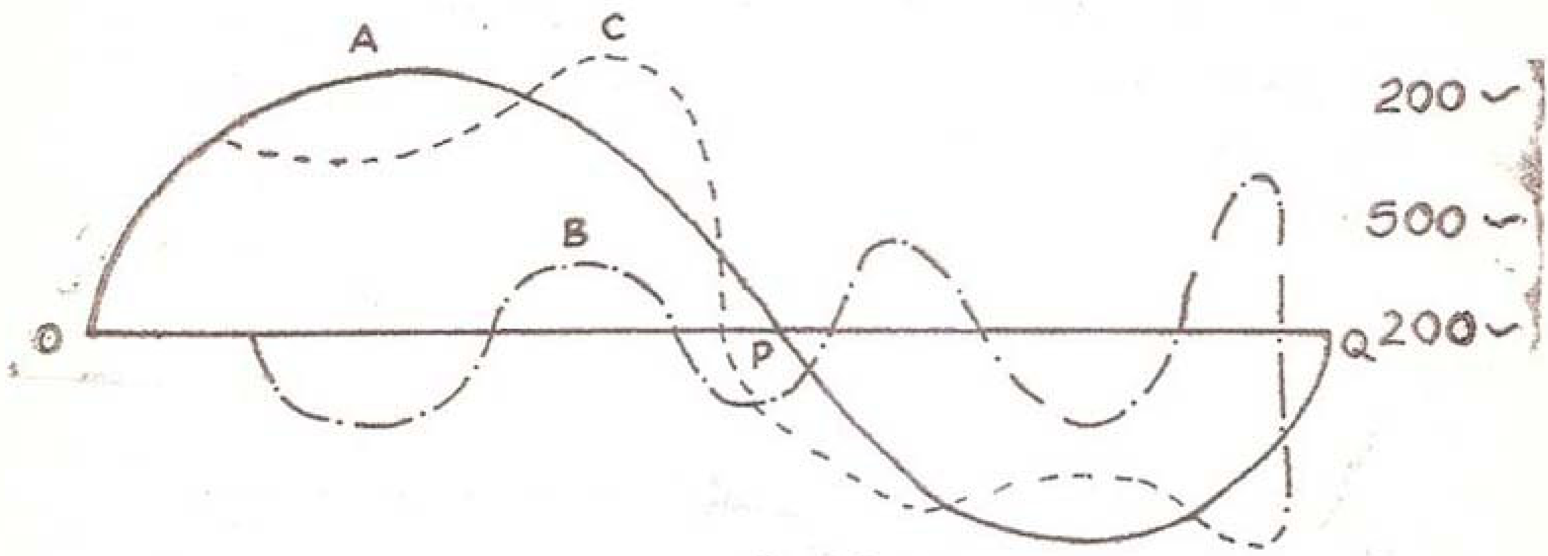

चित्र 13

oscillograph **दौलनलेखी यंत्र, दोलनलेखित्र, ऑसिलोग्राफ**

कोई साधन अथवा उपकरण जो धारा, विभव अथवा अन्य वैद्युत राशियों के परिवर्तन का लिखित अथवा दृश्य ग्राफ प्रदर्शित करे। इसमें गतिशील तंत्र का जड़त्व नगण्य होता है। इसलिए यह द्रुत उच्चावचता का अनुसरण कर सकता है। इसके मुख्य भेद इस प्रकार हैं :—

1. विद्युत् चुंबकीय दौलनलेखित्र—अल्प विभव और अन्य आवृत्तियों के लिए उपयुक्त।

2. स्थिर वैद्युत् दोनललेखित्र—उच्च विभव (2000 वोल्ट से ऊपर) और निम्न आवृत्तियों के लिए उपयुक्त।

3. कैथोड किरण दौलनलखित्र—रेडियो की अत्यंत उच्च आवृत्तियों तक के दीर्घ परिसर के लिए उपयुक्त।

overtone **अधिस्वरक**

ध्वानिकी में मूल आवृत्ति की पूर्ण संख्या का गुणक ।

मूल आवृत्ति पहला संनादी है । दूसरा संनादी पहला अधिस्वरक है और तीसरा संनादी दूसरा अधिस्वरक ।

palatal **तालव्य**

वह स्वन जिसके उच्चारण में कठोर तालु उच्चारण-स्थान का और जिह्वा का अग्र भाग करण होता है ।

टिप्पणी : संस्कृत आचार्यों तथा कुछ आधुनिक भाषाविज्ञानियों के अनुसार यह कोटि स्वर विभाजन के लिए भी प्रयुक्त होती है । जैसे—इ (तालव्य) और उ (अतालव्य) ।

palatalization **तालव्यरंजन, तालव्यीकरण**

1. सह-उच्चारण का एक भेद । दे० co-articulation.

2. (क) किसी स्वन के प्राथमिक उच्चारण के साथ-साथ ओठों को अवर्तुलित करना ।

(ख) किसी स्वन के उच्चारण पर अवर्तुलित अग्र संवृत स्वर (i) को आरोपित करना ।

3. किसी अतालव्य स्वर का ऐतिहासिक संदर्भ में तालव्य होना ।

palate **तालु**

मुंह के अंदर ऊपरी दंतमूल से लेकर कौए तक फैला अर्धवृत्ताकार छत्त-जैसा भाग जिसका बीच वाला सबसे ऊंचा भाग मूर्धा, मूर्धा और वर्त्स के बीच का भाग कठोर तालु एवं मूर्धा तथा अलिजिह्वा के बीच का भाग कोमल तालु कहलाता है । चित्र के लिए दे० Uvula.

palato-alveolar तालु-वर्त्स्य

वह स्वन जिसके उच्चारण में वर्त्स और तालु के बीच का कोई बिंदु उच्चारण-स्थान और जिह्वाफलक करण होता है । जैसे अंग्रेजी में — ʃ (श्), ʒ (ज्) ।

palatogram तालुचित्र, तालुलेख

स्वनों के उच्चारण में तालु प्रदेश के जिस स्थान विशेष पर जिह्वा का स्पर्श होता है उसे दर्शाने वाला कृत्रिम तालु का चित्र और तदनुसार रेखांकन ।

parenthesis निक्षेप चिह्न, लघु कोष्ठक

(अ) निक्षिप्त शब्द, पद, पदबंध, उपवाक्य आदि की सूचना के लिए प्रयुक्त किए गए विराम चिह्न । जैसे—दो कामे (, ,), दो डैश (— —); कोष्ठक ([ ]) आदि ।

(आ) (स्वनांतरण व्याकरण) दो कोष्ठों ( ) का वह चिह्न जो आंशिक रूप में समरूप उन दो नियमों के संलयन का बोध कराता है जिनमें से एक अंश वैकल्पिक होता है, दूसरा अनिवार्य । उदाहरणार्थ; क—>ख/—(ग) घ । यह नियम निम्नलिखित दो नियमों को समाविष्ट किए हुए है :—

(1) क———> ख/—ग घ

(2) क ———> ख/—घ

partial complementation आंशिक पूरण

दो स्वनों के बीच का ऐसा संबंध जिसमें वे कुछ परिवेशों में परस्पर व्यावर्तक हों और शेष में व्यतिरेकी ।

passive chamber (s) **निष्क्रिय कोष्ठ**

वह वायु कोष्ठ जिसका प्रयोग किसी स्वन के उच्चारण में नहीं होता, अर्थात् जहां से वायु प्रश्वसित नहीं होती ।

pattern **अभिरचना**

लघुतम भाषिक इकाइयों का समूह तथा उनके प्रयोग संबंधी वितरण की व्यवस्था ।

स्वन के उच्चारण-अभ्यास का आधार अभिरचना ही होती है ।

pattern congruity **अभिरचना समता**

किसी भाषा के स्वनिमों या रूपों की व्यवस्था में अंतर्निहित सममिति । यह सममिति स्वनिम विशेष को या कुछ स्वनिमों को एकल स्वनिम या स्वनिम-गुच्छ सिद्ध करने का आधार बनती है । उदाहरण के लिए हिंदी के स्पर्श स्वन निम्नलिखित रूप से अभिरचना समता की ओर संकेत करते हैं :

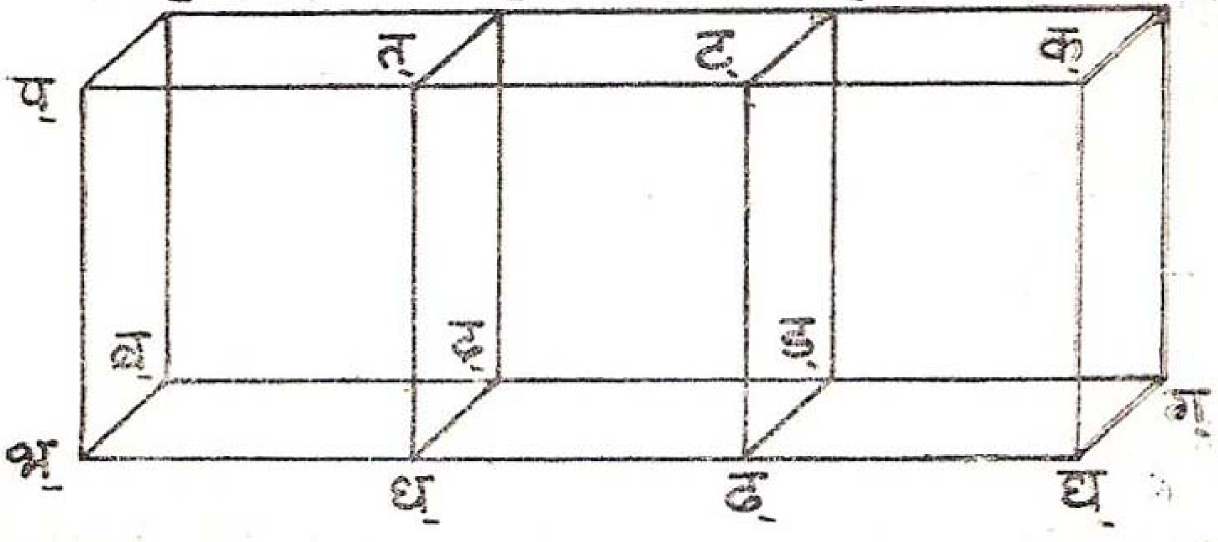

अब यदि स्पर्श-संघर्षी स्वनों का प्रश्न उठाया जाए कि वे एकल स्वनिम हैं या स्वनिम गुच्छ तो अभिरचना समता का सिद्धांत यह इंगित करता है कि वे भी इसी अभिरचना का अनुसरण करते हैं, जैसे—

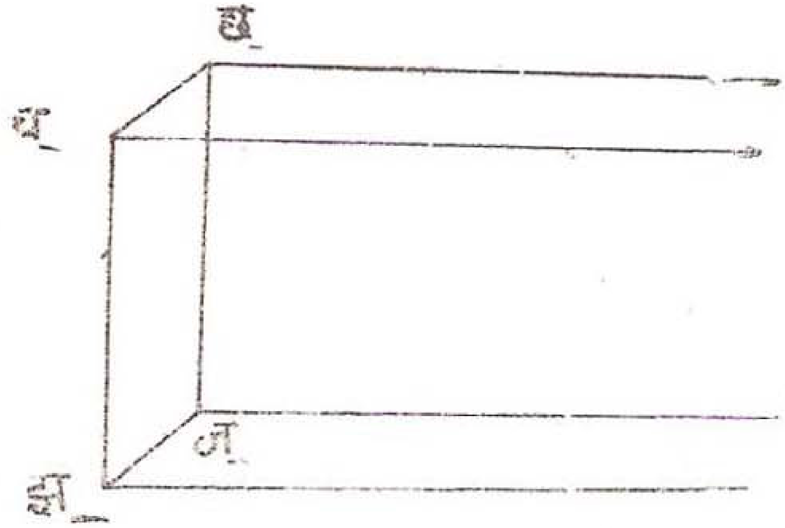

चित्र 15

इस सिद्धांत के अनुसार चवर्ग के इन स्वनों को भी एकल स्वन मानना चाहिए।

pattern gap **अभिरचना रिक्ति**

अभिरचना समता में किसी भाषिक इकाई की अनुपस्थिति । उदाहरणार्थ सिंधी भाषा में यदि अभिरचना समता निम्नलिखित है :

ग्‌ ज्‌ ड्‌ ब्‌

ग ज ? ब

तो "ड्" का संवादी अंतःस्फोटी ।ड। अभिरचना रिक्ति का उदाहरण है ।

peak **शिखर**

किसी अक्षर की श्रव्यता का शीर्ष या केंद्र । दे० syllabic.

penultimate **उपधा, उपांत्य**

शब्द में अंतिम से पहला अक्षर। जैसे 'कठिनाई' में 'ना'।

perceptual phone **प्रत्यक्ष-गृहीत स्वन**

दे० audible segment.

period **1. आवर्त काल**

दे० periodic time.

2. पूर्ण विराम

दे० full stop.

periodic **आवर्त (आवर्ती)**

जिस परिवर्ती राशि के मान तथा दिशा की पुनरावृत्ति नियत अवधि के बाद बार-बार होती रहती है वह आवर्ती कहलाती है।

periodicity **आवर्तता**

किसी घटना अथवा अभिलक्षण का नियत काल या नियत दूरी के पश्चात् या किसी अन्य चर (Variable) के मान में नियत अंतर हो जाने के पश्चात् बार-दार प्रकट होने का गुण।

periodic motion **आवर्त गति**

वह गति जिसमें विस्थापन, वेग और त्वरण इस तरह निरंतर परिवर्तित होते रहते हैं कि निश्चित अवधि के बाद उनके मान फिर वही हो जाते हैं जो उस अवधि के प्रारंभ में थे और ऐसा बार-बार होता रहता है। ऐसी गति को दोलन या कंपन कहते हैं और समय की उस निश्चित अवधि को आवर्त काल कहते हैं। दे० periodic time (=period).

periodic time (=period) आवर्त काल

किसी दोलन या कंपन में होने वाले समस्त परिवर्तनों के एक पूर्ण चक्र का काल, अर्थात् वह काल जिसमें विस्थापन, वेग, त्वरण आदि पुनः अपने पूर्व मानों को प्राप्त कर लेते हैं ।

permutation क्रमपरिवृत्ति

दे० metathesis.

pharyngeal ग्रसनीय

वह व्यंजन स्वन जो ग्रसनी को संकीर्ण करके उच्चरित किया जाता है । अरबी का [ʕ] इसी प्रकार के स्वन का उदाहरण है ।

pharyngeal cavity ग्रसनी-विवर

दे० cavity, pharyngeal, pharynx.

pharyngealization ग्रसनीरंजन

1. सह-उच्चारण का एक भेद । दे० **co-articulation.**

2. (क) किसी स्वन के प्राथमिक उच्चारण के साथ-साथ जिह्वामूल को प्रत्याकर्षित करना ।

(ख) किसी स्वन के उच्चारण पर अवर्तुलित पश्च विवृत स्वर (a) को आरोपित करना ।

pharynx (=pharyngeal cavity) ग्रसनी

मुख के एकदम पीछे वह विवर जो काकल से लेकर नासा द्वार तक फैला हुआ है । दे० cavity, pharyngeal, pharyngeal cavity.

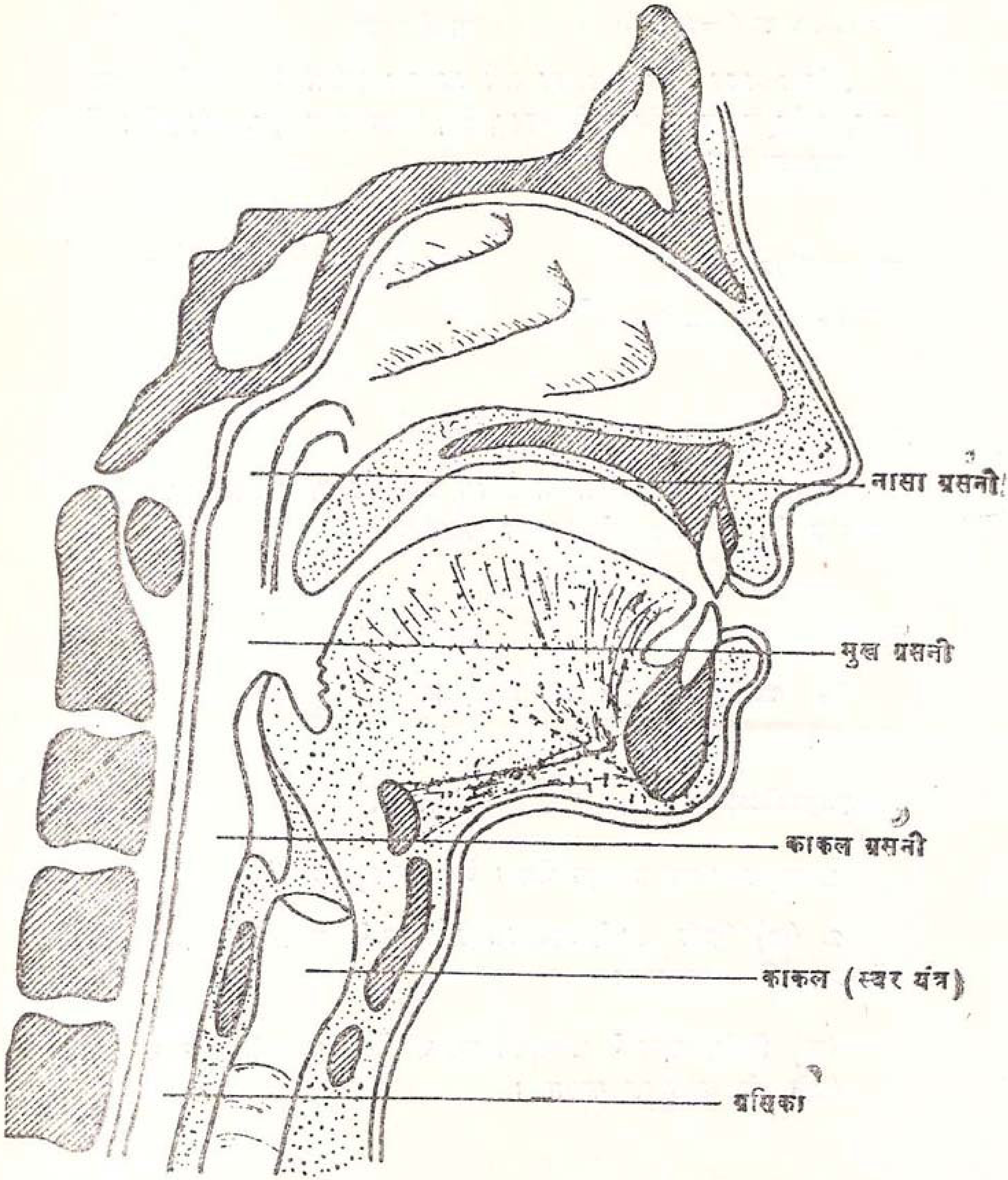

चित्र 16

phases of articulation **उच्चारण-चरण**

किसी स्वन की उच्चारण-प्रक्रिया की क्रमिक अवस्थाएं । इस प्रकार के चरण सामान्यतः तीन होते हैं। पहले में करण उच्चारण स्थान की ओर बढ़ता है । दूसरे में करण उच्चारण-स्थान पर टिका रहता है और तीसरे में करण उच्चारण-स्थान से हटता है और कभी दूसरे स्थान की ओर सर्पण करता है। पहले चरण को पूर्वश्रुति, दूसरे को धारण और तीसरे को निर्मोचन अथवा परश्रुति कहते हैं । दे० onglide, hold/retention, offglide/release.

phonation process **स्वनन प्रक्रिया**

घोषतंत्रियों के एक-दूसरे से दूर रहने, निकट आने, सटी रहने आदि स्थितियों के परिणामस्वरूप श्वासद्वार का विभिन्न आकार ग्रहण करना ।

स्वनविज्ञान की दृष्टि से घोषतंत्रियों की निम्नलिखित स्थितियां उल्लेखनीय हैं जिनके आधार पर स्वनों का वर्गीकरण किया जाता है :

(1) घोष : घोषतंत्रियों के कंपन की स्थिति ।

(2) अघोष : घोषतंत्रियों के एक-दूसरे से दूर रहने की कंपन रहितस्थिति ।

(3) मर्मर : (=श्वसित घोष) घोषतंत्रियों का निचला भाग तंत्रियों के एक-दूसरे से दूर रहने के कारण अघोष की स्थिति में और ऊपरी भाग निकट रहने के कारण प्रकंपित स्थिति में रहता है । (अनिवार्यतः अर्ध-घोष)

(4) काकलरंजन : (=creaky voice) घोषतंत्रियों का निचला भाग तंत्रियों के एक-दूसरे से पूरी तरह सटे रहने से श्वासद्वारीय स्पर्श की स्थिति में और ऊपरी भाग निकट रहने के कारण प्रकंपित स्थिति में रहता है। (अनिवार्यतः अर्ध-घोष)

(5) [illegible] स्पर्श : (=glottal stop/catch) घोषतंत्रियों के पूरी तरह सटे रहने की स्थिति [illegible] (अनिवार्यतः अघोष)

(6) उपांशु : (फुसफुसाहट) घो तंत्रियाँ ऊपर या तो बहुत ही निकट अथवा एकदम सटी और तनी होती हैं (जिससे उनमें प्रकंपन संभव नहीं होता) और नीचे इतनी खुली होती है कि इस भाग में भी प्रकंपन संभव नहीं होता । (अनिवार्यतः अघोष)

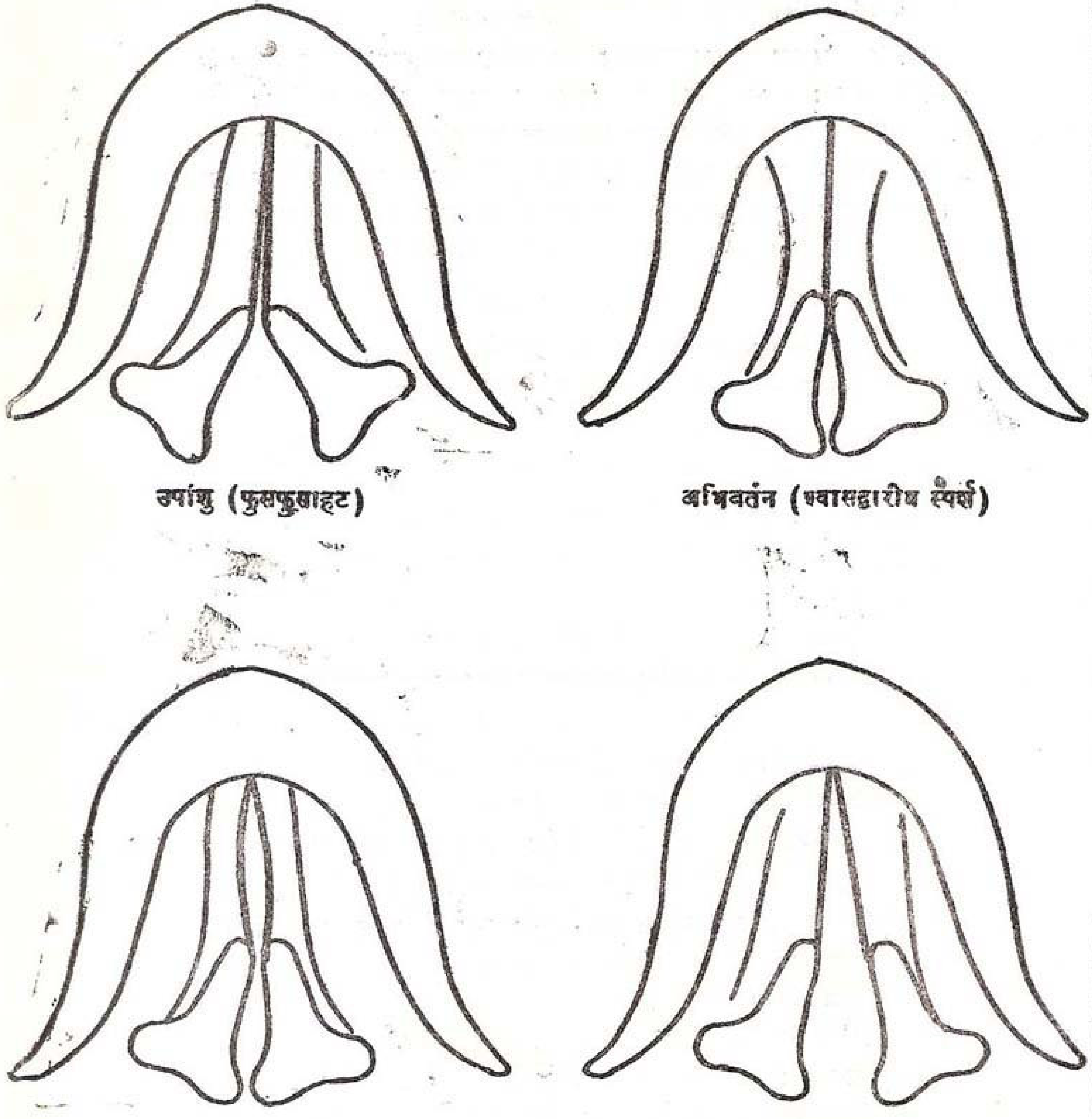

Phonation Process

चित्र 16.1

phonation type **स्वनन प्ररूप**

स्वनन-प्रक्रिया के आधार पर घोष तंत्रियों की विभिन्न स्थितियाँ । दे० phonation process.

phone **स्वन**

स्वनिक स्तर की न्यूनतम इकाई । (अ) जब एक या एक से अधिक स्वनिक खंड समान उच्चारण-प्रक्रिया से उच्चरित हों तथा श्रुतिग्राह्य रूप में एक-जैसे हों तो उन्हें स्वन की संज्ञा दी जाती है । (आ) प्रत्यक्षगृहीत स्वनिक खंड; स्वनिक खंडों का वह वर्ग जिसके सदस्य प्रत्यक्ष दृष्टि से समरूप हों । दे० segment.

phoneme **स्वनिम**

1. संकल्पनात्मक दृष्टि से :

प्रकार्यात्मक व्यतिरेकी स्वन ।

2. संक्रियात्मक दृष्टि से :

स्वनात्मक रूप में सदृश वाक्-स्वनों का वह वर्ग जिसमें समाविष्ट स्वन या तो पूरक वितरण में होते हैं या मुक्त परिवर्तन में, जैसे हिंदी के 'लाल' और 'राल' के ल्, र् स्वनिम हैं, जबकि जापानी में ये उपस्वन हैं ।

टिप्पणी :— संरचनात्मक भाषाविज्ञान के स्वनिम से भिन्नता दिखाने के लिए रचनांतरण व्याकरण में स्वनिम को **व्यवस्थापरक स्वनिम** भी कहा गया है ।

3. प्रजनक स्वनप्रक्रिया की दृष्टि से :

व्यवस्थापरक स्वनिम भी व्यतिरेकी स्वनिक इकाई है । परंतु व्यतिरेक बाह्य धरातल पर न होकर आभ्यांतर धरातल पर होता है । वाङ्मय [vanmaya] और चिन्मय [cinmaya] के युग्म के आधार पर अर्थात् वर्गिकी स्तर पर ङ और न् स्वनिम हैं जबकि आभ्यांतर स्तर पर व वाक्+मय और चित् +मय होने के कारण ङ और न् स्वनिम नहीं हैं । इस मत के मानने वालों का कहना है कि जिस प्रकार pin में आद्य व्यंजन [p^h] और spin में [p] है और ये दोनों उपस्वन के रूप में प्रतिफलित होतें हैं और इन दोनों उपस्वनों का प्रतिनिधित्व करने वाली अमूर्त इकाई के स्तर पर स्वनिम के रूप में मान्यता दी जाती है । इसी प्रकार electric के अंत्य व्यंजन [^{k}] और electricity में परप्रत्यय के पूर्व उसके प्रतिफलित स्वन [S] भी किसी न किसी और भी उच्चतर अमूर्त इकाई से संबद्ध जाने जाने चाहिए और यह इकाई [k] स्वनिम के रूप में स्वीकार्य होनी चाहिए।

phonemically conditioned alternation — **स्वनिमाश्रित परिवर्तन, स्वनिमाश्रित विकल्पन**

वह विकल्पन जिसमें रूपिम के स्वनिमिक रूप का परिवर्तन स्वनिमात्मक परिवेश से नियंत्रित होता है। यह सामान्यतः स्वाश्रित कोटि का परिवर्तन होता है। दे० automatic alternation.

phonemic alphabet — **स्वनिमिक वर्णमाला**

ऐसी वर्णमाला जिसका प्रत्येक वर्ण किसी स्वनिम का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रकार के लेखन में उपस्वनों के लिए पृथक् वर्णों या विशेषक चिह्नों का प्रयोग नहीं किया जाता।

phonemic juncture — **स्वनिमिक संहिता**

वह संहिता जो व्यतिरेक रूप में स्वनिक स्तर पर अनुभवगम्य हो। जैसे अंग्रेजी में night+rate : nitrate, I scream : Ice+cream; हिंदी में—तेरी बरछी + ने बर + छीने हैं खलन के।

phonemics (=phonology) — **स्वनिमविज्ञान**

1. किसी भाषा के सार्थक स्वनों का व्यतिरेक और विरोध के आधार पर अध्ययन तथा उनके वितरण और व्यवस्था का विश्लेषण।

2. (प्रजनक आधार) व्याकरणिक अध्ययन का वह घटक-क्षेत्र जो वाक्य की बाह्य संरचना की स्वनिक व्याख्या प्रस्तुत करता है (इस प्ररूप अथवा मॉडल में स्वनिमिक घटक किसी वाक्य की अमूर्त वाक्यविन्यासात्मक बाह्य संरचना और स्वनिक तथ्य के बीच के संबंधों का विश्लेषण करता है)।

phonemic transcription — **स्वनिमिक लिप्यंकन**

लिप्यंकन की वह पद्धति जिसमें कथन या उक्ति की उच्चारणगत स्वनिक तथा स्वनगुणात्मक विशेषताओं को अंकित न कर केवल स्वनिमिक वर्णमाला की सहायता ली जाती है। इस लिप्यंकन को प्रायः दो आड़ी रेखाओं / / के बीच प्रस्तुत किया जाता है। इसके लिए स्थूल लिप्यंतरण शब्द का भी प्रयोग होता है। तु० phonetic transcription.

phonetic component स्वनिक घटक

प्रत्येक स्वन के अलग-अलग प्रभेदक अभिलक्षण जो एक स्वन में एकत्र हो जाते हैं पर साथ ही अलग-अलग रूप में दूसरे स्वनों के भी अभिलक्षण हो सकते हैं। उदाहरणार्थ 'प' के ओष्ठ्‌त्व, स्पर्शत्व, अघोषत्व आदि अभिलक्षण जो क्रमश: 'ब', 'क' और 'श' में प्राप्य हैं।

phonetic fraction स्वनिक प्रभाग,
(=phonetic fragment) स्वनिक उपखंड

स्वनिक खंड से छोटा कोई अंश जिसका उच्चारणात्मक विश्लेषण करना संभव है।

phonetic fragment स्वनिक उपखंड

दे० phonetic fraction.

phonetician स्वनविज्ञानी, स्वनविद्

स्वनविज्ञान का ज्ञाता या विशेषज्ञ।

phonetic law स्वन-नियम

भाषा के ऐतिहासिक विकास में कुछ विशिष्ट स्वनों में नियमित रूप से हुए ऐसे परिवर्तनों का व्यवस्थापक विवरण जो काल-विशेष, देशविशेष और परिस्थिति-विशेष में घटित हुए हों। जैसे—वर्नर नियम, तालव्य नियम, ग्रासमन नियम आदि।

phonetic modification स्वनिक रंजन

किसी वागवयव द्‌वारा स्वन की प्रकृति में सहभावी परिवर्तन। जैसे हिंदी में 'न' के 'ए' का नासिक्यरंजित 'नं' होना।

phonetics **स्वनविज्ञान**

(अ) स्वनात्मक अभिव्यक्ति के स्तर पर भाषा का अध्ययन ।

(आ) भाषाविज्ञान की वह शाखा जिसमें वाक्-स्वनों का विश्लेषण, वर्णन तथा वर्गीकरण किया जाता है । अध्ययन की मूलभूत स्थापना, लक्ष्य और साधन के आधार पर स्वनविज्ञान की तीन शाखाएं की जाती हैं– (क) उच्चारणात्मक स्वनविज्ञान, (ख) भौतिक स्वनविज्ञान, और (ग) श्रवणात्मक स्वनविज्ञान ।

(इ) प्रजनक स्वनप्रक्रिया के मानने वाले स्वनविज्ञान के दो भेदों की संकल्पना प्रस्तावित करते हैं–(क) भौतिक स्वनिक प्रस्तुति, जिसमें स्वनों के उच्चारणात्मक, श्रवणात्मक और ध्वनि-तरंगीय तथ्यों का संकलन और विश्लेषण किया जाता है (ख) व्यवस्थित स्वनिक प्रस्तुति, जिसमें वाक् को विविक्त खंड के अनुक्रम के रूप में यों समझा जाता है कि प्रत्येक खंड दूसरे से सीमित रूप में भिन्न होता है । इस प्रस्तुति में भाषा विशेष के अध्ययन की दृष्टि से उपस्वनों का विवेचन किया जाता है ।

phonetic script **स्वनिक लिपि**

वह लिपि जिसमें प्रत्येक स्वन के लिए एक लिपि-चिह्न हो ।

phonetic segment **स्वनिक खंड**

दे० segment.

phonetic substitution **स्वनिक आदेश, स्वनादेश**

वह भाषिक प्रक्रिया जिसमें वक्ता किसी विदेशी शब्द के स्वन या स्वनों का यथावत् उच्चारण न कर अपनी भाषा में उससे मिलते-जुलते वाक्-संचलन के अनुसार उच्चारण करे । उदाहरणार्थ हिंदी भाषा-भाषी अंग्रेजी train के 't' का वर्त्स्य स्वन के रूप में उच्चारण न कर उसका मूर्धन्य उच्चारण 'ट' करते हैं ।

phonetic transcription स्वनिक लिप्यंकन

लिप्यंकन की वह पद्धति जिसमें कथन या उक्ति की सभी उच्चारणगत स्वनिक तथा स्वनगुणात्मक विशेषताओं को स्वनों और विशेषक चिह्नों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। इस लिप्यंकन के लिए बड़े कोष्ठक [ ] का प्रयोग होता रहा है। इसके लिए सूक्ष्म लिप्यंकन शब्द का भी प्रयोग होता है। तु० phonemic transcription.

phonological criteria स्वनिमिक निकष, स्वनिमिक कसौटी

(अ) नियमन के वे आधार जिनसे किसी भाषा की स्वन सामग्री को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

(आ) नियमन के वे आधार जिनसे स्वनों को स्वनिमों के वर्गों में बांधा जाता है।

phonology स्वनप्रक्रिया

(अ) दे० phonemics.

(आ) ऐतिहासिक स्वनविकास।

phrasal stress पदबंधीय बलाघात

किसी वाक्य में वाक्यांश विशेष पर दिया जाने वाला ऐसा बलाघात जो अर्थ-परिवर्तन का कारण बनता है। जैसे हिंदी में–'मैं आज दिल्ली जाऊंगा।' इस वाक्य के प्रथम पद पर बल देने से यह ध्वनित होता है "मैं ही जाऊंगा" कोई और नहीं; "आज" पर जोर देने से अर्थ होगा कि "आज ही जाऊंगा" किसी अन्य दिन नहीं। इसी प्रकार अन्य पदों पर बल देने से भी अर्थान्तर हो जाता है।

टिप्पणी : सामान्य बलाघात अक्षर पर होता है और उसकी सार्थकता रूपिम और शब्द के धरातल पर सिद्ध रहती है, जबकि तार्किक बलाघात का संबंध अनुतान से बना रहता है।

physical phonetics **भौतिक स्वनविज्ञान**

दे० acoustic phonetics.

pictogram **चित्रलेख**

दे० pictograph.

pictograph (=pictogram) **चित्रलेख**

किसी सुनिश्चित वस्तु के लिए लेखन में प्रयुक्त होनेवाला पूर्ण या संक्षिप्त चित्र अथवा उसका द्योतक प्रतीक । जैसे–"पर्वत" के लिए

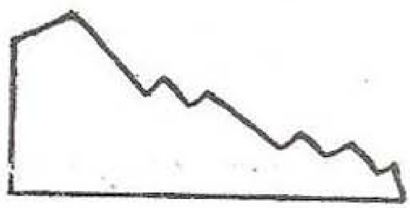

अथवा

pictography **चित्रलेखन, चित्रलिपि**

लेखन की वह पुरातन विधि या लिपि जिसमें वस्तुओं के लिए पूर्ण अथवा अपूर्ण चित्रों का या उनके प्रतीकों का प्रयोग किया जाता था ।

pitch **स्वराघात, सुर**

1. (अ) आवृत्ति के धरातल पर परिमाप्य वह खंडेतर गुण जो वस्तुनिष्ठ होता है ।

(आ) किसी भी ध्वनि का वह श्राव्य गुण जिसके कारण श्रोता उस ध्वनि को तरंगीय परिणतियों के ब्यौरों में गए बिना सापेक्ष रूप में उसके आरोही-अवरोहीपन के पैमाने से ऊंचा या नीचा सुन सकता है ।

(इ) ध्वनि संवेदन का वह व्यक्तिनिष्ठ अभिलक्षण जिसके द्वारा मनुष्य का कान सांगीतिक स्वरग्राम में उस ध्वनि का स्थान निर्धारित करता है । इसी अभिलक्षण को तारत्व (pitch) भी कह सकते हैं। यह ध्वनि की आवृत्ति के अतिरिक्त स्वर की तीव्रता और सांगीतिक स्वरूप पर भी आश्रित होता है ।

2. शब्द संरचना के धरातल पर प्रतिफलित स्वराघात तान कहलाता है, जबकि वाक्य संरचना के धरातल पर प्रतिफलित अनुतान । दे० tone और intonation.

pitch level. **स्वराघात स्तर, सुर स्तर**

स्वराघात या सुर के मानगत भेदों को व्यतिरेकी स्वनिमिक मान के रूप में निर्धारित करने की संकल्पना ।

स्वराघात स्तर निरपेक्ष न होकर सापेक्ष होता है जिसे उपरिलेख संख्या द्वारा व्यक्त किया जाता है । जैसे–/1/, /2/, /3/ ।

सामान्यत: इसके तीन भेद किए जाते हैं–(अ) उच्च स्वराघात, (/3/), (आ) मध्य स्वराघात (/2/), (इ) निम्न स्वराघात (/1/) । इनमें से मध्य का मूल्य सामान्य और तटस्थ होता है जिसके संदर्भ में उच्च और निम्न परिभाषित किए जाते हैं। दे० high-level pitch, mid-level pitch और low-level pitch.

टिप्पणी : संस्कृत में उदात्त, अनुदात्त और स्वरित तीन स्वराघात स्तर हैं ।

pitch phoneme **स्वराघात स्वनिम, सुर स्वनिम**

दे० toneme.

place of articulation **उच्चारण-स्थान**

स्वनों के उच्चारण में प्रयुक्त होने वाला वह वागवयव जिसकी ओर करण या तो अग्रसर होता है या जिसका वह स्पर्श करता है । संस्कृत व्याकरण ग्रंथों के अनुसार करण चल हैं और स्थान ध्रुव है (यद् उपक्रम्यते तत्स्थानम् : येनोपक्रम्यते तत्करणम्) ।

प्रमुख उच्चारण-स्थान ये हैं : (अ) ऊपरी ओठ, (आ) ऊपरी दांत, (इ) वर्त्स या मसूड़ा, (ई) कठोर तालु, (उ) मूर्धा, (ऊ) कोमल तालु, (ऋ) अलि-जिह्वा, या कौआ, (ए) ग्रसनी, और (ऐ) घोषतंत्री का मुख ।

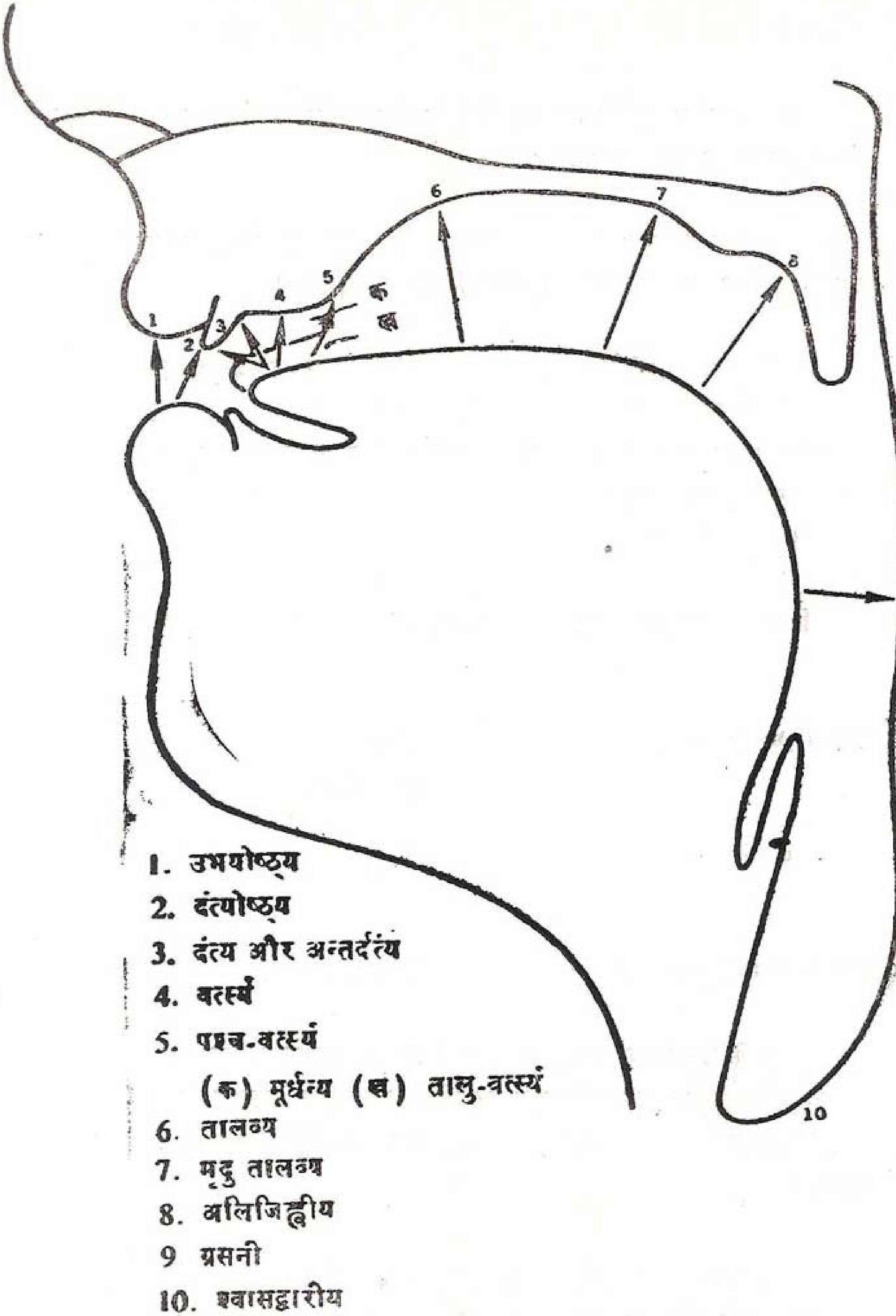
1
2
3
4
5
क
ख
6
7
8
10
1. उभयोष्ठ्य
2. दंत्योष्ठ्य
3. दंत्य और अन्तर्दंत्य
4. वर्त्स्य
5. पश्च-वर्त्स्य
(क) मूर्धन्य (ख) तालु-वर्त्स्य
6. तालव्य
7. मृदु तालव्य
8. अलिजिह्वीय
9 ग्रसनी
10. श्वासद्वारीय

चित्र 17

plain सपाट, तीक्ष्ण

दे० flat (non-flat), sharp (non-sharp).

plosion स्फोटन

वायुप्रवाह का अवरुद्ध होकर निर्मोचित होना।

plosive 1. स्फोटक

फुप्फुसीय वायुप्रवाह तंत्र के अवरोध के अनंतर उसके निर्मोचन से उत्पन्न कोई व्यंजन स्वन। इस प्रकार के स्वन अघोष तथा घोष दोनों हो सकते हैं।

2. स्पर्श

दे० stop.

plus juncture धन संहिता

दे० open juncture.

point of articulation उच्चारण-स्थान

(अ) मुखविवर अथवा ग्रसनी में अधिक से अधिक संकुचन अथवा संचार का स्थान जिससे स्वनों का उच्चारण होता है।

(आ) किसी करण द्वारा उपगम्य क्षेत्र जिसे वह स्पर्श करता है या जिसके समीप पहुंचता है या समीप पहुंचने की कोशिश करता है तथा जिसके फलस्वरूप स्वनों का उच्चारण होता है। दे० place of articulation.

टिप्पणी : उच्चारण-स्थान स्वनों के वर्गीकरण का आधार होता है।

polysyllabic word बहु
(=multisyllabic word)

दो से अधिक अक्षरों वाला शब्द। जैसे हिंदी में–आइए, समझदारी आदि

positional variant **स्थानाश्रित परिवर्त (=सोपाधिक परिवर्त)**

दे० conditional variant.

post dental **पश्च-दंत्य**

(अ) (विशेषण) ऊपर के दांतों के पिछले भाग से संबंधित।

(आ) (संज्ञा) ऊपर के दांतों के पिछले भाग से उच्चरित स्वन।

post-palatal **पश्च-तालव्य**

(अ) (विशेषण) कठोर तालु के पिछले भाग से संबंधित।

(आ) (संज्ञा) कठोर तालु के पिछले भाग से उच्चरित स्वन।

post-velar **पश्च-कोमलतालव्य, पश्च-मृदुतालव्य**

(अ) (विशेषण) कौमल तालु के पिछले भाग से संबंधित।

(आ) (संज्ञा) कोमल तालु के पिछले भाग और जिह्वा के संपर्क से उच्चरित स्वन।

pracaya **प्रचय**

दे० grave accent.

prayatna **प्रयत्न**

दे० manner of articulation.

pre-dental **दंत-जिह्वाग्रीय**

जिह्वा के अग्रभाग द्वारा ऊपर के दांतों का स्पर्श करने से उच्चरित व्यंजन।

prenasalization — **पूर्वनासारंजन, पूर्वनासिक्यरंजन**

किसी व्यंजन के पूर्वांश को नासिक्यरंजित करना । इस प्रकार से रंजित व्यंजन को (^{m}) या (^{n}) चिह्न से दिखाया जाता है । जैसे–(^{n}d), (^{m}b).

prepalatal — **अग्रतालव्य**

(अ) (विशेषण) कठोर तालु के अग्रभाग से संबंधित ।

(आ) (संज्ञा) जिह्वा के अग्रभाग द्वारा तालु के अग्रभाग की ओर उठने के कारण उच्चरित व्यंजन ।

prevelar — **पूर्वकंठ्य**

(अ) (विशेषण) कोमल तालु के अग्रभाग से संबंधित ।

(आ) (संज्ञा) कोमल तालु के अगले भाग की ओर जिह्वा के संपर्क से उच्चरित स्वन ।

primary accent — **मुख्य आघात**

एक से अधिक अक्षरों वाले शब्दों के आघातों में सर्वाधिक मुखरित आघात । उदाहरणार्थ अंग्रेज़ी में Permit/pd^{1}mi^{2}t । (संज्ञा), opportunity J^{2}pd^{4}tju^{1}: n^{5}it^{3} । में pd- और tju:- अक्षरों पर मुख्य आघात है और हिंदी में गया / gáyā / और कराना / kárānā / में yā और rā अक्षरों पर ।

primary articulator — **मौखिक करण, मुख्य करण**

मुखविवर में स्थित वह वागवयव अर्थात् जिह्वा जो स्थान विशेष का स्पर्श करके या उसकी ओर सबसे अधिक उठकर किसी स्वन का उच्चारण करता है । जैसे–जिह्वाग्र, जिह्वामध्य, जिह्वापश्च, जिह्वामूल आदि ।

primary cardinal vowel(s) — **मुख्य मान स्वर**

मान स्वरों का एक उपवर्ग । दे० cardinal vowel(s).

primary stricture **प्राथमिक निकोच**

(अ) मुखविवर में होने वाले सभी उच्चारणात्मक अवरोध जिसके फलस्वरूप स्वनों की उत्पत्ति होती है । जैसे–स्पर्श और घर्षी व्यंजन ।

(आ) एक ही स्वन में प्रयुक्त दो अवरोधों में से वह अवरोध जो सर्वाधिक मात्रा का हो । उदाहरणार्थ तालव्यरंजित द्विओष्ठ्य स्पर्श व्यंजन में द्वि-ओष्ठ्य अवरोध (जो मात्रा में तालव्य पर हुए अवरोध की मात्रा से अधिक होता है) ।

progressive assimilation **पुरःसमीकरण; पुरःसमी-भवन**

स्वन परिवर्तन की वह प्रक्रिया जिसमें दो निकटवर्ती या कभी-कभी दो अल्प दूरवर्ती स्वनों में से पहला स्वन दूसरे को प्रभावित करता है और प्रभावित होने वाला स्वन तद्रूप हो जाता है । जैसे सं० चक्र > प्रा० चक्क, सं० मुक्त > प्रा० मुक्क ।

progressive dissimilation **पुरः विषमीकरण;**
पुरः विषमीभवन

स्वन परिवर्तन की वह प्रक्रिया जिसमें दो निकटवर्ती स्वनों में से पूर्ववर्ती स्वन परवर्ती स्वन को प्रभावित कर अपने से कुछ असमान बनाता है । जैसे–सं० काक > हिं० काग, सं० कंकन > हिं० कंगन ।

pronunciation **उच्चारण**

(अ) किसी भाषिक इकाई को ठीक-ठीक अथवा स्वीकृत रूप में बोलना । इसे कोश आदि में स्वनिक वर्णमाला में लिखा जाता है ताकि अन्य भाषा-भाषी शुद्ध उच्चारण सीख सकें ।

(आ) भाषिक इकाई को बोलने का विधान ।

prosodeme **गुणस्वनिम**

दे० prosodic phoneme.

prosodic phoneme गुणस्वनिम

गुणस्वनिमविज्ञान की लघुतम इकाई । दे० prosodic phonemics.

prosodic phonemics गुणस्वनिमविज्ञान

स्वनिमविज्ञान का वह भाग जिसमें अक्षरविज्ञान, दीर्घता, आघात, तान, नासिक्यरंजन आदि स्वनगुणिमों (खंडेतर स्वनिमों) का अध्ययन किया जाता है।

prosody गुणस्वनिकी, छंद

दे० prosodic phonemics.

protensity feature कालविस्तार अभिलक्षण

अंतर्निहित अभिलक्षण का एक भेद जिसके अंतर्गत दृढ़-अदृढ़ (शिथिल) का समावेश किया जाता है । दे० inherent feature.

prothesis आदिनिहिति

किसी शब्द की आद्य स्थिति में किसी स्वर अथवा अक्षर का आगम । जैसे हिंदी के आंचलिक प्रयोगों में स्त्री > इस्त्री, स्टेशन > इस्टेशन आदि ।

टिप्पणी : यदि उच्चारण दोष के रूप में किसी अतिरिक्त स्वन का इस स्थिति में आगम हो तो उसे संस्कृत में अनुनाद कहते हैं (ह्वामि > अह्‌वामि) ।

prothetic vowel आदिनिहित स्वर

आदिनिहिति की स्थिति में आगत स्वर । दे० prothesis.

protracted प्लुत

(अ) एक मात्रा-भेद जिसमें दीर्घ से कुछ अधिक समय लगता है, जैसे 'ओम्' में 'ओ' प्लुत है। इसलिए इसे 'ओ' के बाद ३ या ऽ लगाकर लिखते हैं, जैसे—ओ३म् ।

(आ) स्वर के उच्चारण की वह अति दीर्घ मात्रा अथवा इस तरह उच्चरित स्वर जो अर्थ-भेद प्रकट करता है। उदाहरणार्थ मेवाड़ी (राजस्थानी बोली विशेष) में जा........ई (जाएगी) : जाई (उत्पन्न अर्थात् पुत्री) ।

pulmonic **फुप्फुसीय (व्यंजन)**

वह व्यंजन जिसमें फेफड़ा प्रारंभक का काम करता है। दे० initiator.

pulmonic airstream mechanism **फुप्फुसीय वायु-प्रवाहतंत्र**

वायु-प्रवाह का वह तंत्र जिसमें फेफड़ों के संकोचन से वायु की दिशा बहिर्मुखी होती है। सामान्यत: बोलने और गाने में यही प्रक्रिया काम में आती है।

प्रारंभक = फेफड़े; वायुदिशा = बहिर्मुखी ।

pulmonic cavity **फुप्फुसीय विवर, फेफड़े**

दे० cavity.

punctuation (marks) **विराम-चिह्न**

लिखित या मुद्रित सामग्री में अर्थ-स्पष्टता के लिए तथा संरचना-विभाजन के लिए प्रयुक्त होनेवाले विभिन्न मानक चिह्न या संकेत। जैसे हिंदी में : अल्प-विराम (,), अर्धविराम (;), पूर्णविराम (।), प्रश्न-सूचक चिह्न (?), विस्मयादिबोधक चिह्न, (!), विवरण चिह्न (:—), उद्धरण चिह्न (" "), योजकचिह्न (—) आदि।

qualitative ablaut **गुणात्मक अवश्रुति**

दे० qualitative gradation.

qualitative accent **गुणात्मक आघात**

आघात का वह पक्ष जो अक्षर के स्वरूप में परिवर्तन लाता है।

qualitative gradation (qualitative ablaut) **गुणात्मक अवश्रुति**

अवश्रुति का वह भेद जिसका संबंध स्वरों के संवृत-विवृत, अग्र-पश्च आदि स्वरूप-भेद से होता है। संस्कृत व्याकरण में गुण, वृद्धि और संप्रसारण इसके अंतर्गत आते हैं। जैसे—अनैषीत, निनिहन, नीतम, नेता।

quantitative ablaut मात्रात्मक अवश्रुति

दे० quantitative gradation.

quantitative accent मात्रात्मक आघात

आघात का वह पक्ष जो अक्षर की कालमात्रा में परिवर्तन लाता है। जैसे—दीर्घता, ह्रस्वता आदि।

quantitative gradation मात्रात्मक अवश्रुति
(quantitative ablaut)

अवश्रुति का वह भेद जिसका संबंध स्वर के ह्रस्वीकरण, दीर्घीकरण आदि मात्रा भेद से होता है जैसे—खीचना:''खीचना, बूढ़ा:बुढ़ापा, भीख :भिखारी।

quantity mark मात्रा चिह्न

स्वर या संध्यक्षर के ऊपर अंकित वह निशान जो यह सूचित करता है कि संबंधित स्वन का उच्चारण ह्रस्व होगा या दीर्घ। जैसे—रोमन लिपि में दीर्घता-सूचक चिह्न (—) Rām (राम)।

question mark प्रश्नचिह्न, प्रश्नवाचक चिह्न

लेखन तथा मुद्रण में प्रयुक्त वह विरामचिह्न (?) जो प्रत्यक्ष प्रश्नसूचक वाक्य के अंत में अंकित किया जाता है। जैसे हिंदी में—इस पुस्तक का क्या मूल्य है ?

quotation marks उद्धरण चिह्न

प्रत्यक्ष कथन को इंगित करनेवाले विरामचिह्न जिन्हें अंग्रेजी, हिंदी में (“..............”) रूप में तथा कुछ अन्य भाषाओं में („......“) अथवा (<<.........>>) रूप में चिह्नित किया जाता है। ये चिह्न किसी लेख में पुस्तक, कविता या कहानी के शीर्षक तथा नवीन तकनीकी शब्द आदि के लिए भी प्रयुक्त होते हैं।

rakta (coloured) रक्त

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) अनुनासिकीकृत अथवा अननासिकता से रंजित। (अनुनासिकी वर्णोरक्त इत्युच्यते)।

10—353 मानव संसाधन विकास मंत्रालय/88

rarefactive विरलित

अंतर्गामी वायुप्रवाह की प्रक्रिया के द्वारा उच्चरित होने वाला ऐसा स्वन जिसके उच्चारण में अनुनाद-प्रकोष्ठ के वायु की सघनता कम हो जाती है। दे० ingressive (rarefactive) air stream.

real phone कर्णग्राह्य स्वन, श्रुतिगोचर स्वन

दे० audible segment.

real segment वर्णग्राह्य खंड, श्रुतिगोचर खंड

दे० audible segment.

received pronunciation (R.P). शिष्ट उच्चारण (शि०उ०)

(अ) पूर्णत: शिक्षित और शिष्ट (उच्च) मध्यवर्गीय समाज की मानक भाषा।

(आ) अंग्रेज़ी भाषा के संदर्भ में उच्चारण का वह रूप जो पब्लिक स्कूलों, आक्सफोर्ड तथा कैंब्रिज विश्वविद्यालयों तथा इंग्लैंड के न्यायालयों में प्रचलित है।

टिप्पणी : राजशेखर ने काव्य मीमांसा में बताया है कि संस्कृत का शुद्ध उच्चारण मध्य देश के लोगों की भाषा से होता है।

reciprocal assimilation अन्योन्य समीकरण,
परस्पर समीकरण,
परस्पर समीभवन,
अन्योन्य समीभवन

आस-पास के दो व्यंजनों का ऐसा समीकरण जो एक-दूसरे को आंशिक रूप से प्रभावित करके किसी तीसरे रूप को स्थापित करता है जिसमें दोनों के अभि-लक्षण रहते हैं। जैसे–सं० साय <अप० सच्च, सं० बुद्ध्य> अप० वुज्झ आदि।

reduced syllable ह्रसित अक्षर

अक्षर के सामान्य स्वरूप का क्षीण रूप । जैसे–सं० गम्+त्वा>गत्वा ।

reduced vowel ह्रसित स्वर

स्वर-अवश्रुति व्यवस्था में स्वर के सामान्य स्वरूप से क्षीण रूप । जैसे–सं० यज्ञ:>इष्ट, एति:>इत्व आदि ।

reduction ह्रास, ह्रसन

1. किसी स्वनिम के उच्चारण में सामान्यतया लगनेवाले समय में कमी; जैसे संस्कृत अन्न, दत्त आदि अकारांत शब्दों का हिंदी में अंतिम 'अ' का लघुकृत रूप में उच्चारण ।

2. ऐसा शब्द जिसके उच्चारण या लेखन में उसके किसी अंश का लोप होता है । जैसे हिंदी में–खरीद+दार> खरीदार ।

(अ) कुछ भाषाओं में प्रबल बलाघात के फलस्वरूप निकटवर्ती बलाघातहीन अक्षर का स्वर या तो अत्यंत क्षीण हो जाता है या अनुच्चरित ही रह जाता है । जैसे–बाज़ार> बज़ार, बारीक> बरीक, आमीर >अमीर, गोपाल> गुपाल ।

(आ) प्रजनक व्याकरण में वह रूपस्वनिमिक नियम जिसके अनुसार दो रूपों की संधि के फलस्वरूप उनमें से एक या दोनों रूपों के स्वरूप में कमी आ जाती है । जैसे–पानी+घट–––> पनघट, घोड़ा+सवार–––>घुड़सवार ।

redundancy rule(s) (=morpheme structure (MS) rule(s) व्यतिरिक्तता नियम, अन्यथासिद्धता नियम

प्रजनक स्वनप्रक्रिया में स्वनप्रक्रिया संबंधी वे नियम जो किसी रूपिम अथवा शब्द के अन्यथा सिद्ध स्वनिमिक अभिलक्षणों को व्यक्त करते हैं । इन्हें रूपिम संरचना (रु० सं० /एम०एस०) नियम भी कहते हैं । इनके दो भेद हैं–(1) खंड (=स्वन) व्यतिरिक्तता नियम/खंड अन्यथासिद्धता नियम (2) अनुक्रम व्यतिरिक्तता नियम/अनुक्रम अन्यथासिद्धता नियम । खंड व्यतिरिक्तता नियम को 'रिक्त पूरक नियम' भी कहते हैं । दे० segment redundancy rule(s) और sequence redundancy rule.

redundancy **व्यतिरिक्तता, अन्यथासिद्धि, समधिकता**

सूचना का वह अंश जो पूर्व-अनुमेय होने के कारण संप्रेषण की दृष्टि से अनपेक्षित है। यह सूचना अथवा अवगम का प्रतिलोम है। दे० information.

region of articulation **उच्चारक-क्षेत्र**

दे० place of articulation.

register tone **समतान**

किसी तानप्रधान भाषा की वह तान-व्यवस्था जिसमें एक तान को दूसरी तान से अलग विविक्त या चिह्नित रूप में पहचाना जा सकता है। इसके ठीक उलटी व्यवस्था परिरेखात्मक तान व्यवस्था होती है। तान की यह प्रकृति लुगांडा, ज़ुलु और योरूबा आदि अफ्रीकी भाषाओं में मिलती है। योरूबा का एक उदाहरण इस प्रकार है :–

'ओ वा 'वह आता है', 'ओ वा 'उसने देखा' 'ओं वा 'वह है'।

वैदिक संस्कृत में 'न' 'न' में दोनों अलग-अलग अर्थ 'के समान' तथा 'नहीं' हैं। चित्र के लिए देखिए Contour tone.

regressive assimilation **पश्च समीकरण, पश्च समीभवन**

स्वन-परिवर्तन की वह प्रक्रिया जिसमें निकटवर्ती स्वनों में से परवर्ती स्वन पूर्ववर्ती स्वन को अपने सदृश कर लेता है। जैसे–सं० कर्म पं० कम्म, सं० शर्करा > हिं० शक्कर।

regressive dissimilation **पश्च विषमीकरण, पश्च विषमीभवन**

स्वन परिवर्तन की वह प्रक्रिया जिसमें दो निकटवर्ती स्वनों में से परवर्ती स्वन पूर्ववर्ती स्वन को प्रभावित कर अपने से कुछ असमान बनाता है। जैसे–सं० मुकुल > प्रा० मुउल, सं० मुकुट > प्रा० मउड आदि।

regular alternation **नियमित परिवर्तन**

(अ) किसी निर्दिष्ट स्वनिक परिवेश में प्राय: होनेवाला परिवर्तन । स्वाश्रित परिवर्तन मुख्यत: नियमित होता है । दे० automatic alternation.

(आ) (प्रजनक स्वनप्रक्रिया) शब्दों में होने वाले ऐसे नियमित परिवर्तन जो स्वनप्रक्रियात्मक नियमों में बांधे जा सकें ।

relative duration **सापेक्ष (काल) मात्रा**

किसी स्वन की अन्य स्वन अथवा स्वनों के संदर्भ में नापी जाने वाली मात्रा ।

अन्य स्थितियां समान होने पर (i) की मात्रा (e) की तुलना में और (r) की मात्रा (a) की तुलना में सदा कम होती है । इस प्रकार का विवरण सापेक्ष मात्रा का विवरण कहलाता है । दे० duration.

release **निर्मोचन**

किसी स्वन के उच्चारण का वह चरण जिसमें करण उच्चारण-स्थान से विलग हो जाता है और विश्रांत हो जाता है और वायु छोड़ दी जाती है । दे० phases of articulation.

remote dissimilation **असन्निहित विषमीकरण, व्यवहित विषमीकरण, असन्निहित विषमीभवन, व्यवहित विषमीभवन**

ऐसा स्वन-परिवर्तन जिसमें दो दूरस्थ समान स्वनों में से एक अपना स्वरूप छोड़कर भिन्न या विषम बन जाता है । जैसे—ला० turtur अं० turtle ला० perigrenus > इता० pellegrino.

resonance **अनुनाद**

जब एक निर्दिष्ट आवृत्ति के स्पंदन उत्पन्न करने की सहज प्रवृत्ति वाला कोई तंत्र किसी ऐसे दूसरे तंत्र से परिचालित होता है जो उसी के सदृश आवृत्ति के स्पंदन उत्पन्न करता है तो अपेक्षाकृत दीर्घतर आयाम के स्पंदन उत्पन्न हो जाते हैं । इस प्रकार स्पंदनों के आयाम के बढ़ने की परिघटना को अनुनाद कहते हैं ।

resonance chamber **अनुनाद कोष्ठ**

वह कोष्ठ जिसमें अनुनाद उत्पन्न होता है। दे० resonance.

resonance curve **अनुनाद वक्र**

विभिन्न आवृत्तियों की अनुक्रिया के रूप में किसी अवयव द्वारा उत्पन्न किए गए स्पंदनों के सापेक्ष आयामों को संकेतित करने वाली रेखा।

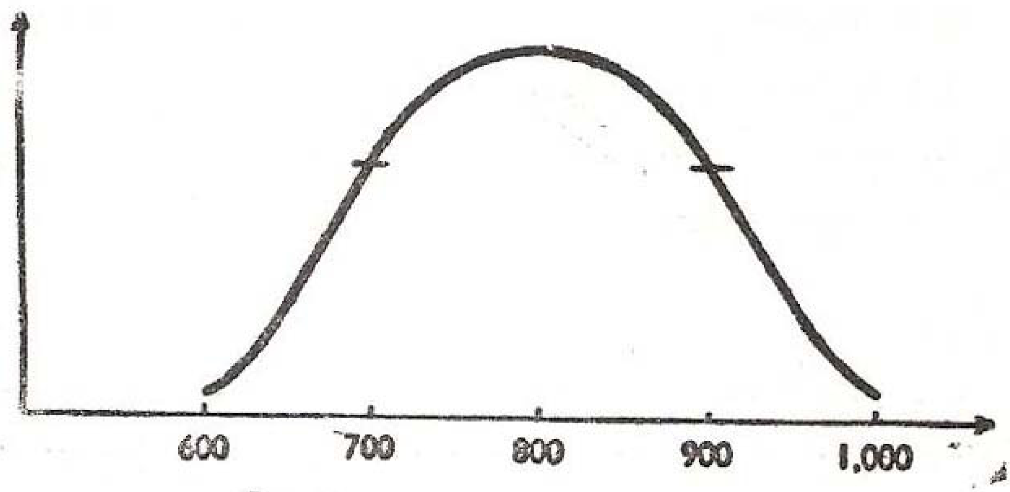

अनुनादक का वक्र

चित्र 18

ऊपर के चित्र के अनुसार अवयव का अनुनादक वक्र यह प्रकट करता है कि वह अवयव 800 साइकल प्रति सेकंड पर सबसे अधिक अनुनादित होगा, जबकि इसकी तुलना में 700 और 900 साइकल प्रति सेकंड पर अनुनाद की मात्रा उसकी (800 साइकल प्रति सेकंड पर होने वाले अनुनाद) आधी होगी।

resonant **अनुनादी**

वह स्वन जिसमें अनुनाद होता है। इसके उच्चारण में न तो स्थानीय घर्षण होता है (गुहिका घर्षण हो सकता है) और न वायुधारा में पूर्ण अवरोध ही।

(ध्वानिक दृष्टि से) वह स्वन जिसके उच्चारण में घोष-तंत्रियों के कारण स्पंदित वायु-तरंग अधिश्वासद्वारीय गुहिकाओं में प्रवलित होती है। समें स्वर, अर्धस्वर, नासिक्य, प्रकंपित और पार्श्विक सम्मिलित हैं।

resonator अनुनादक

दे० resonance chamber.

retention (=hold) धारण

दे० hold.

retraction प्रत्याकर्षण

स्वन के उच्चारण में निर्धारित स्थिति से जिह्वा को पीछे खींचना।

retroflex (consonant) प्रतिवेष्टित, मूर्धन्य (व्यंजन)

वह व्यंजन जिसके उच्चारण में करण जिह्वाग्र और उच्चारणस्थान कठोर-तालु का कोई भाग होता है तथा प्रयत्न के रूप में जिह्वाग्र को उलटकर प्रतिवेष्टित रूप में उच्चारण-स्थान की ओर अग्रसर होना पड़ता है। संस्कृत तथा हिंदी में ट वर्ग (ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्) तथा ष् आदि।

टिप्पणी : सूक्ष्म दृष्टि से मूर्धन्य और प्रतिवेष्टित में अंतर किया जाना संभव है। प्रतिवेष्टित स्वन प्रयत्न पर आधारित हैं और मूर्धन्य स्थान पर।

retroflexed मूर्धन्यरंजित (स्वन), नत (स्वन)

किसी स्वन का मूर्धन्यीकृत रूप। जैसे—संस्कृत राम+एन् के योग से बने 'रामेण' में 'न' स्वन का 'ण' हो जाना।

retroflexion प्रतिवेष्टन, मूर्धन्यीकरण, नति

मूर्धन्यरंजित करने की प्रक्रिया। जैसे संस्कृत में —कृष्+क्त=कृष्ट।

टिप्पणी : यह शब्द अमूर्धन्य स्वन के मूर्धन्य स्वन में ऐतिहासिक परिवर्तन के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है।

retroflex vowel प्रतिवेष्टित स्वर

ऐसा स्वर जिसके उच्चारण में जिह्वाग्र ऊपर उठकर कठोर तालु की ओर प्रत्याकर्षित होता है। जैसे—स्वीडी या नार्वेजी बोलियों में स्वनिम /tᵊ/.

rewrite sign **पुनर्लेखन चिह्न,**
बाण चिह्न,

(रचनांतरण व्याकरण) बाण के समान वह चिह्न जो 'फिर से लिखने' या 'प्रत्यक्षीकृत रूप' का बोधक है। उदाहरणार्थ क→ $ख^1 + ख^2$ का अर्थ है कि 'क' को $ख^1$ और $ख^2$ के घटक के रूप में समझिए।

rhotacism **रेफण**

(अ) रकार का सदोष उच्चारण।

(आ) अन्य व्यंजनों, सामान्यतः ल् या स् के स्थान पर (र्) का उच्चारण करना जैसे —तलवार>तरवार।

rhotacization **र-रंजन**

किसी स्वन का रेफित (र-रंजित) हो जाना।

दे० rhotacism.

rhythm **लय**

किसी भाषा के उच्चार, विराम, बलाघात और अक्षर का विशिष्ट अनुक्रम।

लय के दो भेद है—(1) बलाघाताश्रित लय (2) अक्षराश्रित लय। दे० stress-timed rhythm, syllable-timed rhythm.

rhythm group **एकलयी वर्ग**

वह उच्चार-खंड जो किन्हीं दो अनुक्रमिक लय-विरामों के बीच आता है। दे० rhythm.

rising diphthong **आरोही संध्यक्षर**

ऐसा संयुक्त स्वर जिसका पहला स्वर अनाक्षरिक अर्थात् गौण होता है और दूसरा आक्षरिक अर्थात् प्रमुख। रूसी भाषा का R[i͜q]तथा अंग्रेजी शब्द{ ¹ yät } (याट) में /yä/ आरोही संध्यक्षर के उदाहरण हैं।

rising-falling pitch — **आरोही-अवरोही स्वराघात**

broken pitch.

rising pitch — **आरोही स्वराघात**

वह स्वराघात जो अक्षरांत में प्रारंभ की तुलना में उच्च स्तरीय हो। अनुतान के स्तर पर इसे आरोही अंत्य परिरेखा कहते हैं। इसे [/] से चिह्नित करते हैं।

टिप्पणी : संस्कृत में आरोही स्वराघात को उदात्त कहते हैं।

rolled — **लोड़ित**

ऐसा व्यंजन जो जिह्वाग्र को बेलन की तरह थोड़ा लपेटकर जिह्वाग्र से दांतों का या वर्त्स का ताड़न करने से उच्चरित होता है।

Romanization — **रोमनीकरण**

किसी भाषा को रोमन लिपि में लिखना।

Romic — **रोमिक, रोमन लिप्यंकन**

स्वीट द्वारा रोमन स्वनिक लिप्यंकन को दिया गया एक नाम। उन्होंने इस पद्धति के अधिक जटिल रूप को सूक्ष्म रोमिक और सरलीकृत रूप को स्थूल रोमिक की संज्ञा दी थी।

root of the tongue — **जिह्वामूल**

जीभ की जड़। यह ग्रसनी की दीवार के समानांतर है। यह ग्रसनीय स्वनों के उच्चारण में करण का कार्य करती है। जिह्वामूल को पीछे हटाकर ग्रसनी को संकीर्ण कर वायुधारा के स्थानीय क्षोभ के कारण ग्रसनीय घर्षी उत्पन होता है। इस प्रकार के स्वन अरबी की कुछ बोलियों में मिलते हैं।

root sign — **धातु चिह्न**

वह चिह्न [√] जो शब्द के धातु रूप को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। जैसे √भाष्=बोलना।

rounded (unrounded) **वर्तुलित (अवर्तुलित)**

ओठों को गोलाकार करके (न करके) उच्चरित स्वन । स्वरों में उ, ओ, औ वर्तुलित हैं, जबकि इ, ए, ऐ, अ, आ अवर्तुलित ।

rounded vowel **वर्तुलित स्वर**

ऐसा स्वर जिसके उच्चारण में ओठों का स्वरूप गोलाकार हो जाता है । इसे वृताकार स्वर भी कहते हैं । हिंदी के "उ" और" "ओ" इसी प्रकार के स्वर हैं ।

rounding (of lips) **वर्तुलन (ओठों का)**

(अ) किसी स्वन के उच्चारण के समय ओठों को गोलाकार करना ।

(आ) विवृत स्थिति वाले स्वर (मान स्वर सं० 5) को छोड़कर पश्च स्वरों (मान स्वर सं० 6,7,8,) के लिए वर्तुलन एक स्वाभाविक अभिलक्षण है ।

(इ) अपने स्वाभाविक अभिलक्षण को छोड़ देने पर उक्त स्वन गौण मान स्वर बन जाते हैं । दे० cardinal vowel(s).

rule order **नियम क्रमिकता**

आभ्यंतर धरातल पर सिद्ध अमूर्त स्वनिम को बाह्य धरातल पर प्रतिफलित स्वनिक इकाई में रूपांतरित करनेवाले (स्वनिमिक) नियमों के अनुप्रयोग का क्रमविधान ।

samprasāraṇa **संप्रसारण**

(अ) (संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) वह स्वनिमिक प्रक्रिया जिसमें अर्धस्वर तत्स्थानीय मूल स्वर में परिवर्तित हो जाता है । जैसे संस्कृत य्,व्,र्,ल्, के स्थान पर क्रमशः इ,उ, ऋ, लृ का हो जाना ।

(आ) इस प्रक्रिया के अनुसार परिवर्तित स्वर ।

sandhi संधि

स्वन-परिवर्तन की वह प्रक्रिया जिसमें दो रूपिमों, शब्दों अथवा पदों के सन्निकर्ष की स्थिति में एक या एकाधिक स्वनिमों में से किसी स्वनिम का लोप, आगम या योग होता है। दे० internal sandhi तथा external sandhi तु० hiatus.

schwa (=shwa) श्वा

(अ) आघातहीन अवर्तुलित स्वर। जैसे along/əloŋ/का पहला स्वर।

(आ) इस आघातहीन मध्य स्वर के लिए या कभी-कभी आघातयुक्त स्वर के लिए प्रयुक्त चिह्न [ə]

script लिपि

भाषा के श्रव्य रूप को लिखित रूप में प्रस्तुत करने के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले प्रतीक-चिह्नों या लिपि-चिह्नों की व्यवस्था।

secondary accent गौण आघात

मुख्य आघात की अपेक्षा निर्बल, किंतु अल्पाघात से सबल आघात। अंग्रेजी शब्द opportunity/ɔ′p^{2}ɔ^{4}tjū^{1}:n^{3}iti^{3}/में पहले अक्षर अर्थात् ɔp का आघात।

secondary articulation द्वितीयक उच्चारण

दे० co-articulation.

secondary articulator द्वितीयक करण

उच्चारण की प्रक्रिया में सहायता गौण अवयव, जैसे अलिजिह्वा, नासिका आदि।

secondary cardinal(s) गौण मान स्वर

मानस्वरों का एक उपवर्ग। दे० cardinal vowel(s).

segment स्वनिक खंड

वाक्-ध्वनि की वह लघुतम इकाई जो किसी एक कारण अथवा कई कारणों के एक साथ संचालन से उत्पन्न होती है (इस परिभाषा के अनुसार "त्" तो एक स्वनिक खंड है ही, तालव्यरंजित अथवा औष्ठ्यरंजित "त्" भी एक ही स्वनिक खंड माना जाएगा) ।

स्वनिक खंड को ± घोष अथवा ± महाप्राण तथा अन्य द्विपक्षीय प्रतियोग के रूप में ± अभिलक्षण के रूप में ग्रहण किया जाता है ।

दे० boundary.

segment addition
(=insertion) आगम

किसी शब्द में स्वन विशेष (स्वर या व्यंजन) का सनिवेशन । इसके दो भेद हैं । (1) स्वरागम । जैसे हिंदी में—स्नान>अस्नान, बर्फ > बरफ और (2) व्यंजनागम जैसे संस्कृत में—तान्+षट्>तान्त+षट्, महान् + सन् > महान्त्+सन्, शाप > श्राप ।

segmental phoneme खंडात्मक स्वनिम

वह स्वनिम जिसकी निश्चित कालावधि होती है और जो अनुक्रमशील होता है ।

segmentation खंडीकरण, परिच्छेदन

वाग्धारा का अथवा विवेच्य सामग्री का लघुतम खंडीय स्वनिमों या रूपिमों में विभाजन । इसमें स्वनिमिक तथा रूपिमिक विश्लेषण की प्रक्रिया से सहायता ली जाती है । स्वनिक स्तर पर इसकी लघुतम इकाई स्वनिक खंड/स्वन है ।

दे० segment.

segment deletion
(=ellision
=truncation) खंड लोप

किसी शब्द से स्वन विशेष (स्वर या व्यंजन) का लुप्त हो जाना जैसे हिंदी में सिमट>सिम्टा ।

segment redundancy rule(s) **खंड व्यतिरिक्तता नियम,**
(=blank filling rules) **खंड अन्यथासिद्धता नियम**

अन्यथासिद्धता या व्यतिरिक्तता के वे नियम जो किसी खंड (=स्वन) के अभिलक्षणों का पूर्वानुमान करते हैं और जो परिवेशी खंडों (= स्वनों) से नियंत्रित नहीं होते। यथा [नासिक्य] → [+ घोष] । इसे "यदि-तब" (If—then=I—T) स्थिति में निम्नलिखित रूप में व्यक्त किया जा सकता है :

यदि (I) : [+नासिक्य] तब (T) : [+घोष].

semi-colon **अर्धविराम**

एक विराम चिह्न [;] जिसका प्रयोग अल्पविराम से कुछ अधिक विराम के लिए किया जाता है ।

semi-consonant **अर्ध-व्यंजन**

(अ) व्यंजन के रूप में प्रयुक्त होने वाला **स्वरात्र या स्वर-ध्वनि** ।

(आ) आक्षरिक व्यंजन ।

(इ) स्वनिक धरातल पर व्यंजन और स्वनिमिक धरातल पर स्वर । जैसे-संस्कृत ॠ, लृ ।

टिप्पणी : इसके लिए संस्कृत में अंतःस्थ का प्रयोग किया जाता है ।

semi-plosive **अर्ध-स्फोटी**

दे० affricate.

semi-vowel **अर्धस्वर**

(अ) व्यंजन के रूप मे प्रयुक्त होने वाला स्वरात्र अथवा स्वरध्वनि ।

(आ) आक्षरिक व्यंजन ।

(इ) स्वनिमिक स्तर पर स्वर लेकिन स्वनिक स्तर पर व्यंजन । जैसे-य्, व् ।

(ई) वह विसर्पी स्वन जिसके उच्चारण में करण संवृत स्वरों के स्थान से फिसलकर किसी दूसरे स्वर की ओर मुड़ जाता है । (डेनियल जोन्ज)

(उ) वह स्वन जो अपने वितरण में कभी अक्षर-शिखर बनता है, कभी नहीं। यह परिभाषा भाषा विशेष संदर्भित है। जैसे अंग्रेजी में /i u/ तु॰ frictionless continuant.

(ऊ) वह स्वन जो श्रुति के रूप में प्रयुक्त हो। जैसे—"आये" में 'य्'। यहां स्वन 'य्' अर्ध-स्वर है न कि श्रुति।

sentence melody **वाक्य सुस्वरता**

दे॰ intonation.

sentence stress **वाक्य-बलाघात**

दे॰ phrasal stress.

sequence redundancy rule(s) **अनुक्रम-व्यतिरिक्तता नियम**

व्यतिरिक्तता के वे नियम जो किसी खंड (=स्वन) अथवा उसके अभिलक्षणों का पूर्वानुमान परिवेशी खंडों (=स्वनों) के आधार पर करते है। उदाहरणार्थ अंग्रेज़ी आद्‌य व्यंजन गुच्छों का पहला सदस्य अनिवार्यतः /S/ होता है जिसे इस नियम के आधार पर निम्नलिखित रूप में व्यक्त किया जा सकता है :

$$[+\text{व्यंजनात्मक}] \rightarrow \begin{bmatrix} -\text{स्वरात्मक} \\ +\text{पूर्ववर्ती} \\ \\ +\text{जिह्वाफलकीय} \\ +\text{रुक्ष} \\ +\text{प्रवाही} \\ -\text{घोष} \end{bmatrix} / + __ \begin{bmatrix} +\text{व्यंजनात्मक} \\ -\text{स्वरात्मक} \end{bmatrix}$$

sharp (non-sharp) **तीक्ष्ण (अतीक्ष्ण)**

(ध्वनिक विवरण) तीक्ष्ण स्वनिम उच्च आवृत्ति घटकों की मात्रा में वृद्धि के परिणाम होते हैं।

(उच्चारणात्मक विवरण) अपने संकुचित छिद्र वाले स्वनिमों (अर्थात् अतीक्ष्ण) के विरोध में व्यापक छिद्र वाले स्वनिक (अर्थात् तीक्ष्ण) मुख अनुनादक के फैले हुए ग्रसन्य मार्ग द्वारा उच्चरित होते हैं और इसमें सहवर्ती तालव्यरंजन की प्रक्रिया भी जुड़ी होती है जो मुख-अनुनादक को संकुचित और उपखंडित करती है।

shibilant तालव्योष्म, तालव्य-ऊष्म

वह ऊष्म जिसका उच्चारण स्थान तालु होता है । जैसे संस्कृत तथा हिंदी में—श् । दे० sibilant.

shortening ह्रस्वीकरण, ह्रस्वीभवन

स्वनिम विशेष के उच्चारण में सामान्य रूप में लगने वाले समय में कमी ।

shortening mark संक्षेप चिह्न

वह पार्श्व चिह्न जो शब्दों के लघु अथवा संक्षिप्त रूप को व्यक्त करता है जैसे—डा०, ता०, स० नि० आदि (क्रमश: डाक्टर, तारीख, सहायक निदेशक) ।

short vowel ह्रस्व स्वर

वह स्वर जिसके उच्चारण में सापेक्ष रूप से कम समय (मात्रा) लगता है । जैसे आ, ई, ऊ, की तुलना में अ, इ, उ ।

sibilant ऊष्म

वह घर्षी व्यंजन जिसके उच्चारण में हवा जिह्वा की नलक स्थिति से होकर निकलती है । जैसे—स्, श्, ष् ।

इसके दंत्योष्म (स्) और तालव्योष्म (श्) दो भेद किए जाते हैं ।

silent element अनुच्चरित अंश

किसी शब्द अथवा पद में उपस्थित वह अक्षर स्वनिम या स्वन जिसका उच्चारण नहीं किया जाता है । उदाहरणार्थ फ्रांसीसी में [pətit garzj] 'छोटा लड़का' में [t] का उच्चारण नहीं होता जबकि इसी शब्द [pətit] के [t] का [pətit ami] 'छोटा दोस्त' में पूर्ण रूप में उच्चारण होता है ।

sine wave ज्या तरंग

वह तरंग जिसमें कंपनों की आवृत्ति एक समान हो । यह तरंग का सर्वाधिक सरल रूप होता है । शुद्ध तान (tone) की तरंग का रूप ज्या तरंग जैसा होता है । तु० complex wave.

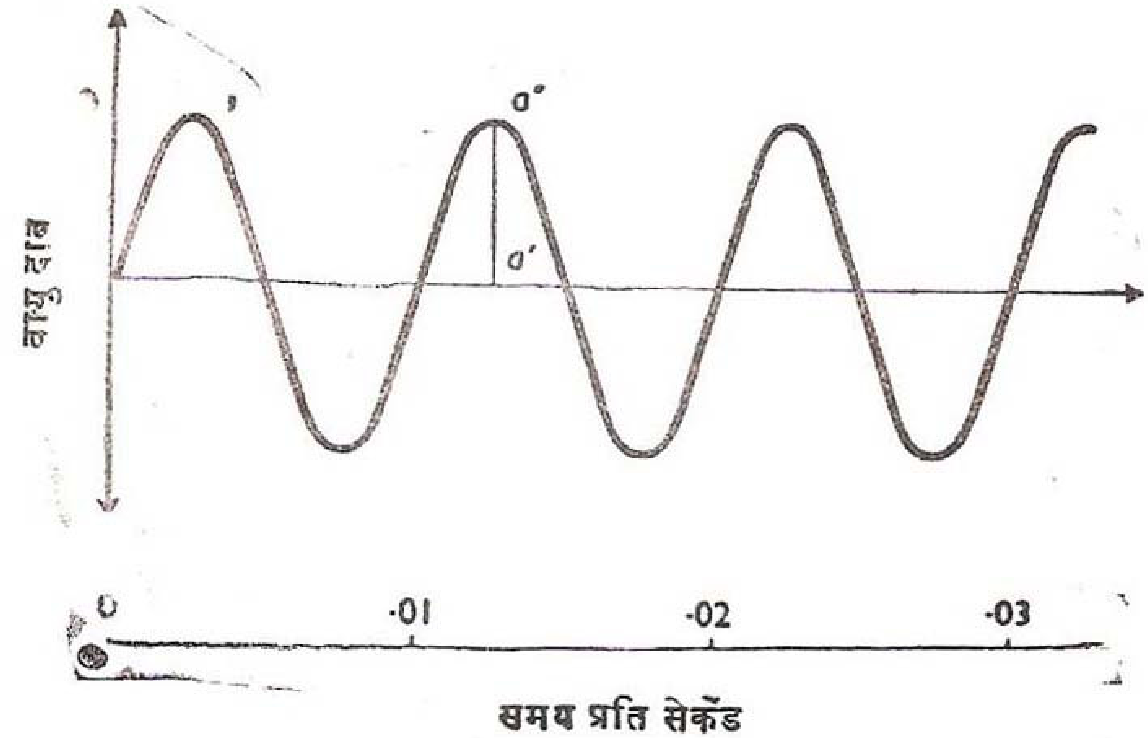

चित्र 19

single articulator एकल करण

वह वागवयव जो किसी अन्य अवयव की सहायता के बिना स्वन का उच्चारण करता है । जैसे अधरोष्ठ, जिह्वाग्र, जिह्वोपाग्र (उपाग्र) जिह्वापश्च, जिह्वामूल आदि ।

sinusoidal ज्यावक्रीय

ज्या तरंग के आकार वाला ।

slash श्लैश, तिरछा कटा चिह्न

(रचनांतरण व्याकरण) कर्ण अथवा तिरछी खड़ी रेखा वाला वह चिह्न जो उस परिवेश का द्योतक होता है जिसमें परिवर्तन नियम लागू होता है । उदाहरणार्थ क——> ख/ग में श्लैश के पूर्वांश नियम को अर्थात् क—>ख को द्योतित करता है, जबकि उत्तरांश उस परिवेश को जिसमें यह नियम लागू होता है ।

slit articulator **फलक करण**

जिह्‌वा की वह स्थिति जिसमें आगे के दोनों किनारे सम या बराबर होते हैं। अंग्रेजी के /θ ð / के उच्चारण में जिह्‌वा की यही स्थिति होती है।

slit fricative (spirant) **फलक घर्षी, ईषद्-विवृत घर्षी**

वह घर्षी स्वन जिसके उच्चारण में जीभ के आगे के दोनों किनारे सम या बराबर होते हैं। दे० slit articulator.

soft palate **कोमल तालु, मृदु तालु**

मुख विवर में तालु का पिछला कोमल भाग जो मूर्धा के बाद अलिजिह्‌वा तक व्याप्त है। हिंदी के कवर्ग स्वनों का उच्चारण यहीं से होता है, अतः उन्हें कोमल तालव्य (या कंठ्य) स्वन कहते हैं।

soft sign **मृदुता चिह्‌न**

रूसी, युक्रेनी तथा बलगेरी भाषाओं में प्रयुक्त एक लिपिचिह्‌न ь। इस चिह्‌न का उच्चारण तो नहीं किया जाता, परंतु यह अपने पूर्ववर्ती व्यंजन को तालव्यरंजित कर देता है। उदाहरणार्थ रूसी शब्द "Y„OBOP"N„T"÷ь„ (गवरीत्य्) 'बोलना'।

sonant **सोनन्ट**

आक्षरिक और अनाक्षरिक दोनों वितरण स्थितियों में मिलने वाला स्वनिम। उदाहरणार्थ अमेरिकी इंग्लिश के मध्य पश्चिमी प्रदेश में बोला जाने वाला r जो bird [br̩d] में तो आक्षरिक है लेकिन red [red] में अनाक्षरिक।

sonorant (non-sonorant) **मुखरित (अमुखरित)**

(अ) वाग्यंत्र से इस प्रकार उत्पन्न स्वन कि उसमें घोषत्व स्वतः संभव हो (न हो)। सभी स्वर, अर्धस्वर, नासिक्य, पार्श्विक स्वन मुखरित होते हैं, जबकि स्पर्श और घर्षी स्वन अमुखरित।

(आ) अस्वराभ अनुनादित स्वन (जिसमें पार्श्विक अनुनादित स्वन तथा अनुनादित नासिक्य व्यंजन आते हैं)।

sonority feature मुखरता अभिलक्षण

अंतर्निहित अभिलक्षण का एक भेद जिसके अंतर्गत स्वरात्मक-अस्वरात्मक, व्यंजनात्मक-अव्यंजनात्मक, नासिक्य-निरनुनासिक्य, संहत-विसृत, स्फोटी–अप्रवाही, रुक्ष--अरुक्ष (मृदु), निरुद्ध–अनिरुद्ध, घोष-अघोष का समावेश किया जाता है । दे० inherent feature.

sound wave
(=acoustic wave) ध्वनि तरंग

(अ) वायु माध्यम में क्षोभ की शृंखलित गति जिसमें वायु कण स्वयं स्थायी रूप से विस्थापित नहीं होते ।

(आ) किसी माध्यम में संचरित होने वाला ऐसा क्षोभ जिसमें माध्यम के प्रत्येक कण की गति आवर्त गति (दोलन गति) होती है और किसी भी क्षण पर माध्यम के विभिन्न कणों का विस्थापन कण के स्थान का आवर्ती फलन (periodic function) होता है । इसमें वायु के कण तो अपने स्थान पर ही छोटे आयाम के दोलन करते रहते हैं किंतु ऊर्जा किसी नियत वेग से स्थानांतरित होती रहती है ।

spectrum
(=acoustic spectrum,
sound spectrum) स्पैक्ट्रम

दे० acoustic spectrum.

speech mechanism उच्चारण तंत्र, वाग्यंत्र

दे० vocal apparatus.

speech organ वागवयव

दे० vocal organ.

speech process **वाक्-प्रक्रिया**

स्वन-उच्चारण में फेफड़े, घोषतंत्री, कोमल तालु, ओठों और जिह्वा का कार्य-व्यापार ।

इस प्रक्रिया के चार भेद हैं—(1) वायुप्रवाह प्रक्रिया, (2) स्वनन प्रक्रिया; (3) मुख-नासा प्रक्रिया, और (4) उच्चारणात्मक प्रक्रिया ।

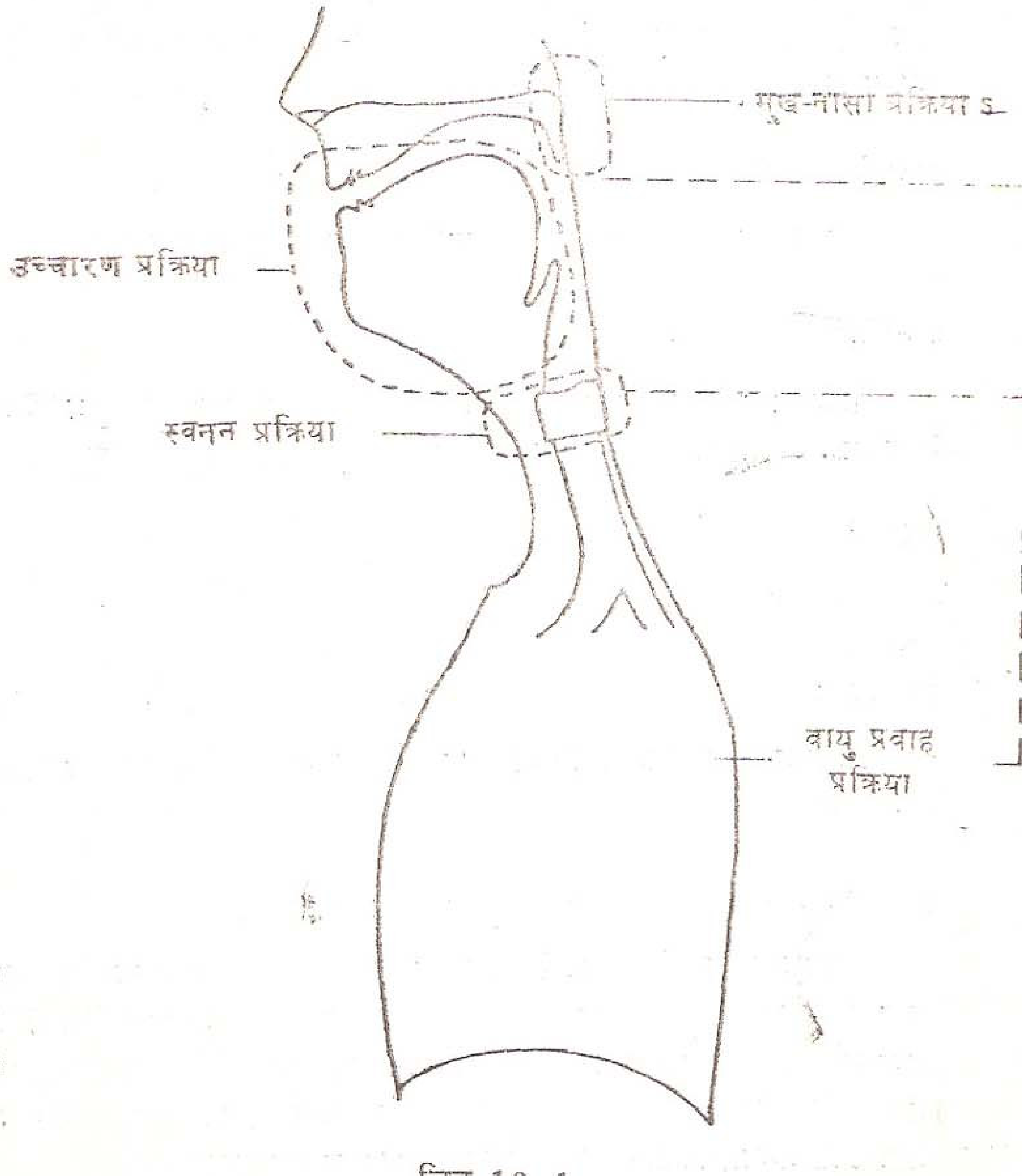

चित्र 19.1

speech sound **वाक्-स्वन**

कुछ विद्वान इसे स्वनिक खंड का समानार्थी मानते हैं और कुछ स्वन का ।

speech stretcher **वाक् प्रसारक**

भाषा प्रयोगशाला में प्रयुक्त होने वाली वह मशीन जिस पर विश्लेषण या शिक्षण के लिए वाक्-सामग्री वक्ता की सहज उच्चारण गति में रिकार्ड कर ली जाती है । इसे श्रोता अपनी इच्छानुसार अलग-अलग गतियों पर सुन सकता है पर ऐसा करते समय उसके स्वाभाविक स्वन-गुणों में किसी प्रकार का अंतर नहीं पड़ता ।

speech training **उच्चारण-प्रशिक्षण**

सही उच्चारण सिखाने के लिए नियमित अभ्यास की पद्धति ।

spelling **वर्तनी**

किसी भाषा के उच्चरित शब्दों, पदों और वाक्यों को परंपरागत दृश्य संकेतों के माध्यम से लिपिबद्ध करने की पद्धति, वर्णविन्यास ।

spirant **घर्षी, संघर्षी**

दे० fricative.

spirantization **संघर्षीकरण**

किसी अघर्षी स्वन का घर्षी स्वन में परिवर्तित हो जाना । जैसे, जहाज > ज़हाज, सफल > सफ़ल ।

spontaneous sound change **स्वतः स्वन-परिवर्तन**

स्वनिक परिवेश के प्रभाव के बिना ही किसी शब्द में किसी स्वन का बदल जाना । इसे अकारण, अज्ञात अथवा स्वयंभू स्वन-परिवर्तन भी कहते हैं । हिंदी शब्द साँप और चाक क्रमशः संस्कृत सर्प और चक्र से प्राकृत सप्प और चक्क के माध्यम से व्युत्पन्न हुए हैं । परंतु साँप में अनुनासिकता है, जबकि चाक में नहीं । अतः उक्त अनुनासिकता स्वतः स्वन-परिवर्तन का उदाहरण है ।

spontaneous voicing **स्वतः घोषत्व**

स्वनों के उच्चारण में घोषतंत्रियों की वह स्थिति जिसमें घोषत्व सहज और सामान्य होता है।

इस स्थिति में श्वासद्वार के ऊपर और नीचे के वायुदाब का अंतर और घोषतंत्रियों का तनाव और आकार इस प्रकार का होता है कि घोषतंत्रियां सहज रूप में श्वासद्वार को बंद करती और खोलती हैं।

सभी मुखरित (sonorant) स्वनों में घोषतंत्रियों की स्थिति स्वतः घोषत्व की होती है, जबकि स्पर्श और संघर्षी स्वन घोष तो हो सकते हैं (जैसे—ब, द्, ग्, ज्, ग़् आदि) परंतु वे स्वतः घोषत्व की स्थिति में नहीं होते।

spoonerism **स्पूनरीयता**

डब्ल्यू० ए० स्पूनर के नाम से जुड़ा ऐसा स्वन-परिवर्तन जो दो या दो से अधिक शब्दों के आद्य अंशों में होता है। जैसे हिंदी में—ताल-माल, ('माल-ताल' से), गोड़ा-घाड़ी (घोड़ा-गाड़ी' से) इत्यादि। इसी प्रकार अंग्रेजी में loving shipyard का showing leopard हो जाना भी स्पूनरीयता का उदाहरण है।

sporadic alternation **कदाचनिक परिवर्तन**

किसी रूपिम के उच्चारण में ऐसा परिवर्तन जो पूर्वानुमेय या व्यवस्थापरक न हो। उदाहरणार्थ हिंदी में पड़ोसी : पड़ौसी; त्योहार : त्यौहार।

sporadic sound change **कदाचनिक स्वनपरिवर्तन**

असंबद्ध और सीमित स्थितियों में अनियमित रूप से होने वाला स्वन-परिवर्तन।

spṛṣṭa (contact) **स्पृष्ट**

स्पर्शयुक्त। दे० अस्पृष्ट।

stop **स्पर्श**

वह स्वन जिसके उच्चारण में उच्चारण स्थान और करण के संपर्क से वायु-प्रवाह पूर्णतः अवरुद्ध हो जाता है। जैसे हिंदी में—क्, ख्, ग्, घ्, ट्, ठ्, ड्, ढ्, त्, थ्, द्, ध्, आदि। दे० stricture.

stress **बलाघात**

(उच्चारणात्मक स्वनविज्ञान) उच्चारण में अक्षर विशेष पर अन्य अक्षरों की तुलना में दिया जाने वाला अतिरिक्त बल (जिसके कारण उच्चारण करते समय हवा अधिक मात्रा में बाहर निकलती है)।

(भौतिक स्वनविज्ञान) उच्चारण में अक्षर विशेष पर अन्य अक्षरों की तुलना में दिया जाने वाला अतिरिक्त बल (जिसके कारण ध्वनितरंगों का आयाम बढ़ जाता है)।

टिप्पणी : (1) बलाघात अक्षर पर होता है किसी स्वर या व्यंजन पर नहीं।

(2) बलाघात स्वरग्राम (स्कैल) बनाता है और कम-से-कम पांच डिग्री तक तो पहचाना जाता है। यह बात अंग्रेजी के

2 4 1 5 3

शब्द opportunity अर्थात् [ɔ p ə t j u : n i t i] से द्रष्टव्य है।

stress accent **बलाघात**

दे० stress.

stress accentuation **बलाघातन**

किसी शब्द के अक्षर विशेष पर बल देने या अवधारण के साथ उच्चारण करने की प्रक्रिया या उसकी परिणति।

stress timed rhythm **बलावधि लय**

(अ) वह लय जिसमें वागंगों के संचलन का कालाश्रित आवर्तन बलाघात उत्पन्न करने वाली प्रक्रियाओं से जुड़ा हुआ है और बलाघातयुक्त अक्षर समान समयांतरालों पर आते हैं।

(आ) बलाघात पुनरावृत्ति से युक्त लय जो लगभग एक समान समयांतरालों पर होती है और जिसमें इस प्रकार के बलाघातों के बीच अक्षरों की संख्या पर ध्यान नहीं दिया जाता।

अंग्रेजी, रूसी तथा अरबी भाषाओं में इस प्रकार की लय मिलती है।

stricture **निकोच**

करण द्वारा वायुप्रवाह के पूर्ण अथवा आंशिक रूप में अवरुद्ध होने की स्थिति। इस स्थिति की तीन प्रमुख मात्राएं (degrees) होती हैं :

(1) वायुप्रवाह का पूर्ण अवरोध—इसे पूर्ण संचार वाला निकोच भी कहते हैं। सभी स्पर्श व्यंजन इसी के अंतर्गत आते हैं।

(2) वायुप्रवाह का प्रतिबंधित अवरोध—इसे स्थानीय श्रव्य घर्षण वाला निकोच भी कहते हैं। घर्षी स्वन इसी के अंतर्गत आते हैं।

(3) वायु का अबाधित अवरोध—इसे अश्रव्य गुहिका घर्षणवाला निकोच भी कहते हैं। इस प्रक्रिया से उत्पन्न स्वनों को अप्राक्सिमेंट कहते हैं। इसके दो उपभेद किए जाते हैं : (अ) स्वरात्मक और (आ) अस्वरात्मक। स्वरात्मक के अंतर्गत सभी स्वर आते हैं और अस्वरात्मक के अंतर्गत तरल और अर्धस्वर।

टिप्पणी : कुछ विद्वान निकोच के संस्पर्श, घर्षण (occlusion), अवरोध और संकोचन के चार भेद मानते हैं।

strident (non-strident=mellow) **रुक्ष (मृदु, अरुक्ष)**

(ध्वानिक विवरण)—उच्च आवृत्तियों के विशिष्ट प्रव न और निम्नतर फार्मेन्टों के क्षीण होने के साथ-साथ उच्चतर तीव्रता-रव का विद्यमान होना (न होना)।

(उच्चारणात्मक विवरण)—रुक्ष कोरदार (मसृण कोरदार) तथा अधिक रवयुक्त। θ की तुलना में s, S और ɸ की तुलना में । अधिक रवयुक्त होने के कारण s, S, और f रुक्ष हैं, जबकि θ और ɸ अरुक्ष।

strong form **सबल रूप**

किसी शब्द का बलाघातयुक्त उच्चरित रूप। तु० weak form.

structural juncture **संरचनात्मक संहिता**

वह संहिता जो मात्र संरचना स्तर पर अनुभवगम्य हो। जैसे—खा+ली : खाली, पी+ली : पीली।

subminimal pair **उपन्यूनतम युग्म**

दो शब्दों का वह जोड़ा जो सदृश परिवेश में व्यतिरेक के रूप में स्वनिक निर्धारण का आधार बनता है। जैसे—माल : नल (म्—न्), चार : छाल (र्—ल्)। तु० minimal pair.

subprimary stricture **उपमुख्य निकोच, गौण निकोच**

प्राथमिक अथवा मुख्य निकोच से इतर निकोच। दे० primary stricture.

subscript **अधोलेख**

किसी ईकाई के दाईं ओर नीचे लिखा जाने वाला वह अंक जो उस इकाई के प्रयोग की न्यूनतम संख्या निर्धारित करता है। उदाहरणार्थ व्य_2 (व्यंजन) कम-से-कम व्य व्य या इसके अधिक तो हैं परंतु मात्र व्य नहीं। दे० superscript.

suction stop **चषण स्पर्श,**
चूषण व्यंजन

अंतर्मुखी घोष स्पर्श, अंतःस्फोटी स्पर्श। दे० velaric air stream mechanism.

superscript **अधिलेख**

किसी ईकाई के दाईं ओर ऊपर लिखा जाने वाला वह अंक जो उस इकाई के प्रयोग की अधिकतम संख्या निर्धारित करता है। उदाहरणार्थ व्य^2 (व्यंजन) अधिक-से-अधिक व्य या व्य व्य है लेकिन व्य व्य व्य या इससे अधिक नहीं। दे० subscript.

suprasegmental features **अधिखंडात्मक अभिलक्षण,**
अधिपरिच्छिन्न अभिलक्षण

मात्रा, आघात और संहिता से संबद्ध अभिलक्षण।

ये अभिलक्षण स्वायत्त रूप में उस तरह उच्चरित नहीं हो सकते जिस प्रकार अधिखंडात्मक स्वनिम।

suprasegmental phoneme **अधिखंडात्मक स्वनिम,**
अधिपरिच्छिन्न स्वनिम

स्वनिम स्तर पर सिद्ध अधिखंडात्मक अभिलक्षण। तु० suprasegmental featur es.

suprasegmental transcription अधिखंडात्मक लिप्यंकन

किसी अधिखंडात्मक स्वनिम को अंकित करने की लेखन प्रणाली । बलाघात, संहिता और स्वराघात आदि को इसी पद्धति से अभिव्यक्त किया जाता है ।

surd अघोष

दे० voiceless.

suspicious pair संदिग्ध युग्म

स्थान, घोषत्व और प्रयत्न आदि की समानताओं वाले दो ऐसे स्वन जिनके बारे में यह संदेह किया जा सके कि वे एक ही स्वनिम के उपस्वन हैं ।

sustained pitch समतल स्वराघात, समतल सुर

दे० levelled pitch.

syllabary ... अक्षरमाला

1. किसी भाषा के वर्णों का पारंपरिक क्रम में विन्यास ।

2. वह लेखन-पद्धति जिसमें प्रयुक्त प्रतीक अक्षरों का प्रतिनिधित्व करते हैं, वर्णों का नहीं ।

syllabic आक्षरिक

किसी अक्षर का श्रव्यता-शिखर वाला स्वन । जैसे—काम में "आ" और अंग्रेजी शब्द बटन f [b ∧ tn]में ∧ और n ।

(आ ∧ क् म्)

syllabic consonant आक्षरिक व्यंजन

ऐसा व्यंजन जो स्वर की तरह अक्षर का शिखर बन जाए । जैसे अंग्रेजी में—bottom [batm], button[b ∧ tn] में क्रमशः m और n. दे० consonant.

syllabic stress आक्षरिक बलाघात

शब्द स्तर पर अक्षर पर पड़नेवाला बलाघात । जैसे अंग्रेजी में—present [prezint] संज्ञा है और [[prézent] क्रिया ।

syllabic writing आक्षरिक लेखन

वह लेखन प्रणाली जिसमें प्रत्येक लिपि चिह्न एक अक्षर का प्रतिनिधित्व करता है । चिरोकी (cherokae) भाषा के लिए प्रयुक्त आक्षरिक लेखन का उदाहरण इस प्रकार है :

जापानी काताकाना आक्षरिक लेखन

	a	i	u	e	o
---	ア	イ	ウ	エ	オ
k	カ	キ	ク	ケ	コ
s	サ	シ 1	ス	セ	ソ
t	タ	チ 2	ツ 3	テ	ト
n	ナ	ニ	ヌ	ネ	ノ
h	ハ	ヒ	フ 4	ヘ	ホ
m	マ	ミ	ム	メ	モ
y	ヤ		ユ		ヨ
r	ラ 5	リ 6	ル 6	レ 6	ロ 6
w	ワ				ヲ 7
n	ン				
g	ガ	ギ	グ	ゲ	ゴ
z	ザ	ジ 8	ズ 9	ゼ	ゾ
d	ダ	ヂ 8	ヅ 9	デ	ド
b	バ	ビ	ブ	ベ	ボ
p	パ	ピ	プ	ペ	ポ

चित्र 20

syllabigram अक्षरलेख

आक्षरिक लेखन में प्रयुक्त होने वाला लिपिचिह्न, जैसे चिरोकी भाषा में प्रयुक्त R 'ए' ? 'है'। दे० syllabic writing.

syllable अक्षर

(अ) (उच्चारणात्मक स्वनविज्ञान) वाक्-स्वन से बड़ी इकाई; एक या एक से अधिक स्वनों की वह ईकाई जिसका उच्चारण श्वास के एक झटके से होता है; फुप्फुसी स्पंद– वाक्स्वन या वाक्-स्वनों की वह इकाई जिसमें एक मुखरता-शिखर अनिवार्यतः रहता है (और वह शिखर विकल्प से शिखर-पूर्व या शिखर पश्च स्थिति में आए व्यंजन स्वरों से युक्त होता है)। जैसे—आ (श्रव्यता-शिखर); ना (शिखर-पूर्व व्यंजन से युक्त); आन् (शिखर-पश्च व्यंजन से युक्त); नान् (शिखर-पूर्व तथा शिखर-पश्च व्यंजनों से युक्त)।

(आ) वर्णमाला का एक वर्ण। जैसे—अ, आ, इ, ई, क्, ख्, ह्, आदि।

syllable timed rhythm अक्षरावधि लय

(अ) वह लय जिसमें वागंगों के संचलन का कालाश्रित आवर्तन अक्षरों के उच्चारण की प्रक्रिया से जुड़ा हुआ है और जिसमें अक्षर समान समयांतरालों पर आते हैं।

(आ) लगभग एक से समयांतरालों पर अक्षरों की पुनरावृत्ति से युक्त लय जिसमें अक्षरों में स्वनों का या उच्चार में बलाघातों की संख्या पर बल नहीं दिया जाता।

भारतीय आर्य-भाषाओं तथा फ्रांसीसी में इस प्रकार की लय मिलती है।

syncope — **मध्यलोप, मध्यवर्णलोप**

शब्द के मध्यवर्ती स्वन का लुप्त होना । जैसे अंग्रेजी में—interesting> intr'esting, हिंदी में—खरीददार>खरीदार, बिछलन> बिछ्‌लन ।

systematic phonemic level — **व्यवस्थापरक स्वनिमिक स्तर**

प्रजनक स्वनप्रक्रिया में स्वनिम का स्तर । व्यवस्थापरक स्वनिमिक स्तर में "व्यवस्थापरक" शब्द का प्रयोग संरचनात्मक भाषाविज्ञान के स्वनिम के स्तर से भिन्नता दिखाने के लिए किया जाता है । यह स्तर संरचनात्मक भाषाविज्ञान के रूपस्वनिमिक स्तर का समांतर है ।

systematic phonetic level — **व्यवस्थापरक स्वनिक स्तर**

प्रजनक स्वनप्रक्रिया में स्वन का स्तर । इसे ध्वनि का बहिस्तलीय स्तर भी कहा जाता है ।

systematic phonemics — **व्यवस्थापरक स्वनिमविज्ञान**

दे॰ systematic phonology.

systematic phonology (=systematic phonemics) — **व्यवस्थापरक स्वनप्रक्रिया**

(प्रजनक स्वनप्रक्रिया) इस माडल में स्वनिम के दो अभिव्यक्तिभेद होते हैं—(1) कोशीय स्वनिमिक प्रस्तुतीकरण (2) व्यवस्थापरक स्वनिमिक प्रस्तुतीकरण । इन दोनों में व्यवस्थापरक स्वनिमिक प्रस्तुतीकरण मूलाधार है । इसमें स्वनिम के सभी अभिलक्षण निर्दिष्ट होते हैं । कोशीय स्वनिमिक प्रस्तुतीकरण में उन अभिलक्षणों को अभिव्यक्त नहीं किया जाता जो अनुमेय होते हैं । इस प्रकार की इकाइयों को आर्की-इकाई कहते हैं । तु॰ archiphoneme.

tactical rule — **विन्यास नियम**

किसी भाषा के स्वनिम संयोजक का नियम ।

tap — **ताड़न**

(अ) ताड़ित व्यंजन के उच्चारण की प्रक्रिया ।

(आ) दे० tapped.

tapped — **ताड़ित**

वह व्यंजन जिसके उच्चारण में करण——सामान्यत: जिह्वाग्र अथवा जिह्वा-फलक——एक झटके के साथ उच्चारण-स्थान पर एकल आघात करता है

teeth ridge — **दंतकूट, वर्त्स्य प्रदेश**

दे० alveolar region (ridge).

tense (lax) — **दृढ़ (अदृढ़, शिथिल)**

(ध्वनिक विवरण) स्वर के स्थिर अंश की दीर्घ (ह्रस्व) अवधि और स्पेक्ट्रम में इसके अनुनाद-क्षेत्र का स्पष्ट और तीक्ष्ण रूप में सीमांकित होना ।

(उच्चारणात्मक विवरण) करण का स्पष्ट और पूर्ण (क्षिप्र/लघु) अपेक्षित गति से संचालन; वाक्-पथ का अपनी केन्द्रीय स्थिति से अपेक्षाकृत अधिक विरूपित होना (न होना); बढ़े हुए वायुदाब का होना (न होना) । अधिश्वासद्वारीय मांसपेशियों का तनी हुई स्थिति में होना (न होना) । ई, ए, ऐ, ऊ, ओ, औ दृढ़ स्वन हैं जबकि इ, उ, अ अदृढ़ ।

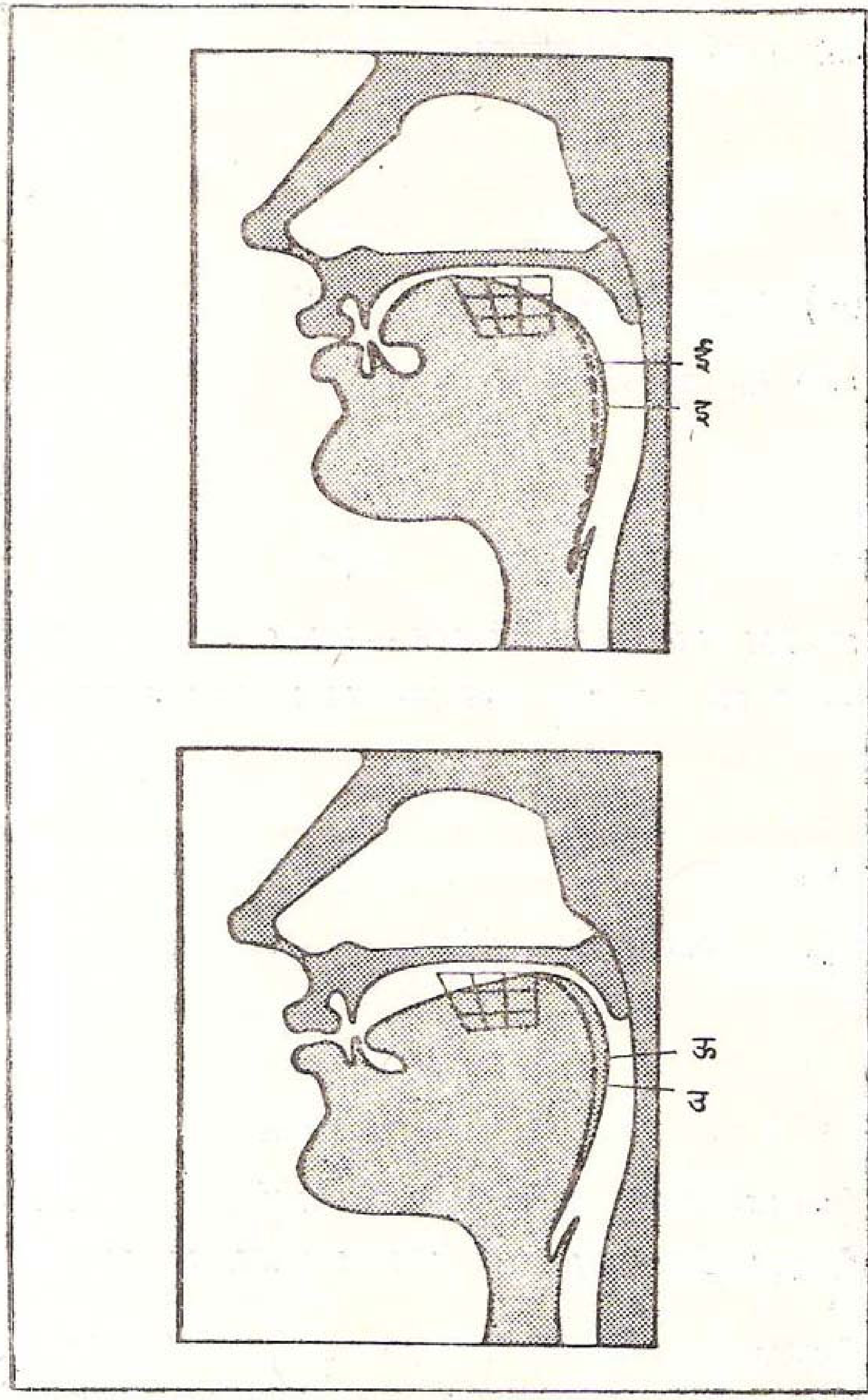

दृढ़ एवं शिथिल स्वरों का उच्चारण

चित्र 20.1

terminal contour अंत्य परिरेखा

(अ) पदबंध, उपवाक्य और वाक्य के स्तर पर अंत में स्वराघात की प्रकृति। इसके मुख्यतः चार भेद किए जाते हैं —

(1) आरोही अंत्य परिरेखा, (2) अवरोही अंत्य परिरेखा, (3) सम अंत्य परिरेखा (4) आरोही-अवरोही अंत्य परिरेखा। दे० rising pitch, falling pitch, sustained levelled pitch और rising-falling pitch.

(आ) अनुतान का वह प्रकार (या उसके लिए प्रयुक्त चिह्न विशेष) जो अभिव्यक्ति के अंत में स्वराघात के बढ़ने [↑] घटने [↓] या सम रहने [।] को व्यक्त करता है। जैसे ^{3}Bill^{2} ↓, ^{1}Bill^{2} ↑, ^{3}well^{3}।

terminal juncture अंत्य संहिता

वाक्य अथवा वाक्य-प्रवाह का विखंडन करने पर विखंडित स्थान पर स्थित संहिता।

इस संहिता की दीर्घता सापेक्षिक होती है और वह अत्यल्प भी हो सकती है और दीर्घ भी। इसे (।, ॥, #) द्वारा दिखाया जाता है।

terminal stress अंत्य बलाघात

अंतिम अक्षर पर बलाघात, जैसे फ्रांसीसी भाषा में।

tertiary cardinal vowel(s) उपगौण मान स्वर

मान स्वरों का एक उपवर्ग। दे० cardinal vowel(s).

tertiary stress तृतीयक बलाघात

मध्यवर्ती बलाघात का एक अन्य नाम। अंग्रेजी शब्द opportunity [$\overset{2}{\text{ɔ}}$ p $\overset{1}{\text{t}}$ $\overset{1}{\text{ju}}$: $\overset{5}{\text{ni}}$ $\overset{3}{\text{ti}}$] में ti

til (tilde) **तिल, तिल्दे, टिल्डे**

(अ) अनुनासिकता को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त होनेवाला चिह्न, जैसे अँ (=ã)

(आ) स्वनिम स्तर पर निरूपित होनेवाले परिवर्त रूप को व्यक्त करनेवाला चिह्न । उदाहरणार्थ अंग्रेज़ी के बहुवचन रूपिम के उपरूपों को S ∽ Z ∽ əZ रूप में व्यक्त किया जाता है ।

timbre **रणन**

ध्वनि का वह गुण जो विभिन्न **अतितानों** की सापेक्ष तीव्रता के होने या न होने पर निर्भर करता है ।

tip of the tongue (=apex) **जिह्वाग्र**

जीभ का सबसे अगला भाग अथवा उसकी नोक जिसके द्वारा ऊपर के दांतों को स्पर्श किए जाने से दंत्य स्वनों का उच्चारण होता है । जैसे–त्, थ्, द्, ध्, न् ।

tonality feature **तानता अभिलक्षण**

अंतर्निहित अभिलक्षण का एक भेद जिसमें उदात्त-अनुदात्त, सपाट-असपाट, तीक्ष्ण-अतीक्ष्ण का समावेश किया जाता है । दे० inherent feature(s).

tone **तान**

(अ) आवृत्ति के धरातल पर भावनिष्ठ (भाषिक) अधिखंडात्मक या खंडेतर गुण ।

(आ) शब्द स्तर पर स्वराघात का ऐसा आरोह अथवा अवरोह जो अर्थ-भेदक होता है । तान के उच्च, निम्न, मध्य, आरोही, अवरोही आदि प्रमुख भेद तथा अन्यान्य उपभेद होते हैं । तान की अभिव्यक्ति के दो स्तर हैं—(1) परिरेखा तान (2) समतान । दे० contour tone और register tone.

toneme तानिम, तान-स्वनिम

तान के धरातल का स्वनिम ।

tongue जिह्वा, जीभ

मुंह में तालु के नीचे वह चिपटा, लंबा तथा लचीला अवयव जिसके अंश सबसे अधिक सक्रिय करण हैं । इसके **जिह्वाग्र, जिह्वोपाग्र, जिह्वापश्च** और **जिह्वामूल** आदि प्रमुख भाग हैं ।

trachea (=wind pipe) श्वासनली

वाक्-स्वन के उच्चारण में सहायक एक नलिका । फेफड़ों से निकलकर वायु इसमें होती हुई मुखविवर या नासाविवर में आती है । काकल इसी के ऊपरी छोर पर स्थित है । चित्र के लिए देखिए Uvula.

transcription लिप्यंकन

दे॰ phonetic transcription.

transformation sign रचनांतरण चिह्न

वह चिह्न [=→] जिसका प्रयोग संरचनात्मक विवरण के संरचनात्मक परिवर्तन के द्योत के लिए किया जाता है । जैसे—सि म् अ टा=→ सिम् ϕ टा ।

transition संक्रमण

उच्चारण के स्तर पर दो स्वनों की सहलग्नता की स्थिति । यह स्थिति स्वनिम का आधार बन सकती है । दे॰ juncture.

transliteration लिप्यंतरण

भाषा के स्वनों को उसकी प्रचलित लिपि छोड़कर किसी अन्य भाषा की लिपि अथवा अन्य लिपि-व्यवस्था में प्रस्तुत करना । उदाहरण के लिए देवनागरी 'श' को रोमन sh के रूप में लिप्यंतरित किया जाता है । रोमन का यह sh देवनागरी के 'श' का लिप्यंतरित रूप है ।

12—353 मानव संसाधन विकास मंत्रालय (नई दिल्ली(/88

transverse wave — अनुप्रस्थ तरंग

वह तरंग जिसमें माध्यम के प्रत्येक कण के विस्थापन की दिशा तरंग-संचरण की दिशा में समकोणिक होती है। जैसे पानी के तल पर तरंगें, प्रकाश तरंगें।

trigraph — त्रिवर्ण, त्रिग्राफ

वर्तनी में स्वन के लिए तीन वर्णों का प्रयोग। उदाहरणार्थ, Matthew में tth, beau में eau.

trill — कंपन

(अ) कंपित व्यंजन के उच्चारण की प्रक्रिया।

(आ) दे० trilled.

trilled — कंपित

वह स्वन जिसके उच्चारण में करण (सामान्यत: ओठ, जिह्वाग्र अथवा अलिजिह्वा) प्रकंपित रहता है और जिसके फलस्वरूप वायुमार्ग दो या दो से अधिक बार तीव्र रूप में स्वत: खुलता है या बंद होता है। हिंदी का 'र्' (जिह्वाग्रीय) और फ्रांसीसी का *r* (अलिजिह्वीय) इसके उदाहरण हैं।

triphthong — त्रिस्वर संध्यक्षर, त्रिस्वरक

एकाक्षरी तीनों स्वरों का समूह।

truncation — विच्छेदन

दे० segment deletion.

umlaut — अभिश्रुति

अंत्य प्रत्यय के अग्रस्वर होने के कारण आधार रूप के स्वर का अग्र स्वर के रूप में परिवर्तन। जैसे—जर्मन satz> बहु० sätze

unaspirated — अल्पप्राण

(अ) स्वनों के उच्चारण में सहमोचित अल्प श्वास से युक्त (स्वन)।

(आ) निर्मोचन के बाद नादाभाव की स्थिति में उच्चरित (स्वन)।

uncerebralized अनत

दे॰ nata.

unchecked अनिरुद्ध

दे॰ checked.

unexploded stop स्फोटनरहित स्पर्श

दे॰ incomplete stop.

uniform pitch सम स्वराघात

दे॰ levelled pitch.

unit इकाई

प्रजनक स्वनप्रक्रिया की वह इकाई जिसके अभिलक्षण गुच्छ के सभी अभिलक्षण पूर्ण रूप से अभिव्यक्त होते हैं। अनुस्वार को जब हम एक इकाई के रूप में देखते हैं तब वह नासिक्य व्यंजन के उस रूप में प्रतिफलित होता है जिसमें उच्चारण-स्थान तथा प्रयत्न संबंधी सभी अभिलक्षण व्यक्त मिलते हैं। दे॰ archiunit.

unmarked (segment/rule) अचिह्नित (खंड/नियम)

निश्चित अभिलक्षण या संदर्भ में अपेक्षाकृत कम जटिल, अधिक सामान्य और अधिकतम प्रत्याशित (स्वन अथवा नियम)। उदाहरणार्थ प्रवाही अभिलक्षण के संदर्भ में दंत्य 'त्' अचिह्नित है (जबकि 'स्' चिह्नित)। दे॰ markedness principle और marked (segment/rule).

टिप्पणी : यदि किसी भाषा में 'स्' है तो वहां 'त्' भी अनिवार्यतः अपेक्षित है, जबकि 'त्' के होने पर 'स्' का होना अनिवार्यतः अपेक्षित नहीं है।

unnatural class असहज वर्ग

स्वनों का वह समूह जो वर्ग के पृथक्-पृथक् सदस्यों की तुलना में कम (स्वनिमिक) अभिलक्षणों द्वारा अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। दे॰ natural class.

unnatural rule असहज नियम

वह स्वनिमिक नियम जो स्वनिमिक प्रक्रिया की स्वाभाविकता का अतिक्रमण करता है । दे० natural rule.

unrounded अवर्तुलित

दे० rounded.

unrounded vowel अवर्तुलित स्वर

ऐसा स्वर जिसके उच्चारण में ओठों का स्वरूप गोलाकार नहीं होता । इसे अवृत्ताकार स्वर भी कहते हैं । हिंदी के 'ए' और 'ई', 'अ', 'आ' इसी प्रकार के स्वर हैं ।

unrounding (of lips) अवर्तुलन (ओठों का)

(अ) किसी स्वन का उच्चारण करते समय ओठों का गोलाकार न होना ।

(आ) अग्रस्वर (मान स्वर सं० 1 से 4) और पश्च स्वरों (मान स्वर सं० 5) के लिए अवर्तुलन एक स्वाभाविक अभिलक्षण है ।

(इ) अपने स्वाभाविक अभिलक्षण को छोड़ देने पर उक्त स्वन गौण मान स्वर बन जाते हैं । दे० cardinal vowel(s).

unvoicing अघोषीकरण

दे० devoicing.

upadha उपधा

दे० penultimate.

upadhmānīya उपध्मानीय

दे० visarga.

upper lip ऊर्ध्व ओष्ठ

ऊपर का ओठ । दे० bilabial.

uvula **अलिजिह्‌वा**

कोमल तालु के अंतिम भाग के पास जीभ के मूल की ओर ऊपर से लटकता हुआ वह अवयव जिसे बोलचाल में कौवा, घंटी या शुंडिका कहते हैं। उच्चारण-स्थान होने के अतिरिक्त अलिजिह्वा प्रकंपित होकर अलिजिह्‌व कंपित (स्वन) उत्पन्न करता है और मौखिक (निरनुनासिक) स्वनों के उच्चारण में उठकर नासाद्‌वार को बंद कर देता है।

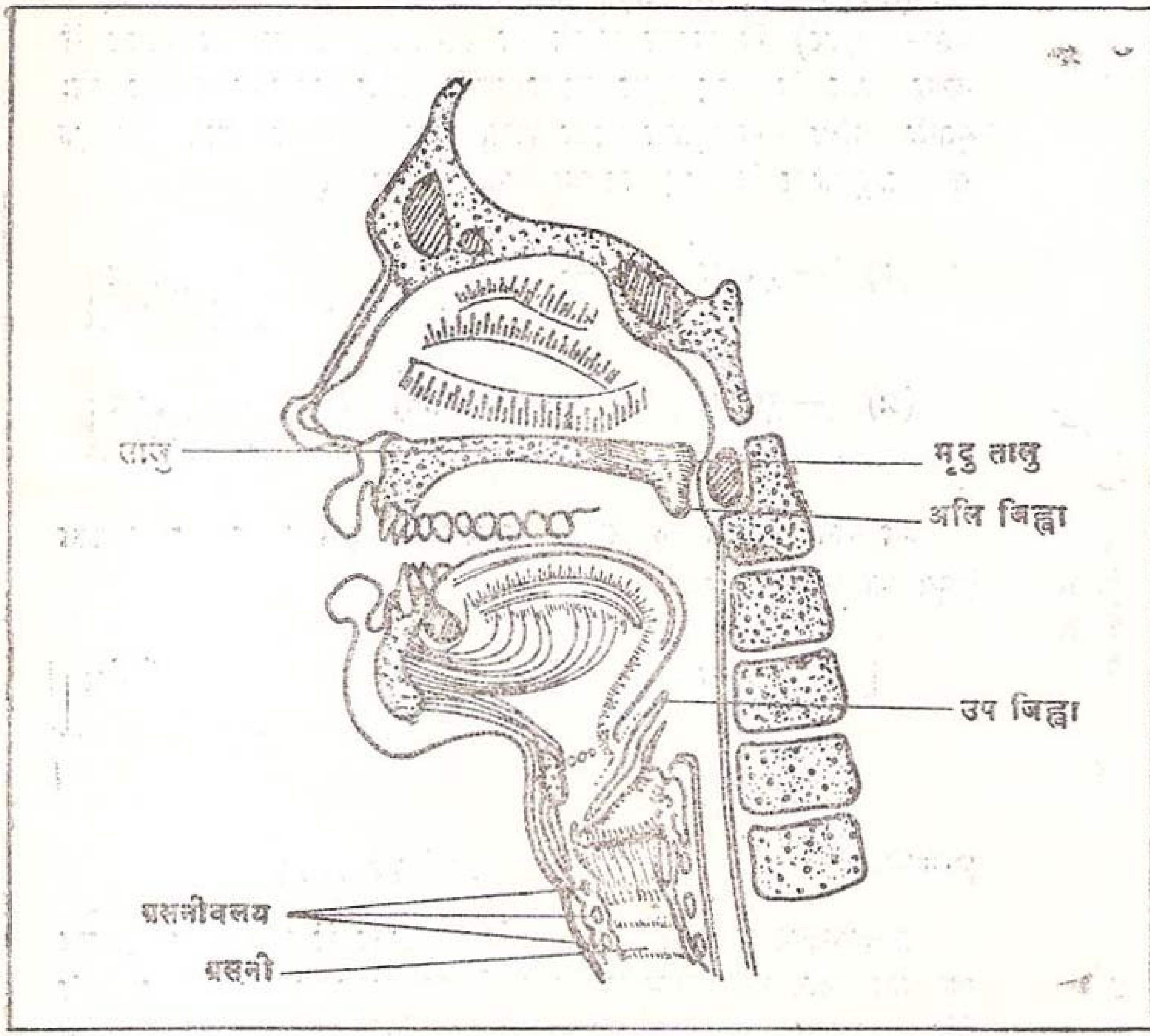

चित्र 20.2

uvular अलिजिह्व, अलिजिह्वीय

अलिजिह्वा और जिह्वा-पश्च के सहयोग से अथवा 'अलिजिह्वा' में प्रकंपन के फलस्वरूप उच्चरित स्वन ।

variable चर

(प्रजनक स्वन प्रक्रिया) एक ही अभिलक्षण के विरोधी मूल्य(+ और — मूल्य) के कारण उत्पन्न दो विभिन्न मूल्यों को एक नियम में व्यक्त करने के लिए मूल्य व्यक्त करने वाली परिपाटी । इसे प्रायः यूनानी $\alpha \beta \gamma$ के द्वारा व्यक्त किया जाता है । दो नियमों को एक साथ लागू करने के लिए चर का व्यवहार किया जाता है ।

$$(1)\ [-\text{मुखरित}] \rightarrow [+\text{घोष}]\ /-\begin{bmatrix} -\text{मुखरित} \\ +\text{घोष} \end{bmatrix}$$

$$(2)\ [-\text{मुखरित}] \rightarrow [-\text{घोष}]\ /-\begin{bmatrix} -\text{मुखरित} \\ -\text{घोष} \end{bmatrix}$$

इन दोनों नियमों को चर के माध्यम से निम्नलिखित रूप से व्यक्त किया जा सकता है :

$$[-\text{मुखरित}] \rightarrow [\alpha]\ \text{घोष}\ /-\begin{bmatrix} -\text{मुखरित} \\ \alpha\ \text{घोष} \end{bmatrix}$$

variation परिवर्तन, विकल्पन, विचरण,

किसी शब्द या भाषिक इकाई के उच्चारण में एक समय एक रूप का होना और उसी शब्द या इकाई के उच्चारण में दूसरे समय किसी ऐसे भिन्न रूप का होना जो परस्पर व्यतिरेकी न हो । इसके दो भेद हैं — (1) आश्रित अथवा सोपाधिक परिवर्तन (2) स्वतंत्र परिवर्तन । दे० conditional variation, free.

varṇa-kula (family of sounds) **वर्णकुल**

(संस्कृत का पारिभाषिक शब्द) गुण के आधार पर वर्ण का ऐसा वर्ग जिसके सदस्य मात्रा आदि भेद से भिन्न हो सकते हैं । जैसे — इ, ई, इ ३ ।

टिप्पणी : पाणिनि ने वर्णसमाम्नाय के रूप में इस संकल्पना की ओर संकेत किया है जहां गुण के रूप में ह्रस्व स्वर को ही एक इकाई माना गया है । परिणामत: स्वनिम धरातल पर 'ई' एक ही वर्ण के दो ह्रस्व रूपों के समतुल्य है । देवनागरी के लिपिचिह्नों का आधार भी यही है जहां मात्रा-भेद (दीर्घ-चिह्नों के लिपि-संकेत) तो परिवर्तित रूप में (ि, ी, ु, ू) से आते हैं जबकि वर्णसमाम्नाय में उनकी आकृति अपरिवर्तित रहती है । जैसे, अ, आ, इ ई; उ ऊ आदि ।

velar **मृदुतालव्य, कोमल तालव्य**

वह स्वन जिसके उच्चारण में कोमल तालु उच्चारण-स्थान का और जिह्वा-पश्च करण का काम करता है । जैसे हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में, क्, ख्, ग्, घ्, ङ् ।

इसे कंठ्य भी कहते हैं ।

velar closure **कोमल-तालव्यावरोध**

जिह्वा के पश्च भाग का ऊपर उठकर कोमलतालु के निचले तल का स्पर्श करते हुए मुख मार्ग को बन्द करना ।

velaric airstream mechanism **कोमल तालव्य वायु-प्रवाह तंत्र**

वायु प्रवाह का वह तंत्र जिसमें जिह्वा और कोमलतालु के स्पर्श करने के साथ-साथ जिह्वा के पीछे और नीचे की ओर आने पर मुंह में हवा विरलित होती है तथा प्रवाह की दिशा अन्तर्मुखी होती है । क्लिक स्वन इस प्रक्रिया से उच्चरित होते हैं ।

प्रारंभक = कंठस्पर्श; वायुदिशा = अन्तर्गामी ।

velarization मृदुतालव्यरंजन, कोमलतालव्यरंजन

1. सह–उच्चारण का एक भेद। दे० co-articulation.

2. (क) किसी स्वन के प्राथमिक उच्चारण के साथ-साथ जिह्वापश्च को ऊपर उठाना।

(ख) किसी स्वन के उच्चारण पर अवर्तुलित पश्च संवृत स्वर [ɯ] को आरोपित करना।

velic closure नासावरोध

अलिजिह्वा का ऊपर उठकर नासामार्ग को बंद करना।

velum मृदुतालु, कोमल तालु

दे० soft palate. चित्र के लिए देखिए uvula.

vibration कंपन

दे० periodic motion.

visarga विसर्ग

(अ) कोलन जैसा चिह्न [:], जो देवनागरी के किसी वर्ण की दाईं ओर लगाया जाता है; जैसे—अ:, दु:ख, अत: आदि।

(आ) संस्कृत व्याकरण के अनुसार अघोष 'ह' जो मुख्यत: अंत्य स्थिति में विराम के पूर्व आता है।

टिप्पणी : संस्कृत आचार्यों के अनुसार अघोष 'ह' का विभाजन परावर्ती व्यंजन के आधार पर तीन उपसर्गों में किया जाता है—(1) 'क्', 'ख्' के पूर्व जिह्वामूलीय (2) 'प्', 'फ्' के पूर्व उपध्मानीय और (3) अन्यत्र विसर्जनीय। बाद में चलकर वितरण की दृष्टि से विसर्ग का प्रयोग सभी स्थितियों में होने लगा।

visarjaniya विसर्जनीय

दे० visarga.

vocal apparatus वाग्यंत्र

वाक्-स्वनों के उच्चारण में काम आने वाले वागवयवों का समूह। जैसे—जिह्वा, वर्त्स, काकल, घोषतंत्री, मूर्धा, तालु आदि।

vocal bands घोषतंत्री

दे० vocal c(h)ords.

vocal cavity मुख विवर

दे॰ buccal cavity.

vocal c(h) ords घोषतंत्री

काकल के बीच ओठ जैसे दो परदे या कपाट जिनके नजदीक आने और दूर हटने से घोषत्व उत्पन्न होता है।

इन परदों या कपाटों की स्थिति विशेष के आधार पर **स्वनन-प्रक्रिया** में भेद आ जाता है।

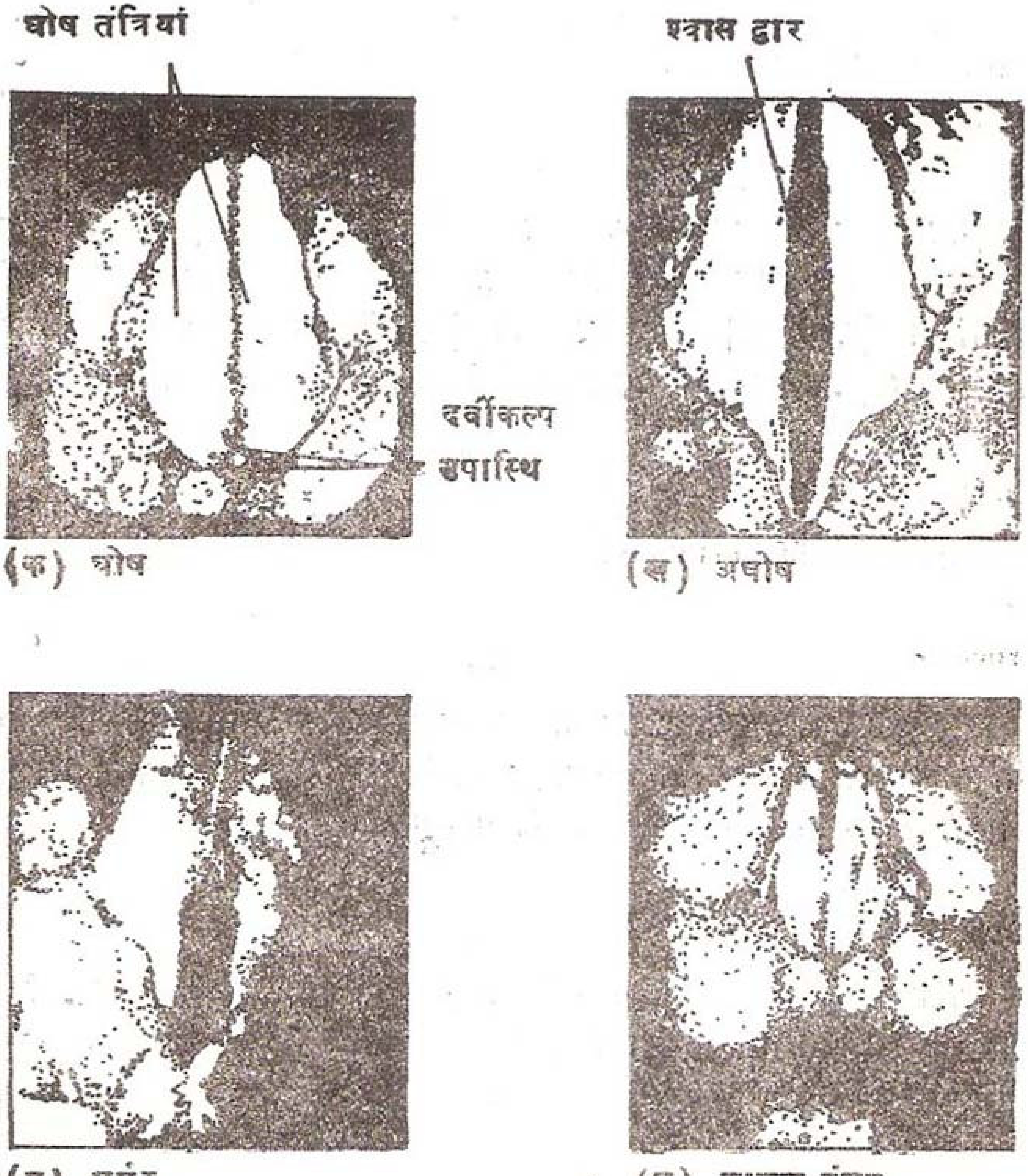

चित्र 21

vocal folds **घोषतंत्री**

दे० vocal c(h)ords.

vocalic (non-vocalic) स्वरात्मक (अस्वरात्मक)

(ध्वनिक विवरण) फॉर्मेन्ट-संरचना का स्पष्ट और तीक्ष्ण रूप में सीमांकित होना (न होना)।

(उच्चारणात्मक विवरण) (क) श्वासद्वार में मुख्य रूप से अथवा एक मात्र उत्तेजन होने के साथ-साथ वाक्पथ का निर्बाध स्थिति में होना (न होना)।

(ख) मुखविवर में उच्चरित वह स्वन जिसमें होने वाला सहज संकुचन अपनी अधिकतम सीमा उच्च स्वरों [i] और [u] तक नहीं होता (होता है) और जिसमें घोषतंत्रियां स्वतः घोषत्व की स्थिति में होती हैं (नहीं होतीं)। [इ, उ, अ,] आदि स्वर और [ल्, र्] आदि व्यंजन स्वरात्मक होते हैं, जबकि [प्, त्, क्] आदि व्यंजन और [य्, व्] आदि अर्धस्वर अस्वरात्मक।

vocalic consonant **अर्ध व्यंजन**

दे० syllabic consonant.

vocalization **स्वरीकरण**

विकास-क्रम में किसी व्यंजन का स्वर हो जाना। जैसे हिंदी में—बारह > बारा, संस्कृत 'एक' और अंतर > प्राकृत अपभ्रंश 'एअ' और 'अंतो' और प्रारंभिक अंग्रेजी plegerre > आधुनिक अंग्रेजी player..

vocal organ **वागवयव**

शरीर-रचना का वह अंग जिसका वाक्-स्वनों के उच्चारण से सीधा संबंध होता है। जैसे—फेफड़े, काकल तथा घोषतंत्रियां, ग्रसनी, अलिजिह्वा, तालु, जिह्वा, वर्त्स, दांत और ओठ आदि।

vocal tract **वाक्-पथ**

मुख-पथ और नासापथ के लिए संयुक्त नाम।

vocoid स्वर-ध्वनि, स्वरक, स्वराभ

केंद्रगत अनुनादी मौखिक स्वन; वह स्वन जिसके उच्चारण में हवा जीभ के बीचोबीच होकर बिना किसी घर्षण के मुंह से निकलती है ।

टिप्पणी : केंद्रगत न होने के कारण पार्श्विक 'ल्' इसमें समाहित नहीं है, मौखिक न होने के कारण 'न्' इसमें नहीं आता, अनुनादी न होने के कारण स्पर्श और संघर्षी स्वन इसके अन्तर्गत नहीं लिए जा सकते; घर्षण मुंह में न होकर अन्यत्र होने के कारण 'ह्' इसमें सम्मिलित किया जाता है ।

voice (voiceless) घोष (अघोष)

(ध्वानिक विवरण) आवर्ती निम्न आवृत्ति के उत्तेजन का होना (न होना) ।

(उच्चारणात्मक विवरण) (अ) घोषतंत्रियों के आवर्ती कंपन का होना (न होना) । कुछ विद्वानों के अनुसार वे सभी स्वन घोष होते हैं जिनके उच्चारण के समय घोषतंत्रियां इस स्थिति में होती हैं कि यदि उपयुक्त वायुप्रवाह हो तो वे प्रकंपित हो सकें जबकि अघोष स्वनों के उच्चारण के समय श्वासद्वारीय रंध्र इतना खुला होता है कि घोषतंत्रियां प्रकंपित होने की स्थिति में नहीं होतीं ।

(आ) स्वनन प्रक्रिया का एक भेद । दे० phonation process.

voiced (non-voiced) घोष (अघोष)

दे० voice (voiceless).

voiceless अघोष

दे० voice (voiceless).

voice onset time घोषत्व प्रारंभ समय

किसी स्वन के उच्चारण में लगने वाला वह समय जब से घोषतंत्रियां प्रकंपित होती हैं ।

कुछ भाषाओं में व्यंजन उच्चारण के समय घोषत्व कि स्थिति सापेक्षतया प्रारंभ से ही बनी रहती है (जैसे फ्रांसीसी तथा हिंदी 'ब्') और कुछ में यह स्थिति बहुत बाद में उत्पन्न है (जैसे अंग्रेज़ी में b) ।

voicing — 1. घोषत्व
2. घोषीकरण

1. घोषत्व : घोषतंत्रियों के प्रकंपन से उत्पन्न अभिलक्षण (दे० स्वनन प्रक्रिया) ।

2. घोषीकरण : अघोष व्यंजन का घोष व्यंजन के रूप में परिवर्तन । जैसे हिंदी में—काग (सं० काक > काग; लातीनी amata > स्पेनी amada) ।

vowel — स्वर

1. **स्वनात्मक स्तर :**

(क) वह स्वन जो मुखविवर से प्रश्वसित वायु के मार्ग में उच्चारण-अवयवों द्वारा बिना किसी प्रकार की रुकावट के उच्चरित होता है । (इस परिभाषा की सीमा यह है कि इससे संस्कृत 'ल्', 'र्' और 'लृ' और 'ऋ' का प्रकार्यात्मक भेद स्पष्ट नहीं हो पाता, क्योंकि संस्कृत में पहले वर्ग के सदस्य को व्यंजन माना गया तथा दूसरे वर्ग के सदस्य को स्वर) ।

(ख) कुछ विद्वानों के अनुसार उन सभी स्वरों को स्वर की संज्ञा दी जाती है जो आक्षरिक होते हैं । इससे संस्कृत 'ल्', 'र्', 'लृ', 'ऋ' की समस्या का समाधान तो हो जाता है, परंतु अंग्रेज़ी के आक्षरिक m̩, n̩, l̩, स्वनों की समस्या का समाधान नहीं हो पाता ।

2. **स्वनप्रक्रियात्मक स्तर :**

कुछ विद्वानों के अनुसार स्वर और व्यंजन का भेद स्वनात्मक न होकर स्वनिमिक होता है । संस्कृत 'लृ', 'ऋ' अपने संधि तथा रूपस्वनिमिक नियमों की प्रकृति के आधार पर स्वर सिद्ध होते हैं । इसलिए इन आक्षरिक स्वनों को स्वर माना गया है, जबकि अंग्रेजी के आक्षरिक m̩, n̩, l̩, को अन्य व्यंजनों के अनुरूप सिद्ध होने के कारण व्यंजन का स्तर दिया जाता है ।

3. **प्रकार्यात्मक स्तर :**

वितरण के आधार पर दो स्वन-समूहों में से वह समूह जिसके सदस्य अधिकांशतः आक्षरिक होते हैं और जिसमें मुख्यतः स्वर का समावेश होता है ।

4. **अभिलक्षण स्तर :**

चॉम्सकी तथा हॉले द्वारा प्रस्तावित प्रभेदक अभिलक्षणों का वह समुच्चय वर्ग जो अपनी प्रकृति में [+ स्वरात्मक, — व्यंजनात्मक] होता है । दे० consonant.

vowel area (space) स्वर-क्षेत्र

स्वर त्रिकोण के भीतर का प्रदेश। दे० vowel triangle.

vowel fracture स्वर-विभंग

प्रतिवेशी स्वन (स्वनों) के प्रभाव से सरल स्वन (एकस्वरक) का संध्यक्षर (द्विस्वरक) में परिवर्तन। (इसका जर्मन पर्याय brechung है।)

vowel gradation अवश्रुति

दे० ablaut.

vowel harmony स्वर संगति

असन्निहित अथवा व्यवहित समीकरण (समीभवन) का वह प्रकार जिसमें अनुक्रमगत अक्षरों के स्वर एक दूसरे के पूर्ण या आंशिक रूप में समरूपी बनते हैं।

vowel height स्वर-उच्चता

स्वर के उच्चारण में जिह्वा के ऊपर उठने की स्थिति।

इस उच्चारण में जिह्वा के उच्चतम (संवृत) और निम्नतम (विवृत) उठने के बीच के क्षेत्र को दो समान मध्यवर्ती भागों में बांटे जाने पर दो अन्य संदर्भ-बिंदु बनते हैं जो क्रमशः संवृत और विवृत संदर्भ बिंदु से $\frac{1}{3}$ दूरी पर स्थित होते हैं। इस प्रकार जिह्वा के ऊपर उठने की स्थिति को ध्यान में रखते हुए स्वर-विवरण के चार संदर्भ बिंदु बनते हैं जिन्हें नीचे के रेखाचित्र में दिखाया गया है :

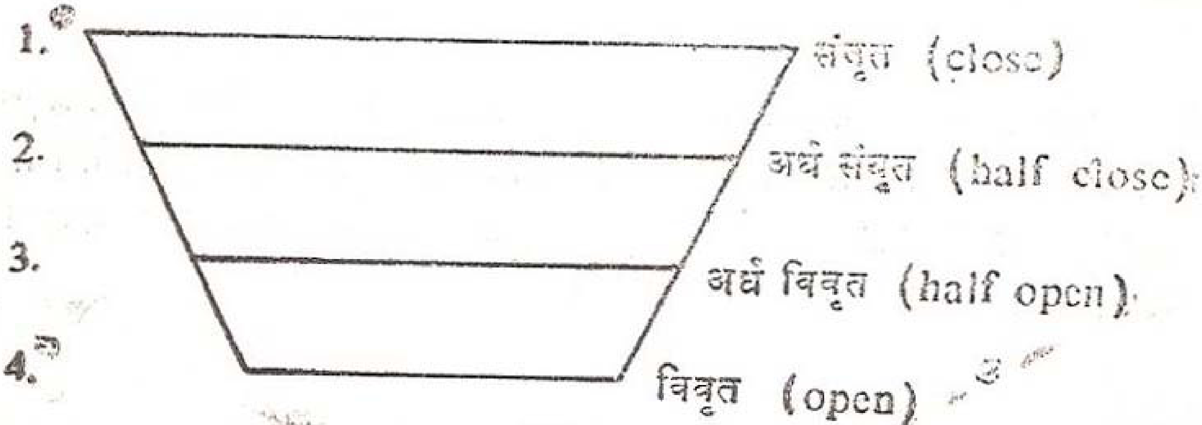

चित्र 22

कुछ विद्वानों के अनुसार स्वर-उच्चता के संदर्भ में स्वर-विवरण के लिए सात संदर्भ बिंदु हैं। जिह्वा के अधिक से अधिक ऊंचा उठने को उच्च, अधिक-से-अधिक नीचे रहने को निम्न और इन दोनों के ठीक मध्यवर्ती को माध्यम मध्य कहते हैं। उच्च और माध्य मध्य को दो बराबर भागों में बांटने पर दो और संदर्भ-बिंदु बनते हे जिन्हें क्रमशः निम्नतर उच्च और उच्चतर मध्य तथा माध्य मध्य और निम्न को दो बराबर भागों में बांटने पर दो और संदर्भ बिंदु बनते हैं जिन्हें क्रमशः निम्नतर मध्य और उच्चतर निम्न कहा गया है। इस प्रकार कुल मिलाकर स्वर-उच्चता के सात संदर्भ-बिंदु बनते हैं जिन्हें निम्न रेखा चित्र में देखा जा सकता है :

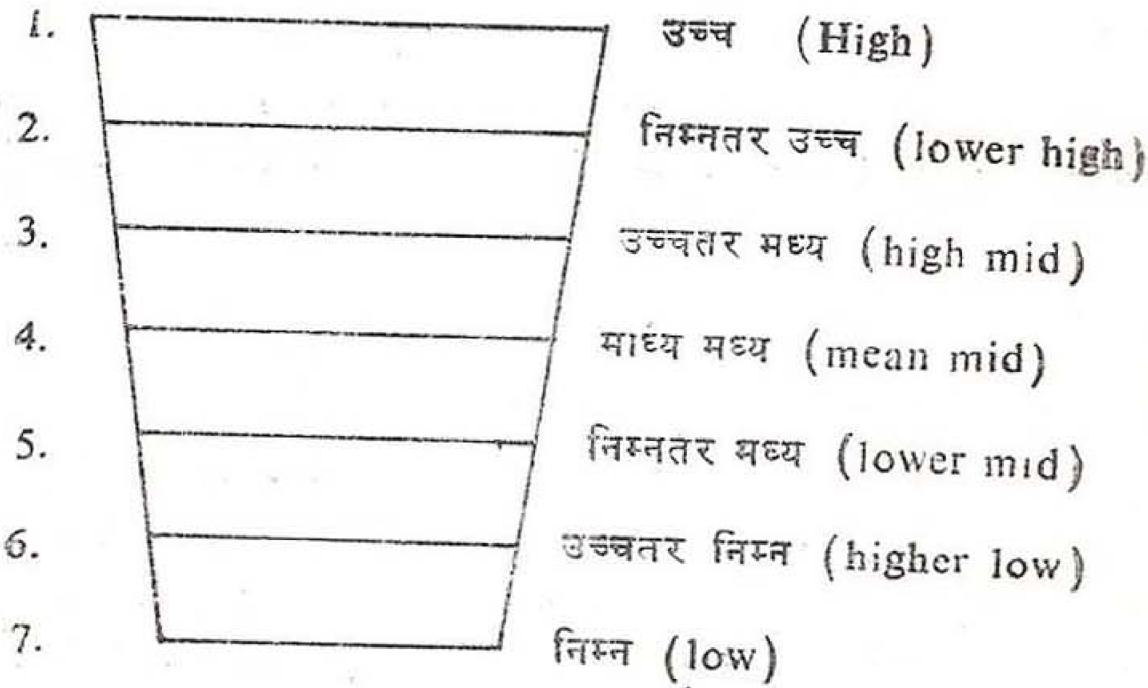

चित्र 23

ध्वानिक विश्लेषण के संदर्भ में कहा जा सकता है कि पहले फार्मेन्ट की चक्रावृत्ति स्वर-उच्चता के प्रतिलोम समानुपात में होती है अर्थात् जिस समानुपात में जिह्वा ऊपर उठती है उसी समानुपात में पहले फार्मेन्ट की चक्रावृत्ति कम हो जाती है। दे० cardinal vowel.

vowel mutation अभिश्रुति

दे० umlaut.

vowel quality स्वरगुण

जिह्वा और ओठों के संचलन से नियंत्रित होने वाले वे अभिलक्षण जिनसे स्वरों का भेद दिखाया जाता है । जैसे---अग्र-पश्च, विवृत-संवृत, वर्तुलित-अवर्तुलित आदि ।

vowel triangle स्वर त्रिकोण

समलंबरूप अथवा विषम चतुर्भुजीय आकृति जिसमें जिह्वा की ऐसी चार स्थितियां मानी गई हैं जिनको मिलाने से स्वर क्षेत्र बनता है । इन चार स्थितियों में मान स्वर एक [i], चार [a], पांच [ɑ और आठ [u] उच्चरित होते हैं । इन्हें रेखाचित्र में यों दिखाया जाता है :

[i] [u]

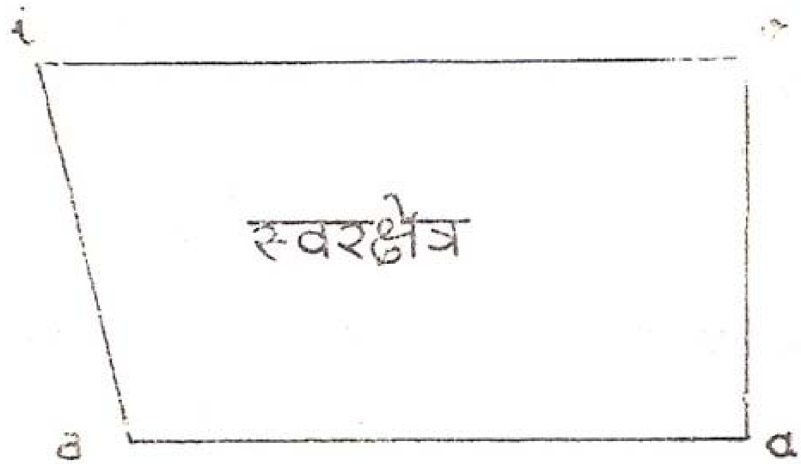

[a] चित्र 24 [ɑ]

इसकी सार्थकता इस तथ्य में निहित है कि स्वर-स्वनों को सातत्य रूप से उच्चरित करना संभव है अर्थात् स्वर-स्वन उच्चारण के स्तर पर सातत्यक हैं ।

इस चतुर्भुजीय आकृति को उच्चारण की दृष्टि से दो रूपों में विभाजित किया जाता है---(1) जिह्वा की उदग्र (vertical) गतिशीलता, और (2) समस्तरीय (horizontal) गतिशीलता । उदग्र गतिशीलता की दृष्टि से समदूरी पर चार बिंदु स्थापित किए जाते हैं (संवृत, अर्धसंवृत, अर्धविवृत, विवृत) और

समस्तरीय गतिशीलता की दृष्टि से तीन बिंदु स्थापित किए जाते हैं (अग्र, मध्य और पश्च)। इस द्विविध विभाजन को रेखाचित्र में यों दिखाया जाता है।

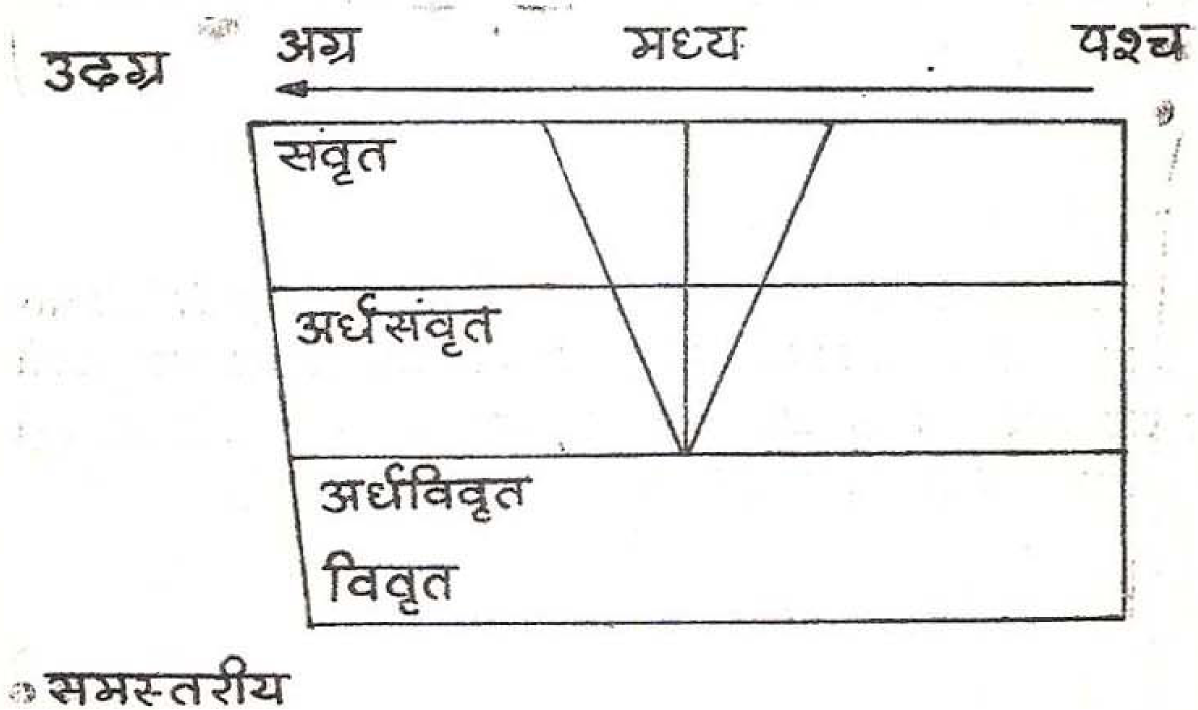

चित्र 25

weak form दुर्बल रूप

किसी शब्द का बलाघातहीन उच्चरित रूप। दे० strong form.

whisper उपांशु, फुसफुसाहट

(अ) घोषतंत्रियों की स्थिति विशेष पर आधारित एक स्थानिक अभिलक्षण।

(आ) स्वनन प्रक्रिया का एक भेद।

चित्र के लिए दे० phonation process.

whispered vowel उपांशु स्वर, फुसफुसाहट स्वर

स्वरों का ऐसा अघोषवत् उच्चारण जिसमें घोषतंत्रियां इतनी दूर रहती हैं कि उनके बीच से आने वाली हवा बिना किसी घर्षण अथवा कंपन के निकल जाती है। हिंदी की बोली अवधि के विशिष्ट इ, उ और ए के अघोष रूप फुसफुसाहट, जपित या उपांशु स्वर कहलाते हैं। इन्हें घोष रूपों से भिन्न दिखाने के लिए इनके नीचे छोटा-सा वृत्त बना देते हैं। जैसे—इ, उ, ए।
ₒ ₒ ₒ

white noise **श्वेत रव**

श्रव्य परास में समाविष्ट प्रत्येक आवृत्ति घटक पर समान शक्ति वाली ध्वनि।

wide (narrow) **विस्तीर्ण (संकीर्ण)**

वह स्वनिक अभिलक्षण जिसमें जिह्वामूल को आगे (पीछे) करके ग्रसनी को बड़ा (छोटा) किया जाता है। इस अभिलक्षण के आधार पर घाना में बोली जाने वाली त्वी (Twi) भाषा में स्वरों के दो समुच्चयों में भेद किया जाता है। एक समुच्चय में विस्तीर्ण स्वरों का समावेश होता है तो दूसरे में संकीर्ण स्वरों का।

word stress **शब्द बलाघात**

शब्दों में अक्षर पर किया गया बलाघात।

yodization **यकारीकरण**

मूल स्वर सामान्यत: ('इ' अथवा 'ए') का 'य' में परिवर्तन। जैसे—लातीनी भाषा के तीन अक्षरों के vinea का ग्राम्य लातीनी में द्वि–अक्षरी vinya रूप में उच्चरित होना।

13—353 मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एन. डी)/88

APPENDIX–परिशिष्ट

SIGNS & SYMBOLS–संकेत तथा प्रतीक

English term अंग्रेजी शब्द	Symbol प्रतीक	Formal nomenclature रूपात्मक नाम	Functional nomenclature प्रकार्यात्मक नाम
1	2	3	4
acute accent	/	—	उदात्त
ampersand	&	—	समुच्चय चिह्न; और सूचक चिह्न
angled (angular) brackets	< >	कोण कोष्ठक	1. नियम संलयन कोष्ठक
			2. लेखिम कोष्ठक
anuswār	$\dot{-}$	बिंदु	अनुस्वार चिह्न
arch	∩ अथवा ∪	चाप	1. क्रमबद्धता-सूचक चिह्न
			2. योगसूचक चिह्न
asterisk	* *	तारांक,	1. काल्पनिक रूप
		ताराचिह्न	2. पुनर्रचित रूप
became (—developed to)	>		बना आया,
braces	{ }	धनु कोष्ठक,	1. नियम-संलयन कोष्ठक
		मझला कोष्ठक	2. रूपिम कोष्ठक
		धनुर्बंधनी	3. समुच्चय कोष्ठक

1	2	3	4
breathings (—breathing sign)	‘	उल्टा काँमा	महाप्राणत्व चिह्न
	’	सीधा कामा	अल्पप्राणत्व चिह्न
breve	◡	अर्ध चंद्र	ह्रस्वता चिह्न
cedilla	(Ş) (Ç)	सेडिला	सकारसूचक चिह्न
circumflex accent	^		स्वरित चिह्न
colon	:	कोलन	एक विरामचिह्न
comma	,	कॉमा	अल्पविराम चिह्न
dash	—	डेश, पड़ी रेखा	(1) नियम प्रयोग स्थानसूचक चिह्न (2) एक विराम चिह्न
derived (developed) from	<		से बना, से आया
diaeresis	¨		स्वरविसंधि चिह्न
diagonal (slash/solidus)	/	कर्ण, तिरछी खड़ी खड़ी रेखा	1. या - सूचक चिह्न 2. परिवर्तन नियम का परिवेश-सूचक चिह्न
ecphoneme (—exclamation point/ mark)	!		विस्मयादिबोधक चिह्न
ellipsis	. . . . अथवा xxxx		अध्याहार चिह्न.
(=blank mark)			लोपचिह्न
equality mark	=		तुल्यता चिह्न

1	2	3	4
falling pitch	↘		अवरोही स्वराघात
fullstop (=period)	·/।	बिंदु खड़ी पाई	पूर्णविराम
grave accent	◌̀		अनुदात्त चिह्न
hal sign	◌्		हल् चिह्न
hyphen	-		योजक चिह्न
if and only if	≡		यदि और केवल यदि चिह्न
if....then	∩		यदि...तो
interrogation point (question mark/mark of interrogation)	?		प्रश्न चिह्न
intersection or member-ship in two sets	∩		दो समुच्चयों में सदस्यता या प्रतिच्छेदन चिह्न
inverted commas	" "		उद्धरण चिह्न
juncture	+		संहिता चिह्न
levelled pitch (sustained pitch)	→		सम स्वराघात
logical disjunction	V		तार्किक वियोजन चिह्न
macron	–		दीर्घता चिह्न
member of	E		सदस्यता-सूचक चिह्न
micron	◡		ह्रस्वता चिह्न

चिह्न 24

morphological alternation	∞		रूपाश्रित परिवर्तन चिह्न
nasalization sign	◡	चंद्रबिंदु	अनुनासिकता चिह्न
not a member	∉		असदस्यता चिह्न
null	ϕ		रिक्ति चिह्न
obligatory internal close juncture	/॥/		आवश्य आभ्यंतर सन्निकृष्ट संहिता चिह्न
obligatory terminal close juncture	/#/		आवश्य अंत्य सन्निकृष्ट संहिता
parallel (lines)	‖	समांतर (रेखाएं)	
parenthesis mark (-round brackets)	( ) लघु बंधनी	लघु कोष्ठक	निक्षेप चिह्न
phonological alternation	∽		स्वनिमिक परिवर्तन चिह्न
rewrite sign	→	शर	पुनर्लेखन चिह्न
rising pitch	↗		आरोही स्वराघात
root sign	√		धातु चिह्न
square brackets (crotchets)	[ ]	बड़ा कोष्ठक	1. संस्वन चिह्न
			अभिलक्षण धारक
section	§		अनुच्छेद चिह्न
semicolon	;		अर्द्धविराम

समस्तरीय

चिह्न 25			
shortening mark	◦		लाघव चिह्न
slash	/	तिरछी खड़ी रेखा	नियम / परिवेश द्योतक
soft sign	b		मृदुता चिह्न
solidi (double slash)	//	द्विकर्ण	स्वनिम कोष्ठक
til (tilde)	∽	तिल (तिल्दे)	(1) अनुनासिकता चिह्न
			(2) स्वनिमिक परि-वर्तन चिह्न
transforma-tional sign	=⟩	द्विशर	रचनांतरण चिह्न
visarga	:		विसर्ग

अंतःपात	antaḥpāta (insertion of a phonetic letter)
अंतःस्थ	antaḥastha
अंतःस्फोटन	implosion
अंतःस्फोटी	implosive
अंत	coda
अंतर्निहिति	epithesis
अंतर	antara (hiatus)
अंतर्गामी (विरलित) वायु प्रवाह	ingressive (rarefactive) air stream
अंतर्निहित अभिलक्षण	inherent feature(s)
अंतर्निहित स्वर	inherent vowel
अंतर्राष्ट्रीय स्वन-वर्णमाला	International Phonetic Alphabet (I.P.A.)
अंत्य परिरेखा	terminal contour
अंत्य बलाघात	terminal stress
अंत्य लोप	apocape
अंत्य संहिता	terminal juncture
अक् का लोप	aglopa (elision of vowel)
अक्षर	syllable
अक्षर चिह्न	ligature
अक्षरमाला	syllabary
अक्षरलेख	syllabigram
अक्षर समाम्नाय	akṣara samāmnāya (alphabet)
अक्षरांग	akṣarānga (syllable-part)
अक्षराबधि लय	syllable timed rhythm
अग्रतालव्य	prepalatal
अग्र "ल्"	clear 'l'
अग्र स्वर	front vowel
अग्लोप	aglopa (elision of vowel)

अघोष	surd, voiceless
अघोषीकरण	devoicing, unvoicing
अघोषीकृत	devoiced
अचिह्नित (खंड/नियम)	unmarked (segment/rule)
अजिह्वाफलकीय	non-coronal
अतिव्यक्त	ativyakta (over distinct)
अतिव्यस्त	ativyasta (wide-apart)
अतिस्पर्श	atisparśa
अतीक्ष्ण	non-sharp
अदृढ़	lax
अदृष्ट	adṛṣṭa (indistinct)
अद्वियोनि	adviyoni (simple articulation)
अधिखंडात्मक अभिलक्षण	suprasegmental features
अधिखंडात्मक लिप्यंकन	suprasegmental transcription
अधिखंडात्मक स्वनिम	suprasegmental phoneme
अधिपरिच्छिन्न अभिलक्षण	suprasegmental features
अधिपरिच्छिन्न स्वनिम	suprasegmental phoneme
अधिलेख	super script
अधिस्पर्श	adhisparśa (incompletely pronounced)
अधिस्वरक	overtone
अधोलेख	subscript
अध्याहार चिह्न	ellipses (blank marks)
अनच्	anac (non-vowel)
अनत	anata (uncerebralized)
अनाक्षरिक	asyllabic (=non-syllabic)
अनाश्रित स्वन परिवर्तन	autonomous sound change
अनासिक्य	non-nasal
अनिम्न	non-low
अनियत बलाघात	free accent
अनियमित परिवर्तन	irregular alternation
अनिरुद्ध	unchecked

अनिर्मोचित स्पर्श	incomplete stop (unexploded stop)
अनुक्रम व्यतिरिक्तता नियम	sequence redundancy rule(s)
अनुघर्षण	affrication
अनुघर्षी	affricate (semi-plosive)
अनुच्च	non-high
अनुच्चरित अंश	silent element
अनुतान	intonation
अनुदात्त	1. falling pitch 2. grave (acute)
अनुदात्ततर स्वराघात	low-level pitch
अनुदैर्ध्य तरंग	longitudinal wave
अनुनाद	resonance
अनुनाद कोष्ठ	resonance chamber
अनुनाद वक्र	resonance curve
अनुनासिक	anunāsik (nasal), nasalization
अनुनासिकता चिह्न	nasalization sign
अनुनासिकीकरण	nasalization
अनुप्रदान	anupradāna (secondary feature of articulation)
अनुप्रस्थ तरंग	transverse wave
अनुस्वार	anusvāra
अनेकाच् शब्द	multi-syllabic word
अनेजंत	anejanta (not ending in a diphthong)
अन्यथासिद्धता नियम	redundancy rule(s) (=morpheme structure (ms) rule(s)
अन्यथासिद्धि	redundancy
अन्योन्य समीकरण	reciprocal assimilation
अन्योन्य समीभवन	reciprocal assimilation
अन्ववसर्ग	anvavasarga (relaxation or wide opening of vocal organs)
अपभ्रंश	apabhramśa (corrupt form)
अपश्च	non-back

अपसामान्य स्वर	abnormal vowel
अपार्श्विक	non-lateral
अपिनिहिति	epenthesis
अपूर्ण स्पर्श	incomplete stop (unexploded stop)
अपूर्ववर्ती	anterior, nonanterior
अप्रवाही	discontinuant, non-continuant
अप्राक्सीमेंट	approximant
अभिकेंद्री संध्यक्षर	centring diphthong
अभिगामी	approximant
अभिघात	abhighāta (depression or sinking of voice)
अभिरचना	pattern
अभिरचना रिक्ति	pattern gap
अभिरचना समता	pattern congruity
अभिलक्षण	feature(s)
अभिलक्षण परिवर्तक नियम	feature changing rules
अभिव्यादान	abhivyādāna (absorption of a vowel)
अभिश्रुति	umlaut, vowel mutation
अम्	am
अमुखरित	non sonorant
अयोगवाह	ayogavāha
अरङ्	araṅ (unrhotacized visarga)
अरिफित	ariphita (unrhotacized)
अरूक्ष	nonstrident (=mellow)
अर्धमात्रा	ardhamātrā (half mora)
अर्धविराम	semi-colon
अर्धविवृत	half open
अर्ध विवृत स्वर	half open vowel
अर्ध व्यंजन	semi-consonant, vocalic-consonant
अर्ध संवृत	half close

अर्ध स्फोटी	semi plosive
अर्ध स्वर	semi vowel
अल्	al
अलिजिह्व	uvular
अलिजिह्वा	uvula
अलिजिह्वीय	uvular
अल्पप्राण	unaspirated
अल्पप्राणीकरण	deaspiration
अल्पविराम	comma
अवग्रह	disjuncture, open juncture
अवच्छेदक अभिलक्षण	distinctive feature(s)
अवमंदन	damping
अवमंदित तरंग	damped wave
अवरोध	closure
अवरोही संध्यक्षर	falling diphthong
अवरोही स्वराघात	falling pitch
अवर्तुलन (ओठों का)	unrounding (of lips)
अवर्तुलित	unrounded
अवर्तुलित स्वर	unrounded vowel
अवश्रुति	ablaut (apophony/vowel gradation)
अवितरित	non-distributed
अव्यंजनात्मक	non-consonant
असन्निहित विषमीकरण	remote dissimilation
असपाट	non-flat
असवर्ण उच्चारण	heterorganic articulation
असहज नियम	unnatural rule
असहज वर्ग	unnatural class
अस्पष्ट 'ल्'	dark 'l'
अस्पृष्ट	aspṛṣṭa (non-contact)
अस्वरक	asvaraka (untoned)
अस्वरात्मक	non-vocalic

अस्वराभ	non-vocoid
आंतरालिक	interlude
आंशिक पूरण	partial complementation
आक्षरिक	syllabic
आक्षरिक बलाघात	syllabic stress
आक्षरिक लेखन	syllabic writing
आक्षरिक व्यंजन	syllabic consonant
आक्षिप्त	ākṣipta (falling)
आगम	segment addition (=insertion)
आघात	accent
आघात चिह्न	accent mark
आघातन	accentuation
आघात-परिवृत्ति	accent shift
आदिनिहिति	prothesis
आदिनिहित स्वर	prothetic vowel
आदि लोप	apharesis (=apheresis, aphesis)
आदेश	ādeśa (substitute)
आदेशी	ādeśī (ādeśin/sthānin=original)
आधारिक परिवर्त	basic alternant
आधारिक विकल्प	basic alternant
आनुनासिक्य	ānunāsikya, nasality
आभ्यंतर प्रयत्न	ābhyantara prayatna (intra-buccal process effort)
आभ्यंतर संधि	internal sandhi
आयाम	amplitude
आरोही-अवरोही स्वराघात	rising-falling pitch
आरोही संध्यक्षर	rising diphthong
आरोही स्वराघात	rising pitch
आर्की-इकाई	archi unit
आर्की खंड	archi segment
आर्की-स्वनिम	archiphoneme
आवर्त (आवर्ती)	periodic

आवर्त काल	periodic time (=period).
आवर्त गति	periodic motion
आवर्तता	periodicity
आवर्तन	cycle
आवृत्ति	frequency
आवृत्ति घटक	frequency component
आवृत्ति बैंड	formant
आसिलोग्राफ	oscillograph
आसिलोग्राम	oscillogram
आस्थापित	āsthāpita (arrested)
आस्य प्रयत्न	āsya prayatna (mouth process)
इंटरनेशनल फोनेटिक एल्फाबेट (आई०पी०ए०)	Internationl Phonetic Alphabet (I.P.A.)
इकाई	unit
ईषत्स्पृष्ट	īṣat-spṛṣṭa (slight-contact)
ईषद्विवृत घर्षी	slit fricative (spirant)
उच्च स्वराघात	high level pitch
उच्चारण	pronunciation
उच्चारण क्षेत्र	region of articulation
उच्चारण चरण	phases of articulation
उच्चारण तंत्र	speech mechanism
उच्चारण प्रशिक्षण	speech-training
उच्चारण स्थान	place of articulation, point of articulation
उच्चारणात्मक प्रक्रिया	articulatory process
उत्क्षिप्त	flapped
उत्क्षेप	flap
उदात्त	acute, acute accent
उदासीन स्वर	neutral vowel
उद्धरण चिह्न	quotation marks
उपगौण मान स्वर	tertiary cardinal vowel(s)
उपचिह्न	diacritic(al) marks

उपजिह्वा	epiglottis
उपधा	penultimate
उपधापूर्व	antepenultimate (=antepenult)
उपध्मानीय	upadhmānīya
उपन्यूनतम युग्म	subminimal pair
उपमात्रक	allochrone
उपमुख्य निकोच	subprimary stricture
उपवर्ण	allograph
उपस्वन	allophone
उपांत्य	penultimate
उपांत्यपूर्व	antepenult
उपांशु	whisper
उपांशु स्वर	whispered vowel
उपाग्र	front of the vowel
उभयोष्ठ्य	bilabial
ऊर्ध्व ओष्ठ	upper lip
ऊष्म	sibilant
ऊष्मक	cedilla
ऊष्मीकरण	assibilation
एकल करण	single articulation
एकलयी वर्ग	rhythm group
एकश्वास का वर्ग	breath group
एकश्वासी वर्ग	breath group
एकस्वरक	monophthong
एकस्वरीकरण	monophthongization
एकाक्षरी शब्द	monosyllabic word
एकाच् शब्द	monosyllabic word
ऐतिहासिक स्वनविज्ञान	historical phonetics
ओष्ठ-मृदुतालव्य	labio-velar
ओष्ठीकरण	labialization
ओष्ठ्य	labial
ओष्ठ्यरंजन	labialization

कंठमणि	adam's apple
कंठोष्ठ्य	labiovelar
कंपन	vibration, trill
कंपित	trilled
कठोर तालु	hard palate
कदाचनिक परिवर्तन	sporadic alternation
कदाचनिक स्वन परिवर्तन	sporadic sound change
करण	articulator
कर्णग्राह्य खंड	real segment
कर्णग्राह्य स्वन	real phone
काइमोग्राफ	kymograph
काकल	larynx
काकलदर्शी	laryngoscope
काकलरंजन	creaky voice, laryngealization
काकलीकरण	laryngealization
काकलीय	laryngal (laryngeal)
काकु	intonation
कामा	comma
काल	duration
कालविस्तार अभिलक्षण	protensity feature
कीलाक्षर	cuneiform
कृत्रिम काकल	artificial larynx
कृत्रिम-तालु	artificial palate, false palate
कृत्रिम स्वनिक खंड	artificial segment (instrumental segment)
कृत्रिम स्वरयंत्र	artificial larynx
केंद्रक	nucleus
केंद्रकीय स्वन	nuclear sound
केंद्रीय स्वर	central vowel
कोण-कोष्ठक	angled brackets
कोमल तालव्य	velar
कोमल तालव्य रंजन	velarization
कोमल तालव्य वायु प्रवाह तंत्र	velaric air stream mechanism

कोमल तालव्यावरोध	velar closure
कोमल तालु	soft palate, velum
कोलन	colon
कोष्ठ	chamber
क्रम परिवृत्ति	permutation
क्लिक	click
खंड लोप	segment deletion (=ellision= truncation)
खंड व्यतिरिक्तता नियम (खंड अन्यथासिद्धता नियम)	segment-redundancy rules(s) (=blank filling rules)
खंडात्मक स्वनिम	segmental phoneme
खंडित स्वराघात	broken pitch (rising-falling pitch)
खंडीकरण	segmentation
खबिल	glottis
खबिलीय स्पर्श	glottal stop (=catch)
गतिक स्वनविज्ञान	motor phonetics
गतिशीलकरण	mobile articulator
गुच्छ	cluster
गुण स्वनिकी	prosody
गुण स्वनिम	prosodic phoneme (prosodeme)
गुण स्वनिमविज्ञान	prosodic phonemics
गुणात्मक अवश्रुति	qualitative gradation (qualitative ablaut)
गुणात्मक आघात	qualitative accent
गुरु	guru (heavy)
गौण आघात	secondary accent
गौण निकोच	subprimary stricture
गौण नियम	minor rule(s)
गौण मान स्वर	secondary cardinal(s)
ग्रसनी	pharynx (pharyngeal cavity)
ग्रसनीय	pharyngeal
ग्रसनीरंजन	pharyngealization

ग्रसनी विवर	esophageal cavity (pharyngeal cavity)
घटक	component
घटकीय विश्लेषण	componential analysis
घर्षणरहित प्रवाही	frictionless continuant
घर्षी	constrictive, fricative, spirant
घोष	voice
घोषतंत्री	vocal folds, vocal cords, vocal bands
घोषत्व	voicing
घोषत्व प्रारंभ समय	voice onset time
घोषीकरण	voicing
चंद्रबिंदु	nasalization sign
चक्र	cycle
चर	variable
चापचिह्न	arch
चित्रलिपि	hieroglyphic writing, pictography
चित्रलेख	hieroglyph, pictogram, pictograph
चित्रलेखन	pictography
चिह्नित	marked
चिह्निनतता रूढ़िगत नियम	markedness convention(s)
चिह्निनतता सिद्धांत	markedness principle
चूषण व्यंजन	suction stop
चूषण स्पर्श	suction stop
छंद	prosody
जिह्वा	tongue
जिह्वाग्र	apex, tip of the tongue
जिह्वाग्रीय	apical
जिह्वा पश्च	back of the tongue
जिह्वाफलकीय	coronal
जिह्वामूल	root of the tongue
जिह्वामूलीय	jihvāmūlīya (formed at the root of the tongue)

जिह्वीय	lingual
जिह्वोपाग्र	front of the tongue
जीभ	tongue
ज्या-तरंग	sine wave
ज्यावक्रीय	sinusoidal
टिल्डे	til (tilde)
टेंटुआ	adam's apple
डेसिबेल	decibel
डैश	dash
तटस्थ स्थिति	neutral position
तटस्थ स्वर	neutral vowel
तटस्थीकरण	neutralisation
तरंगग्राही	kymograph
तरंगलेख	kymogram
तरल स्वन	liquid
तर्कसंगत बलाघात	logical stress
ताड़न	tap
ताड़ित	tapped
तात्कालिक निर्मोचन	instantaneous release
तान	tone
तानता अभिलक्षण	tonality feature
तान स्वनिम	toneme
तानिम	toneme
तारांक	asterisk
ताराचिह्न	asterisk
तालव्य	palatal
तालव्य-ऊष्म	shibilant
तालव्यरंजन	palatalization
तालव्यीकरण	palatalization
तालव्योष्म	shibilant
तालु	palate
तालु चित्र	palatogram

तालु लेख	palatogram
तालु वर्त्स्य	palato-alveolar
तिरछा बटा चिह्न	slash
तिल	til (tilde)
तिल्दे	til (tilde)
तीक्ष्ण	plain, sharp
तीव्रता	intensity
तुल्यता चिह्न	equality mark
तुल्यस्थानीय उच्चारण	homorganic articulation
तृतीयक बलाघात	tertiary stress
त्रिग्राफ	trigraph
त्रिवर्ण	trigraph
त्रिस्वरक	triphthong
त्रिस्वर संध्यक्षर	triphthong
दंतकूट	teeth ridge
दंत-जिह्वाग्रीय	pre-dental
दंतोष्ठ्य	labio-dental
दंतस्पर्श	dental stop
दीर्घता	length
दीर्घता चिह्न	macron
दीर्घ स्वर	long vowel
दुःश्रवत्व	cacophony
दुर्बलरूप	weak form
दृढ़	tense
दृढ़ व्यंजन	fortis (tense) consonant
दोलन	oscillation
दोलन-लेख	oscillogram
दोलन-लेखित्र	oscillograph
दोलन लेखीयंत्र	oscillograph
द्विअक्षरी शब्द	disyllabic word

द्वि-आक्षरिक	disyllabic
द्वि-ओष्ठ्य	bilabial
द्विक	dyad
द्विग्राफ	digraph
द्विचर अभिलक्षण	binary feature
द्विचर नियम	binary principle
द्वितीयक उच्चार	secondary articulation
द्वितीयक करण	secondary articulator
द्विपक्षीय प्रतियोग	bilateral opposition
द्विवर्ण	digraph
द्विव्यंजन	double consonant
द्विस्थानीय स्पर्श	double stop
द्विस्वरक	diphthong
द्व्यक्षरी शब्द	disyllabic word
धन संहिता	plus juncture
धनुकोष्ठक	braces
धनुर्बंधनी	braces
धातुचिह्न	root sign
धारण	hold (retention)
ध्वनितरग	acoustic wave (sound-wave)
ध्वनिविज्ञान	acoustics
ध्वानिक अभिलक्षण	acoustic features
ध्वानिक प्रविधि	acoustic technique
ध्वानिक स्पेक्ट्रम	acoustic spectrum
ध्वानिक स्वनविज्ञान	acoustic phonetics (=physical phonetics)
ध्वानिकी	acoustics
नत	nata (cerebralized)
नत (स्वन)	retroflex
नति	retroflexion
नलक करण	grooved articulator
नलक घर्षी	grooved fricative (spirant)
नासापथ	nasal tract

नासावरोध	velic closure
नासाविवर	nasal cavity
नासिक्य	nasal
नासिक्य निर्मोचन	nasal release
नासिक्य रंजन	nasalization
निकोच	stricture
निक्षेप चिह्न	paranthesis
नित्य अंत्य सन्निकृष्ट संहिता	obligatory terminal close juncture
नित्य आभ्यंतर सन्निकृष्ट संहिता	obligatory internal close juncture
नियत बलाघात	fixed accent, fixed stress (=bound accent)
नियम क्रमिकता	rule order
नियमित परिवर्तन	regular alternation
निरनुनासिक	oral
निरपेक्ष (काल) मात्रा	absolute duration
निरूद्ध	checked
निरूपाधिक स्वनपरिवर्तन	autonomous sound change
निर्भेदीकरण	neutralization
निर्मोचन	release
निवेशन	insertion
निष्क्रिय कोष्ठ	passive chamber(s)
न्यूनतम युग्म	minimal pair
पदबंधीय बलाघात	phrasal stress
परश्रुति	off-glide
परस्पर समीकरण	reciprocal assimilation
परस्पर समीभवन	reciprocal assimilation
परिच्छेदक अभिलक्षण	distinctive feature(s)
परिच्छेदन	segmentation
परिरेखा	contour (=intonation contour)
परिरेखा तान	contour tone

परिवर्त	alternant(s)
परिवर्तन	alternation, variation
परिवेश	environment
पश्च	back, post
पश्च-कोमलतालव्य	post-velar
पश्च-जिह्वा	dorsum
पश्च-जिह्वीय	dorsal
पश्च-तालव्य	post-palatal
पश्च-दंत्य	post-dental
पश्च-मृदुतालव्य	post-velar
पश्च 'ल्'	dark 'l'
पश्च-विषमीकरण	regressive dissimilation
पश्च-विषमीभवन	regressive dissimilation
पश्च-समीकरण	regressive assimilation
पश्च-समीभवन	regressive assimilation
पश्च-स्वर	back vowel
पार्श्विक	lateral
पुनर्लेखन चिह्न	rewrite sign
पुरः विषमीकरण	progressive dissimilation
पुरः विषमीभवन	progressive dissimilation
पुरः समीकरण	progressive assimilation
पुरः समीभवन	progressive assimilation
पूरक वितरण	complementary distribution
पूरण	complementation
पूर्ण विराम	full stop, period
पूर्वकंठ्य	prevelar
पूर्वनासारंजन	prenasalization
पूर्वनासिक्य रंजन	prenasalization
पूर्ववर्ती	anterior
पूर्वश्रुति	on-glide
पूर्वापेक्षा	anticipation
पूर्वापेक्षी सह-उच्चारण	anticipatory co-articulation

प्रकरण	context
प्रगृह्य स्वर	hiatus-vowel
प्रग्रह	diaeresis, dieresis, hiatus
प्रचय	pracaya
प्रजनक स्वनप्रक्रिया	generative phonology
प्रतिनिधि उपस्वन	norm allophone
प्रतिपूरक दीर्घीकरण	compensatory lengthening
प्रतिपूरक ह्रस्वीकरण	compensatory shortening
प्रतिपूरण	compensation
प्रतिपूर्ति	compensation
प्रतियोग	opposition
प्रतिवेष्टन	cerebralization, retroflexion
प्रतिवेष्टित	cerebral, cerebralized, retroflex.
प्रतिवेष्टित स्वर	retroflex vowel
प्रत्यक्ष ग्रहीत स्वन	perceptual phone
प्रत्यक्षीकरण	actualization
प्रत्यनुनाद	anti-resonance
प्रत्याकर्षण	retraction
प्रबलता	loudness
प्रयत्न	prayatna, manner of articulation
प्रयत्न लाघव	least effort
प्रवाही	continuant
प्रश्नचिह्न	mark of interrogation, question mark
प्रश्नवाचक चिह्न	question mark
प्रश्लेष	coalescence, contraction
प्रश्लेषण	coalescence, contraction
प्रसंग	context
प्राणत्व	breathing
प्राथमिक निकोच	primary stricture
प्रायोगिक स्वनविज्ञान	experimental phonetics
प्रारंभ	onset

प्रारंभक	initiator
प्लुत	protracted
फलक	blade
फलक करण	slit articulator
फलक घर्षी	slit fricative (spirant)
फार्मेन्ट	formant
फिल्टर	filter
फुप्फुसीय (व्यंजन)	pulmonic
फुप्फुसीय वायु प्रवाह तंत्र	pulmonic air stream mechanism
फुप्फुसीय विवर	pulmonic cavity
फुसफुसाहट	whisper
फुसफुसाहट स्वर	whispered vowel
फेफड़े	pulmonic cavity
बद्ध बलाघात	bound accent
बलाघात	stress accent, stress
बलाघातन	stress accentuation
बलावधि लय	stress timed rhythm
बर्स्व	alveolus
बहिर्गामी वायु प्रवाह	egressive air stream (=compressive air stream)
बहुअक्षरी शब्द	polysyllabic word (=multisyllabic word)
बहुमान अभिलक्षण	multivalued feature
बहुविध प्रतियोग	multilateral opposition
बाण चिह्न	rewrite sign
बाणमुख	cuneiform
बाह्य प्रयत्न	bāhya prayatna (extra-buccal process)
बाह्य संधि	external sandhi
बैंड की चौड़ाई	band width
बैंड विस्तार	band width

भावचित्र	ideograph
भावलेख	ideogram, ideograph
भिन्नस्थानीय उच्चारण	heterorganic articulation
भौतिक स्वनविज्ञान	physical phonetics
मझला कोष्ठक	braces
मध्य लोप	syncope
मध्यवर्ण लोप	syncope
मध्यस्तर स्वराघात	mid-level pitch
मध्यस्वर	mid vowel
मर्मर	murmur
महाप्राण	aspirate(d)
महाप्राणता	aspiration
महाप्राणत्व	aspiration
महाप्राणस्पर्श	aspirated stop
मात्रा	duration, mora
मात्रा चिह्न	quantity mark
मात्रात्मक अवश्रुति	quantitative gradation, quantitative ablaut
मात्रात्मक आघात	quantitative accent
मात्रिम	chroneme
माध्य मध्य	mean mid
माध्य मध्य स्वर	mean mid vowel
मान स्वर	cardinal vowel
मुक्त परिवर्तन	free variation
मुक्त बलाघात	free accent, free stress
मुक्त वितरण	free distribution
मुख-नासिक्य प्रक्रिया	oro-nasal process
मुख-पथ	oral tract
मुखरता अभिलक्षण	sonority feature
मुखरता का शिखर	crest of sonority
मुखरित	sonorant
मुख-विवर	buccal cavity (oral/vocal cavity)

मुख्य आघात	primary accent
मुख्य करण	primary articulator
मुख्य नियम	major rule(s)
मुख्य मानस्वर	primary cardinal vowel(s)
मुख्य वर्ग अभिलक्षण	major class features
मूर्धन्य	cacuminal, cerebral
मूर्धन्यरंजित	retroflexed
मूर्धन्यीकरण	retroflexion
मूल आवृत्ति	fundamental frequency
मृदु	mellow, soft
मृदुता चिह्न	soft sign
मृदुतालव्य	velar
मृदुतालव्यरंजन	velarization
मृदु तालु	soft palate, velum
मेल	mel
मौखिक करण	primary articulation
यकारीकरण	yodization
यांत्रिक खंड	instrumental segment
यांत्रिक स्वनविज्ञान	instrumental phonetics (experimental phonetics)
युक्त वर्ण	ligature
युग्मक	dyad
योजक चिह्न	hyphen
रक्त	rakta (coloured)
रचनांतरण चिह्न	transformation sign
रणन	timbre
र-रंजन	rhotacization
रिक्त चिह्न	null
रिक्ति पूरक नियम	blank filling rule
रूक्ष	strident
रूपिम संरचना नियम	morpheme structure (ms) rule(s)

रूपिमाश्रित परिवर्तन	morphemically (morphologica ly) conditioned alternation
रूपिमाश्रित विकल्पन	morphemically (morphologi cally) conditioned alternation
रूपिमिक लेखन	morphographic writing (=morphemic writing)
रेफण	rhotacism
रैखिक लेखन	linear writing
रैखिक स्पेक्ट्रम	line spectrum
रोमन लिप्यंकन	Romic
रोमनीकरण	Romaniz..tion
रोमिक	Romic
लघु	laghu (light)
लघु कोष्टक	parenthesis
लय	rhythm
लिपि	script
लिपि चिह्‌न	character
लिप्यंकन	transcription
लिप्यंतरण	transliteration
लेखन व्यवस्था	orthography
लेखविज्ञान	graphetics
लेखिम	grapheme
लेखिमप्रक्रिया	graphology
लेखिमविज्ञान	graphemics (=graphonomy)
लैरिंगोस्कोप	laryngoscope
लोगोग्राम	logogram
लोडित	rolled
लोप	deletion, ellision
लोपचिह्‌न	ellipses (=blank marks)
वर्ण	character, letter
वर्णकुल	varṇa-kula (family of sounds
वर्णनात्मक स्वनविज्ञान	descriptive phonetics
वर्णमाला	alphabet

वर्ण-लेखन	alphabetic writing
वर्ण-विन्यास	orthography
वर्णिम	grapheme
वर्णिम प्रक्रिया	graphology
वर्तनी	spelling
वर्तुलन (ओठों का)	rounding (of lips)
वर्तुलित	rounded
वर्तुलित स्वर	rounded vowel
वर्त्स	alveolus
वर्त्स्य	alveolar
वर्त्स्य-तालव्य	alveo-palatal
वर्त्स्य प्रदेश	alveolar region (ridge), teeth ridge
वाक्-पथ	vocal tract
वाक्-प्रक्रिया	speech-process
वाक्-प्रसारक	speech stretcher
वाक्-स्वन	speech sound
वाक्य-बलाघात	sentence stress
वाक्य सुस्वरता	sentence melody
वागवयव	speech organ, vocal organ
वाग्यंत्र	speech mechanism, vocal apparatus
वायु कोष्ठ	air chamber
वायु प्रवाह	air stream
वायु प्रवाह तंत्र	air stream mechanism
वायु प्रवाह प्रक्रिया	air stream process
वार्स्व	alveolar
विकल्पन	variation
विचरण	variation
विच्छेदन	truncation
वितरण	distribution
वितरित	distributed
विन्यास नियम	tactical rule

विप्रकर्ष	anaptysis
विप्रकृष्ट संहिता	open juncture
वियोजक क्रमबंधन	disjunctive ordering
वियोजन	disjunction
विरलित	rarefactive
विराम-चिह्न	punctuation (marks)
विलंबित निर्मोचन	delayed release
विवर	cavity (=chamber)
विवृत	open
विवृत स्वर	open vowel
विवृत्ति	open transition
विशेषक अभिलक्षण	diacritic feature
विशेषक चिह्न	diacritic(al) marks
विशेषक लेखिम	diacritic grapheme
विशेषक वर्णिम	diacritic grapheme
विषमीकरण	dissimilation
विषमीभवन	dissimilation
विषुस्वन	diaphone
विसंधि	hiatus
विसंहिता	disjuncture
विसर्ग	visarga
विसर्जनीय	visarjanīya
विसर्प	glide
विसृत	diffuse
विस्तीर्ण	wide
विस्मयादिबोधक चिह्न	exclamation mark
व्यंजन	consonant
व्यंजन लोप	eclipsis, ecthlipsis
व्यंजनांत अक्षर	closed syllable
व्यंजनात्मक	consonantal
व्यंजनाभ	contoid, consonantoid

15(a)—353—मानव संसाधन विकास मंत्रालय/88

व्यंजनीकरण	consonantization (=consonantalization)
व्यतिरिक्तता	redundancy
व्यतिरिक्तता नियम	redundancy rule(s) (=morpheme structure (ms) rule(s)
व्यतिरेक	contrast
व्यतिरेकी बलाघात	contrasting stress
व्यतिरेकी युग्म	contrastive pair
व्यतिरेकी वितरण	contrasting distribution, contrastive distribution
व्यवस्थापरक स्वनप्रक्रिया	systematic phonology (=systematic phonemics)
व्यवस्थापरक स्वनिक स्तर	systematic phonetic level
व्यवस्थापरक स्वनिमविज्ञान	systematic phonemics
व्यवहित विषमीकरण	remote dissimilation
व्यवहित विषमीभवन	remote dissimilation
शब्द चिह्न	logogram
शब्द बलाघात	word stress
शब्द लेख	logograph
शिखर	peak
शिथिल	lax
शिथिल व्यंजन	lenis (lax) consonant
शिथिल संक्रमण	open transition
शुद्ध लेखन	orthography
शुद्ध वर्तनी	orthography
शुद्धोच्चारणविद्	orthoepist
शुद्धोच्चारण व्यवस्था	orthoepy
श्रवणात्मक स्वनविज्ञान	auditory phonetics
श्रव्य खंड	audible segment (=perceptual phone =real phone =real segment)

श्रुति	glide
श्रुतिकटत्व	cacophony
श्रुतिगोचर खंड	real segment
श्रुतिगोचर स्वन	real phone
श्लैश	slash
श्वसन	breathing
श्वसित घोष	breathing voice
श्वा	schwa (=shwā)
श्वासद्वार	glottis
श्वासद्वारीय रंजन	glottalization
श्वासद्वारीय वायुप्रवाह तंत्र	glottalic air stream mechanism
श्वासद्वारीय स्पर्श	catch, glottal stop
श्वासनली	trachea, wind pipe
श्वेत रव	white noise
संकीर्ण	narrow
संकेत(न)	notation
संकोचन	constriction
संकोची	constrictive
संक्रमण	transition
संक्षेप चिह्न	shortening mark
संघर्षी	fricative (=spirant)
संघर्षीकरण	spirantization
संतत स्पेक्ट्रम	continuous spectrum
संदर्भ	context
संदिग्ध युग्म	suspicious pair
संधि	sandhi
संध्यक्षर	diphthong
संध्यक्षरीकरण	diphthongization
संनादी	harmonic
संपीडित वायुधारा	egressive air stream, compressive air stream

संप्रसारण	samprasāraṇa
संमिश्र करण	complex articulator
संमिश्र तरंग	complex wave
संयुक्त स्वनिम	compound phoneme
संयोजक क्रमबन्धन	conjunctive ordering
संयोजी परिवर्तन	combinatory variant
संरचनात्मक संहिता	structural juncture
संवार	closure
संवारी संध्यक्षर	closing diphthong
संवृत	close
संवृत स्वर	close vowel
संहत	compact
संहिता	juncture
सक्रिय कोष्ठ	active chamber
सक्रिय विवर	active chamber
सघोष	voiced
सदृश परिवेश	analogous environment(s)
सन्निकृष्ट संहिता	close juncture
सपाट	flat, plain
सबल रूप	strong form
समतल सुर	levelled pitch, sustained pitch
समतल स्वराघात	levelled pitch, sustained pitch
समतान	register tone
समधिकता	redundancy
सम स्वराघात	uniform pitch
समाक्षरलोप (उच्चारणगत)	haplology
समाक्षरलोप (लिपिगत)	haplography
समानाक्षर	monophthong
समानाक्षरीकरण	monophthongization
समीकरण	assimilation
समीकारक स्वनिम	assimilatory phoneme
समीकृत स्वनिम	assimilated phoneme

समीभवन	assimilation
समीभूत स्वनिम	assimilated phoneme
सर्वसम परिवेश	identical environment(s)
सवर्ण उच्चारण	homorganic articulation
सह-उच्चारण	co-articulation, secondary articulation
सहज नियम	natural rule
सहज वर्ग	natural class
सहवर्तित व्यंजन	abutting consonant
सापेक्ष (काल) मात्रा	relative duration
सामान्य स्वनविज्ञान	general phonetics
सीमा	boundary
सीमावर्ती आपरिवर्तन	boundary modification
सुर	pitch
सुर स्तर	pitch level
सुर स्वनिम	pitch-phoneme
सुश्रव्यता	euphony
सुस्वन	euphony
सूक्ष्म लिप्यंकन	narrow transcription
सूचना	information
सेडिला	cedilla
सेदिया	cedilla
सोनेन्ट	sonant
सोपाधिक परिवर्तन	combinatory variant, conditional variant, positional variant
सोपाधिक परिवर्तन	conditional variation
स्थानाश्रित परिवर्तन	positional variant
स्थानी	ādésī (ādeiśin/sthānin=original)
स्थूल लिप्यंकन	broad transcription
स्पर्श	plosive, mute, stop
स्पर्श-संघर्षण	affrication
स्पर्श-संघर्षी	affricate (semi-plosive)

स्पर्शोष्म	assibilant
स्पष्ट 'ल्'	clear 'l'
स्पूनरीयता	spoonerism
स्पृष्ट	spṛṣṭa (contact)
स्पेक्ट्रम	spectrum (=acoustic spectrum, sound spectrum)
स्फोटक	plosive
स्फोटन	explosion, plosion
स्फोटी	abrupt (continuant)
स्वतंत्र परिवर्तन	free variation
स्वतंत्र बलाघात	free stress, free accent
स्वतंत्र वितरण	free distribution
स्वतः घोषत्व	spontaneous voicing
स्वतः स्वन परिवर्तन	spontaneous sound change
स्वन	phone
स्वनन प्रक्रिया	phonation process
स्वन नियम	phonetic law
स्वनप्रक्रिया	phonology
स्वनविज्ञान	phonetics
स्वनविज्ञानी	phonetician
स्वनविद्	phonetician
स्वनादेश	phonetic substitution
स्वनाश्रित परिवर्तन	automatic alternation
स्वनिक आदेश	phonetic substitution
स्वनिक उपखंड	phonetic fraction, phonetic fragment
स्वनिक खंड	phonetic segment, segment
स्वनिक घटक	phonetic component
स्वनिक प्रभाग	phonetic fraction, phonetic fragment
स्वनिक रंजन	phonetic modification

स्वनिक लिपि	phonetic script
स्वनिक लिप्यंकन	phonetic transcription
स्वनिम	phoneme
स्वनिमविज्ञान	phonemics (=phonology)
स्वनिमाश्रित परिवर्तन	phonemically conditioned alternation
स्वनिमाश्रित विकल्पन	phonemically conditioned alternation
स्वनिमिक कसौटी	phonological criteria
स्वनिमिक निकष	phonological criteria
स्वनिमिक लिप्यंकन	phonemic transcription
स्वनिमिक वर्णमाला	phonemic alphabet
स्वनिमिक संहिता	phonemic juncture
स्वर	vowel
स्वर उच्चता	vowel height
स्वरक	vocoid
स्वर क्षेत्र	vowel area (space)
स्वरगुण	vowel quality
स्वर त्रिकोण	vowel triangle
स्वर ध्वनि	vocoid
स्वरभक्ति	anaptyxis
स्वर मध्य	intervocalic, intervocal
स्वर यंत्र	larynx
स्वर विभंग	vowel fracture
स्वर विसंधि	diaeresis, diersis
स्वर संगति	vowel harmony
स्वरांत अक्षर	open syllable
स्वराघात	pitch
स्वराघात स्तर	pitch level
स्वरात्मक	vocalic
स्वराभ	vocoid
स्वरित	circumflex

स्वरीकरण	vocalization
स्वरेतर ध्वनि	non-vocoid
हल् चिह्न	hal sign
हल् लोप	eclipsis
हाइफन	hyphen
हिक्कित व्यंजन	ejective consonant
ह्रसन	reduction
ह्रसित अक्षर	reduced syllable
ह्रसित स्वर	reduced vowel
ह्रस्वक	breve [◡]
ह्रस्व स्वर	short vowel
ह्रस्वीकरण	shortening
ह्रास	reduction

GMGIPN—S1—353M of Human Res. Dev./ND/88—20-11-90—1,000

पी० ई०डी०-664
1000-1989 (उपभंडारी-II)

महाप्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, नासिक–422 006 द्वारा मुद्रित
तथा प्रकाशन नियंत्रक, भारत सरकार, दिल्ली-110 054 द्वारा प्रकाशित
PRINTED BY THE GENERAL MANAGER, GOVT. OF INDIA PRESS, NASIK-422 006
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI-110 054
1990